

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-9

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF
CHAND BARDAI

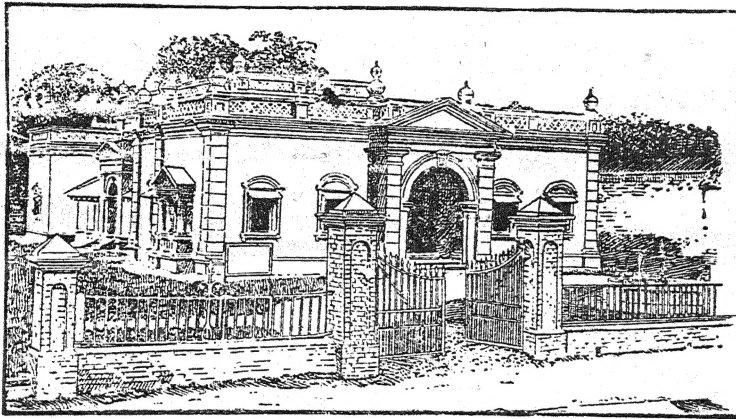
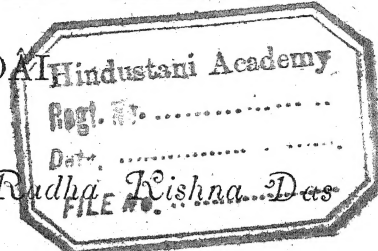
EDITED

BY

Mohanlal Vishnupal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.
CANTOS XXIX and XXXVI.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसकी

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया ।

पद्व २६ से ३६ तक ।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE
NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

मूचीपत्र ।

—:0:—

(२६) घघर की लड़ाई	पृष्ठ ९४५ से ९५८
(३०) करनाटी बध	„ ९५९ „ ९६६
(३१) पीपा युद्ध	„ ९६७ „ ९९३
(३२) करहे रो जुद्ध	„ ९९५ „ १०१३
(३३) इन्द्रावती व्याह	„ १०१५ „ १०२९
(३४) जैतराव जुद्ध	„ १०३१ „ १०४३
(३५) कांगुरा जुद्ध	„ १०४५ „ १०५४
(३६) हंसावती व्याह (अपूर्ण)	„ १०५६ „ १०७२
रासोसार	„ ४१ „ ७२

—0—

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF
CHAND BARDÂI

Vol III.

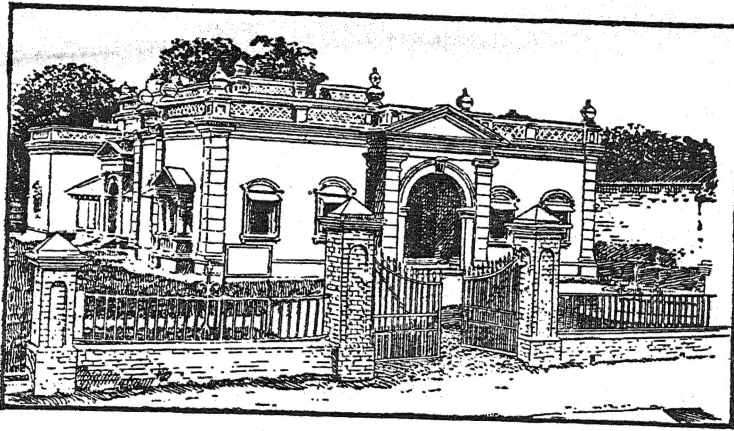
EDITED

BY

Mohanlal Vishnupal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XXIX TO LIV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तीसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व २९ से ५४ तक

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, BENARES.

1907.

मूल्य ४) ६०]

[Price Rs 4/.

सूचीपत्र ।

(२९) घघर की लड़ाई समय ।

(पृष्ठ ९४९ से ९९८ तक)

- १ पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गुजनी में पहुंचा । ६४५
- २ दूतों ने जकर गुजनी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूम धाम के साथ शिकार खेलने को निकला है । "
- ३ शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर गुजनी में जाहिर किया । ६४६
- ४ सुल्तान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा । "
- ५ खुरासान, रूम, हवश और बलख आदि देशों में सुल्तान का सहायता के लिये पत्र भेजना । "
- ६ पांच लाख सेना लिये सुल्तान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना । ६४७
- ७ चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दोपहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घघर नदी पर पहुँचा । "
- ८ शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन । "

६ सेना का वर्णन । ६४८

- १० मुसल्मान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना । "
- ११ पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्ड राव को आगे किया । ६४९
- १२ पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़ व्यूहाकार रचना की । "
- १३ दोनों सेनाओं का सम्मूहना होना । एक हजार मीरों का कैमास को घेरना । "
- १४ तत्तार खाँ का घायल होना । मीरों की वीरता । "
- १५ कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना । ६५०
- १६ चावंडराय ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुल्तान की सेना में कहर मच गया । "
- १७ जैतराव के युद्ध का वर्णन । "
- १८ युद्ध का रंग देख कर सुल्तान सिर धुनने लगा । जैतराव और खुरासान खाँ का तुमुल युद्ध हुआ । ६५१
- १९ घोर युद्ध हुआ, निमुरत्तखाँ मारा गया, दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई । "
- २० एक लाख कालंजरों का घावा, कन्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना । ६५२
- २१ कालंजर के टूटतेही सुल्तान की सेना का भागना । कन्ह चौहान का

- कमान डाल कर सुल्तान को पकड़ लेना । ६५२
- २२ पञ्जून राव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना । कन्ह का सुल्तान को पकड़ कर अपने घर ले आना । ६५३
- २३ कन्ह का सुल्तान को अजमेर ले जाना और उसे वहाँ किले में रखना । ”
- २४ पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या । ”
- २५ पृथ्वीराज को सब सामन्तों का सलाह देना कि अब की बार शहाबुद्दीन को प्राण दराड दिया जाय । ६५४
- २६ कन्ह का कहना कि अब की पंजाब देश लेकर इसे छोड़ दिया जाय । ”
- २७ पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ देकर शाह को घर भेज देना । ”
- २८ कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना । शाह का कन्ह को एक माणौ और राजा को अपनी तलवार नजर देकर घर जाना । ६५५
- २९ सुल्तान का कुरान बीच में देकर कसम खाना कि अब कभी आपसे विग्रह न करूँगा । ”
- ३० सुल्तान के अटक पार पहुँचने पर उधर से तत्तारखाँ का आकर मिलना । ”
- ३१ रयसल को दूतों का समाचार देना । उसका सेना लेकर अटक उतर रास्ते में रोकना । ६५६
- ३२ लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना । ”
- ३३ सबेरा होते ही रयसल आ पहुँचा, लोहाना से युद्ध होने लगा । ”
- ३४ रयसल का माराजाना, सुल्तान का निर्भय गज़नी पहुँचना । ६५७
- ३५ तत्तारखाँ, खुरासानखाँ आदि मुसाहबों का सेना सहित सुल्तान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्यौछावर करना । ”
- ३६ दस दिन लोहाना वहाँ रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दराड दिया । ”
- ३७ लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला । पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सर्दार को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दिया । ”
- ३८ चंद कवि ने चित्तौर में आकर सब सोना आदि रावल की भेंट किया, रावल ने चंद का बड़ा सम्मान किया । ६५८

(३०) करनाटी पत्र समय ।

(पृष्ठ ९९९ से ९९६ तक)

- १ दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जेचंद से जाकर कहना । ६५९
- २ यदव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना । करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वैश्या को पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना ।
- ३ कर्नाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना । ”
- ४ संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीत कला में अत्यन्त विद्वान कल्हन नायक का सौंप देना । ”
- ५ करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा

- सुन कर पृथ्वीराज का उसके लिये कामातुर होना । ८६०
- ६ पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन । ”
- ७ पृथ्वीराज के सभा मंडप की प्रशंसा वर्णन । ”
- ८ पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम । ८६१
- ९ कहन नट का करनाटकी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटकी की शिचा के विषय में पूछना । ८६२
- १० कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिसमें निहुरराय प्रसन्न हों । ”
- ११ नायक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं । ”
- १२ कविचंद का निहुरराय का इतिहास कहना । ”
- १३ निहुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना । ८६३
- १४ यह खबर सुनकर उसी समय सारंग का वहां आकर निहुर के रंग में भंग करना । ”
- १५ निहुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना । ८६४
- १६ यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसा ही नाट्य कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो । ”
- १७ राजाओं के स्वाभाविक गुणों का वर्णन । ”
- १८ राजा का करनाटकी को आने की आज्ञा देना । ८६५
- १९ करनाटकी का सुर अलाप करना और बाजे बजना । ८६५
- २० नाटक का क्रम वर्णन । ”
- २१ करनाटकी के नाच गान पर प्रसन्न होकर राजा का नायक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं । ८६६
- २२ पृथ्वीराज का नायक को दस मन स्वर्ण दे कर वेश्या को महलों में रखना । ”
- २३ पृथ्वीराज का करनाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना । ”
-
- (३१) पीपा युद्ध प्रस्ताव ।
(पृष्ठ ९६७ से ९९३ तक ।)
- १ प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामन्तों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना । ८६७
- २ सभा जम जाने पर राज्य कार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना । ”
- ३ पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है । ८६८
- ४ राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दर्धाच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी । दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए । ”
- ५ राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामन्तों का सिरोधार्य्य करना । ८६९

६ सभा में उपस्थित सब सामन्तों का बल पराक्रम वर्णन ।	६६६	वर्ण श्रेणी वृद्ध करना ।	६७६
७ पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये तय्यारी करने को कहना ।	६७२	२५ सामन्तों की वीरता वर्णन ।	"
८ सामन्तों का राजाज्ञा मानना ।	"	२६ युद्ध के लिये प्रस्तुत सूरवीर सामन्तों के बीच में स्थित निहदुर का वीर मत वर्णन ।	६८०
९ जैचन्द के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।	६७३	२७ घुड़ सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ।	६८१
१० कमधञ्ज पर चढ़ाई करने वाली सेना के वीर सेनापति सामन्तों के नाम और सेना की तैयारी का वर्णन ।	"	२८ राजा का सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।	"
११ उन छः सामन्तों के नाम जो सब सामन्तों में सब से अधिक मान्य थे ।	६७४	२९ घोड़े की शोभा वर्णन ।	९८२
१२ उक्त छः समन्तों का पराक्रम वर्णन ।	६७५	३० शहाबुद्दीन से निस्स्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ।	"
१३ सामन्तों का जैचन्द पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना ।	"	३१ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ।	"
१४ प्रत्येक सामन्त पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिम्ब स्वरूप था ।	"	३२ राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना ।	६८३
१५ पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मत ठहरा ।	६७६	३३ चावंडराय, जैतसी, लोहाना आजान बाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार खां खुरसान खां पर आक्रमण करना ।	"
१६ चढ़ाई के लिये बैसाख सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना ।	"	३४ उक्त सामन्तों के आक्रमण करने पर मुसल्मानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना ।	"
१७ मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब वीरों का आनन्द में मतवाला होना ।	"	३५ पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जैचन्द की सहायता लेकर शहाबुद्दीन का राह छेकना ।	६८४
१८ प्रातःकाल सामन्तों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना ।	"	३६ मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है ।	"
१९ पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन ।	"	३७ पृथ्वीराज की राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन ।	६८५
२० सामन्तों की सर्प से उपमा वर्णन ।	६७७	३८ युद्ध आरंभ होना ।	"
२१ सामन्तों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ।	"	३९ स्वामि धर्म रत शूरवीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे ।	"
२२ शूर वीर सामन्तों का उत्साह वर्णन ।	६७८		
२३ फौज की शोभा वर्णन ।	"		
२४ पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति			

- ४० दोनों ओर के शूरवीर सामन्तों का पराक्रम और बल वर्णन । ६८६
- ४१ कन्ह, गोइन्दराय, लंगरीराय, और अत्ताताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुसल्मानों की फौज का विचलाना । हांसब खां खुरसान खां का मारा जाना । ”
- ४२ शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना, शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना । ६८७
- ४३ युद्ध की पावस से उपमा वर्णन । ”
- ४४ घोर युद्ध वर्णन । ”
- ४५ चालुक्य की प्रशंसा वर्णन । ६८८
- ४६ जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रशंसा वर्णन । ”
- ४७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोर व्यूह रचना । ६८९
- ४८ न्याजी खां, तत्तार खां, और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना । ”
- ४९ युद्ध होते होते रात हो जाना । ६९०
- ५० छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना । ”
- ५१ आधी रात हो जाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन पर आक्रमण करना और मुसल्मान फौज का पैर उखड़ना । ”
- ५२ पीप (पड़िहार) का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना । ६९१
- ५३ प्रसंगराय खीची, पञ्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना । ”

- ५४ शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना । ६९१
- ५५ पीपा युद्ध का परिणाम, और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन । ६९२
- ५६ सुल्तान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन । ”

(३२) करहे रो जुद्ध प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ९९९ से १०१३ तक)

- १ पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना । ६९५
- २ पृथ्वीराज का ६४ सामन्तों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना । ”
- ३ इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना । ”
- ४ इन्द्रावती की छवि वर्णन । ”
- ५ पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना । ६९६
- ६ पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना । ”
- ७ ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना । ”
- ८ ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना । ”
- ९ इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन । ”
- १० उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तय्यारी हो रही थी उसी समय गुज्जरराय का चित्तौर गढ़ घेर लेना । ६९७
- ११ पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना । ९९८
- १२ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को अपना

खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना । ६६८	२६ घमासान युद्ध वर्णन । १००४
१३ ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन । "	३० समय पाकर रावल समरासिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना । १००५
१४ पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना । १०००	३१ युद्ध लीला कथन । "
१५ प्रधान का उत्तर देना । "	३२ सामन्तों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना । १००६
१६ पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा । "	३३ भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उनका नाम ग्राम कथन । "
१७ पृथ्वीराज का आगे बढ़ना । १००१	३४ आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैनखाँ का चालुक्य पर आक्रमण करना । "
१८ रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन । "	३५ एक दिन रात और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना । १००७
१९ चालुक्य सेना की सर्प से उपमा वर्णन । "	३६ गुरजर राय भीमदेव का भागना । "
२० पृथ्वीराज की सेवा की पारधि से उपमा वर्णन । "	३७ कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई । "
२१ चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना । १००२	३८ पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्ज्वल वेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना । "
२२ दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारम्भ होना । "	३९ कीर्ति का कहना कि हे चत्री मैं तुम्हें दर्शन देने आई हूँ । "
२३ इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समरसी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना । १००३	४० कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन । १००८
२४ पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गजव्यूह रचना रचना । "	४१ प्रातःकाल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना । "
२५ युद्ध वर्णन । "	४२ गुरुराम का कहना कि वह भोला राय को परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी । "
२६ चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ प्रहर संग्राम करना और उनके १००० वीरों का मारा जाना । १००४	४३ रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना । १००६
२७ दूसरे दिन तीन घड़ी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना । "	४४ रात का युद्ध वर्णन । "
२८ भोरा राय का नदी उतर कर लड़ाई करना । "	४५ पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम । "
	४६ दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों

- का मारा जाना । १००६
- ४७ पृथ्वीराज का खेत को तिरछा
देकर चालुक्य पर आक्रमण
करना । १०१०
- ४८ प्रभात होते ही युद्ध आरम्भ होना । ”
- ४९ दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर
लड़ना । ”
- ५० दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते पांच
हजार सैनिकों का मारा जाना । १०११
- ५१ पृथ्वीराज की जीत होना और
चालुक्य का भागना । १०१२
- ५२ चालुक्य की सब सेना का मारा
जाना । ”
- ५३ पृथ्वीराज का रण क्षेत्र दुढ़वा कर
घायलों को उठवाना और मृतकों
की दाह क्रिया करवाना । ”
- ५४ पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना । ”
- ५५ इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती
को व्याहना । १०१३

— * —

(३३) इन्द्रावती व्याह प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १०१९ से १०२९ तक)

- १ उज्जैन के राजा भीम का चंद से
कहना कि पृथ्वीराज का हृदय
नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न
विवाहूंगा । १०१५
- २ कविचंद का कहना कि समय पाय
सगों की सहायता करने गए तो
क्या बुरा किया । ”
- ३ भीमदेव का प्रत्युत्तर देना । ”
- ४ यह समाचार सुनकर इन्द्रावती का
शोकातुर होना । १०१६
- ५ सखियों का इन्द्रावती को समझाना । ”

- ६ इन्द्रावती का उत्तर देना कि मैं
राजकुमारी हूँ मेरा कहा बचन
कदापि पलट नहीं सकता । १०१६
- ७ भीम का कविचंद से कहना कि तुम
यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या
मेरे प्रताप को नहीं जानते । ”
- ८ कविचंद का कहना कि समय देख
कर कार्य करना ही बुद्धिमत्ता है । १०१७
- ९ भीमदेव का पञ्जून से कहना कि
तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा
अभिमान है इसी से तुम और को
शूरवीर ही नहीं जानते । ”
- १० जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम
बात कह कर क्या पलटते हो । ”
- ११ भीम का गुरु राम से कहना कि
स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन
सा धर्म है । १०१८
- १२ गुरु राम का ऐतिहासिक घटनाओं
के प्रमाण देकर उत्तर देना । ”
- १३ भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर
कविचंद से कहना कि जैतराव को
तुम समझाओ । ”
- १४ कविचंद का सप्रमाण उत्तर देना । ”
- १५ भीम का अपने प्रधान से मंत्र
पूछना । १०१९
- १६ मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पु-
थ्वीराज को व्याह दीजिए । पर
भीम का इस बात को न मान कर
क्रोध करना । ”
- १७ सामन्तों का परस्पर विचार बाँधना । ”
- १८ रघुवंस राम पँवार का बचन । ”
- १९ चहुआन की फौज के भीमदेव
के गौओं को घेर लेने पर पट्टन
पुर में खलभली पड़ना । १०२०
- २० चहुआन सेना का मालवा राज्य
की प्रजा को दुःख देना और भीम

- ३ दूत को वचन सुन कर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को दपटना । १०४५
- ४ दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहाँ की बात निवेदन करना । १०४६
- ५ इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भान राज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना । ”
- ६ युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना । ”
- ७ युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना । १०४७
- ८ पृथ्वीराज का जय पाना । ”
- ९ सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना । ”
- १० राजा भान का सोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का आकर कहना कि मैं हार नहीं मेट सकती । ”
- ११ सबेरा होते ही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना । १०४८
- १२ प्रधान कन्ह का कहना कि भरे रहते आप कुछ चिन्ता न करें मैं शत्रु का मान मर्दन करूंगा । ”
- १३ भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना । ”
- १४ पृथ्वीराज का रघुवंशराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना । १०४९
- १५ हाहुलीराय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा । ”
- १६ कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके बिकट पन का वर्णन । ”
- १७ उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां को सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना । १०५०
- १८ नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना । ”
- १९ कंगुरा दुर्ग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन । ”
- २० नारेन (पीठ सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना । १०५१
- २१ सेना का हल्ला करके क्रोध से धावा करना । ”
- २२ युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन । ”
- २३ अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना । १०५३
- २४ सब सामन्तों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सबका गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना । ”
- २५ सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंश का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना । ”
- २६ नियत तिथि पर व्याह होना । ”
- २७ भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन । १०५४
- २८ भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलाहिन के साथ भोग विलास करना । ”
- :०:—
- (३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव
(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक ।)
- १ पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्-पुर को जाना । १०५५

- २ रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुन्दर कन्या थी और चन्देरी में शिशुपाल वंशी पंचाइन नाम राजा राज्य करता था । १०५५
- ३ हंसावती की शोभा का वर्णन । ”
- ४ चन्देरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ के दूत भेजना । १०५६
- ५ चन्देरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना । ”
- ५ रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना भि में चन्देरीपति से युद्ध करूंगा, उसके घुड़कने से नहीं डरता । ”
- ६ चन्देरी पति का कुपति होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना । १०५७
- ७ चन्देरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदद के लिये । ”
- ८ स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया । ”
- ९ जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं । ”
- १० भानुराय जदव का बसीठ की बात न मानना । १०५८
- ११ बसीठ का लौट कर चन्देरीपति की फौज में जा पहुंचना । ”
- १२ पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरी खां हुआब खां आदि सद्दारों का आना । ”
- १३ दोनों घन घोर सेनाओं सहित चन्देरी के राजा का आगे बढ़ना । ”
- १४ चन्देरीराज की चढ़ाई का वर्णन । ”
- १५ रणथंभ पति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना । १०५९
- १६ भानुराय को पृथ्वीराज का पत्र लिखना । १०५९
- १७ उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समरसिंह जी के पास कन्ह को भेजना । ”
- १८ कन्ह का समर सिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना । ”
- १९ समर सिंह जी का सेना तय्यार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे । १०६०
- २० तथा यहां से रणथंभ केवल ६५ कोस है इस लिये तुमसे आगे जा पहुंचेंगे । ”
- २१ कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली से १३ को चले हैं और राजा भान पर बड़ी विपत्ति है । ”
- २२ समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कहके पलटें । ”
- २३ समर सिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना । १०६१
- २४ कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरे को युद्ध होगा । ”
- २५ दसमी सोमवार को समरसिंह जी की यात्रा का मुहूर्त वर्णन । ”
- २६ यात्रा के समय समरसिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन । ”
- २७ सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समरसिंह जी का आना । १०६२
- २८ पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समर सिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी । १०६३
- २९ किले और आस पास की रणभूमि की पची से उपमा वर्णन । १०६४

३० उस युद्धि भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन ।	१०६४	रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना ।	१०६६
३१ चन्देरी की सेना और रुस्तम खां के बीच में रावल समरसिंह जी का धिर जाना ।	१०६५	४५ चन्देरी की सेना का तुमुल युद्ध करना ।	"
३२ पृथ्वीराज का रावल की मदद करना ।	"	४६ रावल समरसिंह जी और चन्देरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पचाइन) का मारा जाना ।	१०७०
३३ रणथंभ के राजा भान का समरसिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छू कर भेंट करना ।	"	४७ युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़का मुक्त होना । हुसेन खां और कन्हैया का धायल होना ।	"
३४ समरसिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिलकर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ।	"	४८ पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्द-वदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना ।	१०७१
३५ चन्देरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के वीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन ।	१०६६	४९ पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आप की भविष्य स्त्री हंसावती है, कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूँ ।	"
३६ युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना ।	१०६७	५० हंसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन ।	"
३७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना ।	"	५१ पृथ्वीराज उक्त बातों को सुन ही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ।	१०७२
३८ युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ।	"	५२ और उक्त रणथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन ।	१०७३
३९ हंसावती की घरियार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन ।	१०६८	५३ लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वी-राज का बारु बन को शिकार खेलने के लिये जाना ।	"
४० सेना के बीच में समरसिंह की शोभा वर्णन ।	"	५४ पृथ्वीराज के बाख्बन में शिकार करते समय सारंग राय सौलंकी का पितृवैर लेने का विचार करना ।	"
४१ प्रातःकाल होते ही समरसिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना ।	"		
४२ समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन ।	"		
४३ युद्ध वर्णन ।	१०६९		
४४ समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे			

५५ सारंगदेव का कहना कि पितृवैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है । १०७३

५६ सारंगराय का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हमीर से मिलकर उसे अपने कपट मत में बाँधना । १०७४

५७ सारंगराय का पृथ्वीराज और समर सिंह जी के पास न्योता भेजना । १०७५

५८ यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट चक्र रचना । "

५९ हाड़ाराव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिलकर शिष्टाचार करना । "

६० कवि का हाड़ा राव पर कटाक्ष । "

६१ पृथ्वीराज को नगर में पैठते ही अशकुन होना । "

६२ ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना । १०७६

६३ उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ । "

६४ सारंगदेव के सिपाहियों का सब को घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना । "

६५ रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध । "

६६ पृथ्वीराज का नागफनी से शत्रुओं को मारना । १०७७

६७ घोर घमासान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना । "

६८ रामराय बड़गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना । १०७८

६९ कविचन्द द्वारा युद्ध एवं सारंगदेव के कुकृत्य का परिणाम कथन । "

७० पञ्जनराय के पुत्र कूरंभराय का

बड़ी वीरता के साथ मारा जाना । १०७९

७१ इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत, और पन्द्रह भारी योद्धा काम आए । "

७२ रेन पंवार (सामंत) की प्रशंसा । "

७३ रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का उसे छुड़ा कर हमीर को तलाश करके उससे पुनः मित्रभाव से पेश आना । १०८०

७४ तेरह तोमर, सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए । "

७५ हुसेन खां का अमर सिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना । "

७६ रावल समर सिंह जी की प्रशंसा और सारंगदेव का उनको अपनी बहिन व्याह देना । १०८१

७७ आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है । "

७८ शुमान और 'प्रसंगराय' खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना । "

७९ पृथ्वीराज का रणथंभ व्याहने जाना । १०८२

८० पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन । "

८१ पृथ्वीराज का आगमन सुन कर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का भरोखे से भांकना । "

८२ गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन । १०८३

८३ हंसावती के शृंगार की तय्यारी । "

८४ हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता का वर्णन । "

८५ हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य वर्णन । "

८६ नेत्रों की शोभा वर्णन ।	१०८४	१०२ थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुस-	
८७ हंसावती के स्नान समय की शोभा ।	"	ल्मान सेना के पैर उखड़ गए ।	"
८८ हंसावती के शरीर में सुगंधादि		१०३ युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का	
लेपन होकर सोलहों शृंगार और		असबाब हाथ लगना और परिोज	
बारहों आभूषण सहित शृंगार की		खां का मारा जाना ।	"
उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन ।		१०४ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय	
८९ हंसावती के वस्त्र आभूषणों की		से लगा कर कहना कि मैं आप	
शोभा वर्णन ।	१०८७	का बहुत ही अनुगृहीत हूँ ।	१०८२
९० हंसावती के केशर कलित हाथ		१०५ पृथ्वीराज का रावल समरसिंह के	
पावों की शोभा वर्णन ।	"	पुत्र कुंभा जी को संभर की जागीर	
९१ पृथ्वीराज का विवाह मंडप में		का पट्टा लिखना ।	"
प्रवेश ।	"	१०६ समर सिंह का उस पट्टे को अस्वी-	
९२ पृथ्वीराज के रत्न जटित मौर		कार लौटा देना ।	"
(व्याह मुकुट) की शोभा और		१०७ समर सिंह का चितौर जाना ।	१०८३
दीप्ति वर्णन ।	१०८८	१०८ पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में	
९३ हंसावती का सखियों सहित मंडप		मस्त होजाना ।	"
में आना ।	"	१०९ हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।	"
९४ पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य		११० मुग्धा हंसावती की कोक कला में	
देख कर प्रफुल्लित होना ।	"	पृथ्वीराज का मुग्ध होकर कामान्ध	
९५ पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठ-		वृषभ की नाई मस्त हाना ।	१०८४
बन्धन होना ।	"	१११ हंसावती के मन का पृथ्वीराज के	
९६ हंसावती के अंग प्रत्यंग में काम		प्रेम में निर्मल चन्द्रमा की भांति	
की अलौकिक लालिमा का वर्णन ।	"	प्रफुल्लित हो जाना ।	"
९७ इसी समय दिल्ली पर मुसल्मान सेना		११२ शनैः शनैः हंसावती के डर और	
का आक्रमण करना और ५०		लज्जा का हास होना और उसकी	
सामन्तों का उस आक्रमण को		कामेच्छा का बढ़ना ।	"
रोकना ।	१०८९	११३ हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी	
९८ पृथ्वीराज के सामन्तों और मुस-		चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज के	
ल्मान सेना का युद्ध वर्णन ।	"	हृदय समुद्र का उमड़ना ।	"
९९ दूसरे दिवस प्रातःकाल सुस्तान खां		११४ दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज	
का आक्रमण करना ।	१०९०	से मिलने के लिये हंसावती ऐसी	
१०० हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं की		व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र	
चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन ।	"	के लिये ।	१०९५
१०१ तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के		११५ पावस का अन्त होने पर शरद का	
लिये तय्यार होना ।	१०९१	आगम और शीत का बढ़ना ।	"

- ११६ शीतकाल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना । १०६५
- ११७ हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहि-निशि मस्त रहते थे । १०६६
- ११८ इस समय की कथा का अन्तिम परिणाम वर्णन । ”
- ११९ समरसिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन । १०६७

(३७) पहाड़राय समय ।

(पृष्ठ १०९९ से १११८ तक ।)

- १ कविचन्द की स्त्री का पृछना कि पहाड़ राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा । १०६८
- २ शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है । ”
- ३ तत्तार खां का उत्तर देना । ”
- ४ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना । ”
- ५ दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसल्मान सेना का सज कर इकट्ठा होना । ११०१
- ६ समस्त सेना का दस कोस पूर्व को बढ़ कर पड़ाव डालना । ”
- ७ शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम । ”
- ८ सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना । ११
- ९ त्रिंठ खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना । ”

- १० खुरसान खां का राजनीति कथन । ११०३
- ११ बादशाह का (लोरकराय) खत्री को पत्र देकर धर्मायन के पास दिल्ली भेजना । ”
- १२ दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तयारी होना । ११०४
- १३ दूत का दिल्ली पहुंचना । ”
- १४ दूत का धर्मायन से मिलना । ”
- १५ धर्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना । ”
- १६ धर्मायन का दरबार में जाकर वह पत्री कैमास को देना । ”
- १७ शहाबुद्दीन की पत्री का लेख । ११०५
- १८ धर्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना । ”
- १९ कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना । ”
- २० पत्री सुन कर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना । ”
- २१ पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना । ”
- २२ सामंतों का उत्तर देना । ११०६
- २३ पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना । ”
- २४ कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन । ”
- २५ पृथ्वीराज का पड़ाव डालना । ११०७
- २६ अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना । ”
- २७ हिन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना । ”
- २८ शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना । ”
- २९ सूर्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना । ”

- ३० दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना । ११०७
- ३१ दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और खवन सेना का व्यूह वर्णन । ११०८
- ३२ हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उसके अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन । ”
- ३३ दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना । ११०९
- ३४ युद्ध का दृश्य वर्णन । १११०
- ३५ सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना । ”
- ३६ प्रातःकाल होते ही इधर से कैमास का और शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना । ”
- ३७ सूर्योदय होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जै जैकार शब्द करना । ११११
- ३८ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करना । ”
- ३९ दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना । ”
- ४० युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन । १११२
- ४१ योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूर वीरों का वीरता के साथ प्राण देना । ”
- ४२ युद्ध रूपी समुद्र मथन की उक्ति वर्णन । १२१४
- ४३ इस युद्ध में जो जो वीर सर्दार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन । १११४
- ४४ युद्ध होते होते रात्रि हो गई । १११५
- ४५ उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर

- पहाड़ राय तोंमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना । १११५
- ४६ पहाड़ राय तोंमर का बल और पराक्रम वर्णन । ”
- ४७ दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना । १११६
- ४८ तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ । ”
- ४९ चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन । ”
- ५० मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के ऊपर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना । १११७
- ५१ मुसल्मान सेना का घबरा कर भाग उठना । ”
- ५२ अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चक्रित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना । १११८
- ५३ सुल्तान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दरद लेकर उसे छोड़ देना । ”

(३८) बरुण कथा ।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक ।)

- १ सोमेश्वर सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे । १११९
- २ चन्द्रग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित जमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना । ”

- ३ सोमेश्वर जा के साथ में जाने वाले
योद्धाओं के नाम और पराक्रम
वर्णन । १११६
- ४ उक्त समय पर पूर्णिमा की शोभा
वर्णन । ११२०
- ५ अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न
आने पर सब का यमुना के किनारे
पर जाना । ११२१
- ६ वरुण के वीरों का जाग्रत होना । ”
- ७ इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल
दूब और अन्न आदि लिए हुए
खड़े थे । ”
- ८ वीरों का गहरे जल में शब्द करना । ”
- ९ जलवीरों के सहज भयानक और
विकराल स्वरूप का वर्णन । ”
- १० सामन्तों का प्राव पर चला जाना । ११२२
- ११ जल वीरों के उछारने से वेग से जो
जल प्राव पर पड़ता था उसका
दृश्य वर्णन । ”
- १२ जल के बीच में जल वीरों की आसुरी
माया का वर्णन । ”
- १३ जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर
भी सोमेश्वर के सामन्तों का भयभीत
न होना । ११२३
- १४ वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन
करके सामन्तों का भय दिखाना । ”
- १५ वीरों का राजा सहित सामन्तों पर
आसुरी शस्त्र प्रहार करना । ”
- १६ सामन्तों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध
करना । ”
- १७ इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा
प्रगट होते देख वीरों का बल कम
होना और सामन्तों का जोर बढ़ना । ११२४
- १८ प्रातःकाल के बालसूर्य की प्रतिभा
वर्णन । ”

- १९ सूर्योदय होते ही वीरों का अन्त-
र्धान होना और सोमेश्वर सहित सब
सामन्तों का मूर्छित होना । ११२५
- २० सब मूर्छित पड़े हुए थे उसी समय
पृथ्वीराज का वहां पर आना । ”
- २१ निज पिता एवं सामन्तों की ऐसी
दशा देखकर पृथ्वीराज के हृदय में
दुःख होना । ”
- २२ यमुना के सम्मुख हाथ बाँध कर
खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना । ”
- २३ यमुना जी की स्तुति । ”
- २४ स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का
यमुना जी से वर मांगना । ११२६
- २५ सोमेश की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वी-
राज का पुनः ब्रह्म ज्ञान की युक्ति-
मय स्तुति करना । ११२७
- २६ इस प्रकार मूर्छा जागने पर पृथ्वीराज
का गंधर्व यंत्र का जप करना जिससे
मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर
चैतन्य होना । ”
- २७ पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर
नवाना । ११२८
- २८ सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का
राजमहल में आना । ”

[३९] सोमबध समय ।

(पृष्ठ ११२२ से पृष्ठ ११५२ तक)

- १ भीमदेव की इच्छा ११२९
- २ भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण
करने की सलाह करना ”
- ३ सब सर्दारों का कहना कि बैर का
बदला अवश्य लेना चाहिए । ११३०
- ४ भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा । ”
- ५ भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना । ”

- ६ भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य । ११३०
- ७ भोलाराय भीम का साम दाम दण्ड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना । ११३२
- ८ मंत्रियों का कहना कि इस कार्य में विलंब न करना चाहिए । ”
- ९ राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतिहासिक उदाहरण । ११३३
- १० पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना । ”
- ११ भोलाराय का सेना सजकर तय्यारी करना । ”
- १२ सेना के जुड़ाव का वर्णन । ”
- १३ भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना । ११३४
- १४ कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते । ”
- १५ सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना । ”
- १६ सेना समूह का क्रम वर्णन । ”
- १७ उक्त सेना समूह की सजावट के आंतक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन । ”
- १८ इसी अवसर में मुख्य सामन्तों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामन्तों को पीछे सेना की तरफ आने की आज्ञा देना । ११३५
- १९ पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामन्तों का भी चला जाना जिनके भुज बल के आश्रित दिल्ली नगर था । ”
- २० उसी समय पूर्व वैर का बदला लेने

- के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़ आना, प्रातःकाल की उसकी तय्यारी का वर्णन । ११३६
- २१ इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव को सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना । ”
- २२ सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन । ”
- २३ सैनिकों का उत्साह, सोमेश्वर की वीरता और कन्हाराय का बल वर्णन । ११३७
- २४ युद्ध आरम्भ होना । ”
- २५ कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति का व्याख्यान । ”
- २६ कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना । ११३८
- २७ दोनों हिन्दू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन । ”
- २८ कन्हाराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन । ”
- २९ कन्हाराय का कोप । ११३९
- ३० अपनी सेना को छितर बितर देखकर भीमदेव का रोश में आकर स्वयं युद्ध करना । ११४०
- ३१ कन्ह और भीमदेव का परस्पर घोर युद्ध होना । ”
- ३२ कवि की उक्ति । ”
- ३३ युद्ध स्थल की उपमा वर्णन । ११४१
- ३४ कन्हाराय का भीमदेव के हाथी को मार गिराना । ”
- ३५ दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध । ”
- ३६ जामराय यादव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन । ११४२
- ३७ उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैलों से उपमा वर्णन । ”
- ३८ इन वीरों का युद्ध देखकर देवताओं

- का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना ११४३
- ३८ सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन । ”
- ४० भीमदेव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना । ”
- ४१ सोमेश्वर जी की तरफ से कछवाहे वीरों का मारा जाना । ”
- ४२ भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना । ११४४
- ४३ उस समय चहुआन वीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना । ”
- ४४ सोमेश्वर और भीमदेव का साम्हना होना । ”
- ४५ भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना । ११४५
- ४६ अपना मरण निश्चय जानकर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना । ११४६
- ४७ सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामन्तों की संख्या कथन । ११४७
- ४८ सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना । ”
- ४९ सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली । ”
- ५० पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुनकर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्यु कर्म करना ।
- ५१ पृथ्वीराज का भूमि, गो, स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाँधूंगा न धी खाऊंगा । ११४८
- ५२ पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों

- का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठने का मंत्र देना । ११४८
- ५३ पृथ्वीराज का राज्याभिषेक । ”
- ५४ पृथ्वीराज का दरबार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पद कर तिलक करना । ११४९
- ५५ पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरबार में नृत्य गान होना । ”
- ५६ दरबार में सब सामन्तों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन । ११५०
- ५७ इच्छनी से गठबंधन होकर पृथ्वीराज का कुलाचार सम्बन्धी पूजन विधान करना । ११५१
- ५८ पृथ्वीराज का राजगद्दी पर बैठना । पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामन्तों का टीका करना । ”
- ५९ पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन । ११५२

[४०] पञ्जून छोंगा नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

- १ पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना । ११५३
- २ पञ्जूनराय कछवाहे की पड़न के संग्राम में वीरता वर्णन । ”
- ३ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय के सिर पर छोंगा बाँध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना । ”
- ४ दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनि-गर के किले में है और यहां पर पञ्जूनराय का चढ़ाई करना । ११५४
- ५ पञ्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन । ”

- ६ पञ्जूनराय का घेरा डालना । मलय-
सिंह का मुकाबला करना । ११५५
- ७ पञ्जूनराय का चाबुक भूल जाना
और फिर सात कोस से लौट कर
चालुक की भरी सेना में से चाबुक
ले जाना । ”
- ८ चालुक सेना का पीछा करना और
पञ्जूनराय का उसे परास्त करना । ”
- ९ छोंगा देकर भीमदेव का पट्टन को
जाना और मलयसिंह और पञ्जून
राय की कीर्ति का स्थापित होना । ११५६
- १० पञ्जूनराय का पृथ्वीराज को छोंगा
नजर करना । ”
- ११ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को ही छोंगा
दे देना और एक घोड़ा और देना । ”
- १२ चन्द कवि की उक्ति से पञ्जूनराय
के वीरशिरोमणि होने की प्रशंसा । ”

[४१] पञ्जून चालुक नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

- १ जैचंद के उभाड़ने से बालुकाराय
सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का
दिल्ली पर आक्रमण करना । ११५७
- २ दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना । ”
- ३ पृथ्वीराज का बिचार करना कि
पञ्जून राय से यह कार्य होना
संभव है । ”
- ४ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को बुलाना ११५८
- ५ पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और
किसी का बीड़ा न उठाना सब का
पञ्जूनराय की प्रशंसा करना । ”
- ६ पञ्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा
कर दोनों शत्रुओं के ध्वंस करने की
प्रतिज्ञा करना । ”

- ७ सुल्तान और कमधुज के दल की
सर्प और अफीम से उपमा और
पञ्जूनराय की गरुड़ और ऊंट से
उपमा वर्णन । ११५८
- ८ पञ्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा
में आनन्द ध्वनि होना । ११५९
- ९ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को घोड़ा
देना । ”
- १० चढ़ाई के लिये तय्यार होकर पञ्जून
राय का अपने कुटुम्ब से मिलना
और उसके पांचों भाइयों का साथ
होना । ”
- ११ पञ्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन । ”
- १२ पञ्जूनराय के कूच की तिथि
वर्णन । ११६०
- १३ पञ्जूनराय की कृत वीरताओं का
वर्णन । ”
- १४ पञ्जूनराय की चढ़ाई का आतंक
वर्णन । ”
- १५ पञ्जूनराय का यवन सेना के मुका-
बिले पर पहुंचना । ”
- १६ कमधुज और यवन सेना से पञ्जून
का साम्हना होना । ११६१
- १७ दोनों प्रतिपक्षी सेनाओं का आतंक
वर्णन । ”
- १८ पञ्जून सेना के व्यूह बध्य होने का
स्पष्टीकरण । ”
- १९ युद्ध की तिथि । ”
- २० पञ्जूनराय की सेना का बड़ी वीरता
से युद्ध करना । ११६२
- २१ इस युद्ध में पञ्जूनराय के भाइयों
का मारा जाना । ”
- २२ पञ्जूनराय की जीत होना, और
शत्रु सेना का माल मत्ता लूटा जाना । ”
- २३ पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा । ११६३

२४ पञ्जूनराय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना । ११६३

[४२] चंद द्वारिका समयौ ।

(पृष्ठ ११६५ से पृष्ठ ११७७ तक)

- १ कविचंद का द्वारिका को जाना । ११६५
- २ कविचंद का यात्रा समय का साज सामान और उसके साथियों का वर्णन । "
- ३ चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना । "
- ४ चित्तौरगढ़ की स्थापना का वर्णन । ११६६
- ५ चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा । "
- ६ उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना । "
- ७ एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खा लेना । "
- ८ सिंहनी की पूर्व कथा । "
- ९ कविचंद का आना सुनकर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना । ११६७
- १० कवि का चित्तौर जाना । ११६८
- ११ कवि का किले में भोजन करने जाना । पृथा का उसे भोजन परोसना । "
- १२ कन्ह अमरसिंहादि सामन्तों का पृथा कुमारी को उपहार देना । ११६९
- १३ चन्द का चित्तौर से चलना । "
- १४ द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना । "
- १५ कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति । ११७०
- १६ देवी की स्तुति । "
- १७ कवि का होम करके ब्राह्मण भोजनादि कराना । ११७१
- १८ द्वारिकापुरी में छाप लगवाने का माहात्म्य । "
- १९ द्वारिकापुरी से लौटकर चन्द का

भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना । ११७२

- २० पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन । "
- २१ पट्टनपुर के आनन्द मय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन । ११७३
- २२ राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना । "
- २३ भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना । ११७४
- २४ जगदेव का कविचन्द से मिलना । "
- २५ जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना । "
- २६ कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्त्ति का उच्चार करना । ११७५
- २७ जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ । "
- २८ भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना । ११७६
- २९ कविचन्द का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना । "
- ३० कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना । "
- ३१ कविचन्द और अमरसिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना । ११७७
- ३२ भीमदेव का अपने महल को लौट जाना । "
- ३३ कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना । "

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

- | | | | |
|---|------|---|------|
| १ एक समय शहाबुद्दीन का तत्तारखां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना । | ११७६ | १७ शाह का मुकाम, लाडून में सुनकर पृथ्वीराज का पंचासर में डेरा डालना । | ११८५ |
| २ तत्तारखां का वचन । | " | १८ कैमास को शाह के प्रातःकाल पहुचने का खबर मिलना । | " |
| ३ कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन । | " | १९ पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बांधना । | " |
| ४ शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना । | ११८० | २० पृथ्वीराज की पंच अनी सेना का वर्णन । | " |
| ५ दिल्ली से गुप्तचर का आना । | " | २१ शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना । | ११८६ |
| ६ पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना । | " | २२ रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना । | ११८७ |
| ७ शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना । | " | २३ युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन । | " |
| ८ शहाबुद्दीन का अगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचना । | ११८१ | २४ अनीपति योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध । | ११८८ |
| ९ पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना । | " | २५ द्वादसी का युद्ध । | " |
| १० पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतों के नाम कथन । | ११८२ | २६ पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंड राय का पराक्रम । | ११८९ |
| ११ शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम । | " | २७ चार यवन सर्दारों का मिलकर चामंडराय पर आक्रमण करना । | " |
| १२ दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना । | ११८३ | २८ कैमास का चामंडराय की सहायता करना । | ११९० |
| १३ पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन । | " | २९ चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना । | " |
| १४ शहाबुद्दीन की सेना का षट्दूबन की तरफ कूच करना । | ११८४ | ३० लाल खां का वर्णन । | " |
| १५ शाह के सारुंड में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना । | " | ३१ लाल खां का मारा जाना । | ११९१ |
| १६ पृथ्वीराज का चामंडराय की प्रशंसा करना और प्रातःकाल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना | " | ३२ कैमास और चामंडराय का वार्तालाप । | " |
| | | ३३ कैमास का युद्ध वर्णन । | ११९२ |
| | | ३४ मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में | |

घमासान युद्ध होना ।	११६२	वीर वाक्यों से धैर्य देना ।	११६६
३५ द्वादसी का युद्ध वर्णन ।	११६३	२ पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के वचन ।	"
३६ दोनों सेनाओं के मुखिया सर्दारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन ।	११६४	३ पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ्य देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना ।	१२००
३७ अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना ।	"	४ प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामन्त और सैनिकों की सभा करके अपने वैर लेने का पण उनसे कहना ।	"
३८ शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना ।	११६५	५ ज्योतिषी का गुजरात पर चढ़ाई के लिये मुहूर्त साधन करना	१२०१
३९ शहाबुद्दीन का बान वर्षा करके सामंतों को घायल करना ।	"	६ ज्योतिषी का ग्रह योग और मुद्दिन मुहूर्त वर्णन करना ।	"
४० कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सर्दारों का रक्षा करना ।	११६६	७ पृथ्वीराज का लग्न साधकर अपनी तय्यारी करना ।	१२०२
४१ चक्रसेन का मारा जाना ।	"	८ पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिशा को कूच करना ।	१२०३
४२ चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन ।	"	९ राजा के साथ सैन्य सहित निहदुराय का आन मिलना ।	"
४३ त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना ।	"	१० पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तय्यारी करना ।	"
४४ कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना ।	११६७	११ भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ।	१२०४
४५ दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना ।	"	१२ पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा ।	१२०५
४६ कैमास का रणक्षेत्र में से घायल और मृत रावतों को ढुँढ़वाना ।	११६८	१३ पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना ।	"
४७ रण में नृत्य होने की प्रशंसा ।	"	१४ पृथ्वीराज का गहन वन में पड़ाव पड़ना ।	"
४८ पृथ्वीराज का दण्ड लेकर सुल्तान को छोड़ देना और वह दंड सामन्तों को बांट देना ।	"	१५ कैमासादि सब सामन्तों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना ।	१२०६

—:०:—

[४४] भीम वध समय ।

(पृष्ठ ११९९ से पृष्ठ १२२७ तक)

१ पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंह प्रमार का

१६ एक प्रहर रात्रि रहने से शिकार किए जाने की सलाह ।

१७ कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना

और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा ।	१२०६	३४ भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चन्द के पास भेजकर अपनी तय्यारी की सूचना देना ।	१२१४
१८ स्वप्न का फल ।	१२०७	३५ जगदेव बचन ।	"
१९ सबेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन ।	"	३६ चन्द बचन ।	"
२० राजा के स्वप्न का फल ।	१२०८	३७ जगदेव का चन्द का खूबा उत्तर सुनकर भीमदेव के पास फिर जाना ।	१२१५
२१ कन्ह के ज्ञानमय बचन ।	"	३८ पृथ्वीराज का निदुदुर को युद्ध का भार सौंपना ।	"
२२ पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना ।	"	३९ निदुदुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना ।	"
२३ बन में खर भर होतेही एक भूखे सिंह का निकलना ।	१२०९	४० निदुदुर का कन्हराय की प्रशंसा करना ।	"
२४ सिंह का वर्णन ।	"	४१ पृथ्वीराज का निदुदुर को मोती की माला पहनाना ।	१२१६
२५ सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर चार करना ।	"	४२ निदुदुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना ।	"
२६ कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना ।	१२१०	४३ पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना ।	"
२७ कन्ह के बल और उसकी वीरता की प्रशंसा ।	"	४४ कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना ।	"
२८ अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामन्तों सहित राजा का आगे कूच करना ।	"	४५ निदुदुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना ।	"
२९ कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन ।	१२११	४६ सेना का सज कर आगे बढ़ना ।	१२१७
३० पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक चुस्लू भेजना ।	१२१२	४७ चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठ भेड़ होना ।	"
३१ चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्तिपूर्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है ।	"	४८ भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन ।	"
३२ भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूँ जो मेरे संमुख आवे ।	१२१३	४९ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध ।	"
३३ चन्द का भीमदेव के दर्बार से कुपित होकर चला आना ।	१२१४	५० कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना ।	१२१८
		५१ मकवाना का मारा जाना ।	१२१९

५२ सामन्तों का पराक्रम और शूर वीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा ।	१२१९	३ तदनुसार राम रावण युद्ध ।	१२२६
५३ रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन ।	१२२०	४ राम रावण युद्ध का आतंक ।	"
५४ प्रसंगराय खीची का पराक्रम वर्णन ।	"	५ मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन ।	१२३२
५५ भीमदेव की फौज का विचलना ।	१२२१	६ राम रावण का युद्ध ।	१२३३
५६ शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा ।	"	७ रामचन्द्र जी की उदारता ।	१२३४
५७ परस्पर घमासान युद्ध का दृश्य वर्णन ।	१२२२	८ इन्द्र का वचन ।	"
५८ कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अप्रगति होती है ।	"	९ इन्द्र का एक गन्धर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द्र में शत्रुता का सूत्र डाले ।	"
५९ पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना ।	१२२३	१० कन्नौज की शोभा वर्णन ।	१२३५
६० कन्ह की तलवार की प्रशंसा ।	१२२४	११ गन्धर्व की स्त्री का उससे संयोगिता के पूर्व जन्म की कथा पढ़ना ।	"
६१ चहुआन के पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना ।	"	१२ गन्धर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है ।	"
६२ पृथ्वीराज के सामंतों की प्रशंसा ।	"	१३ कविचन्द्र का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना ।	"
६३ सायंकाल के समय युद्ध का बन्द होना ।	"	१४ शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन ।	"
६४ प्रभात समय की शोभा वर्णन ।	"	१५ एक सुन्दर स्त्री को देखकर ऋषि का चित्त चंचल होना ।	१२३६
६५ रणक्षेत्र की सफाई होकर लार्शें ढूँढ़ी गई ।	१२२६	१६ उक्त स्त्री का सौन्दर्य वर्णन ।	"
६६ युद्ध में मरे हुए शूर वीर और हाथी घोड़ों की संख्या ।	"	१७ परन्तु ऋषि का अपने मन को साध कर बदरिकाश्रम पर्यन्त पर्यटन करके घोर तप करना ।	१२३७
६७ संसार की असारता का वर्णन ।	१२२७	१८ ऋषि के तप का तेज वर्णन और इसमें इन्द्र का भयभीत होना ।	"
६८ गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना ।	"	१९ इन्द्र का अप्सराओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भूष्ट करें ।	"
(४५) संयोगिता पूर्व जन्म कथा ।		२० अप्सराओं का सौन्दर्य वर्णन ।	१२३८
(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)		२१ मंजुघोषा का सुमन्त ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना ।	"
१ पृथ्वीराज का इन्द्र प्रति वचन ।	१२२६		
२ इन्द्र का उत्तर देना ।	"		

२२ मंजुषोपा का लावण्य भाव विलास और श्रृंगार वर्णन ।	१२३८
२३ अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि चण्डोक के लिये डगमगाई ।	१२३९
२४ अप्सरा का शक्ति चित्त होकर अपना कर्तव्य विचारना ।	"
२५ तब तक से पुनः ऋषि का अर्षड रूप से ध्यानमग्न होना ।	१२४०
२६ मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन ।	"
२७ वाद्य वजना और अप्सरा का गाना ।	"
२८ मुनि का समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना ।	१२४१
२९ अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना ।	"
३० मुनि का मूर्छित हो जाना, परन्तु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना ।	"
३१ कविचन्द्र की स्त्री का अप्सरा के सौन्दर्य के विषय में जिज्ञासा करना ।	१२४२
३२ अप्सरा का नख सिख वर्णन ।	"
३३ अप्सरा के सर्वाङ्ग सौन्दर्य की प्रशंसा ।	१२४३
३४ कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है ।	"
३५ अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमन्त ऋषि के पास आना ।	१२४४
३६ अप्सरा के योगिनी वेष की शोभा वर्णन ।	"
३७ मुनि का छद्म वेष धारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना ।	१२४५

३८ तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन ।	१२४५
३९ अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना ।	१२४७
४० इसी अवतारों का संक्षिप्त वर्णन ।	"
४१ अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो ।	"
४२ नृसिंहावतार का वर्णन ।	"
४३ मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना	१२४८
४४ अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझ से नहीं ।	"
४५ उसी समय सुमन्त के पिता जरज मुनि का आना ।	"
४६ मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना ।	"
४७ जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना ।	१२४९
४८ सुमन्त का लज्जित होना और जरज मुनि का उसे धिक्कारना ।	"
४९ जरज मुनि के शाप का वर्णन ।	"
५० अप्सरा का भयभीत होकर जरज मुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना ।	"
५१ अप्सरा के स्वर्ग से पात होने का प्रकरण । तीनों देवताओं का इन्द्र के द्वार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना ।	१२५०
५२ विष्णु का सनत्कुमारों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना ।	"
५३ हिरणाक्ष हिरनाकुश बध ।	१२५२
५४ रावण और कुम्भकर्ण बध ।	"
५५ त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना ।	१२५३

५६ इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना ।	१२५३	जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।	१२५६
५७ अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना ।	"	२ शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्धान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना ।	"
५८ अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना ।	१२५४	३ संवत् ११३३ में संयोगिता का जन्म वर्णन ।	"
५९ उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कन्नौज के राजा के घर जन्म लेना ।	"	४ संयोगिता का दिन प्रति दिन बढ़ना और आयु के तेरहवें वर्ष में उस के शरीर में कामोदीपन होना ।	१२६०
६० कन्नौज के राजा विजयपाल का दाक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना ।	१२५५	५ संयोगिता के हृदय मंदिर में काम-देव का यथापन्न स्थान पाना ।	"
६१ समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोमवंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना ।	"	६ संयोगिता के सौन्दर्य की बड़ाई ।	"
६२ मुकुंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह्र होना ।	"	७ संयोगिता का भविष्य होनहार वर्णन ।	"
६३ विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना ।	१२५६	८ संयोगिता प्रति जयचन्द का स्नेह ।	१२६२
६४ सेतवन्दरामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना ।	"	९ संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि ।	"
६५ दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना ।	१२५७	१० संयोगिता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन बम्हनी) के पास जाना ।	"
६६ विजयपाल की दिग्विजय में पाई हुई जयचन्द की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना ।	"	११ योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य की छटा वर्णन ।	१२६३
		१२ संयोगिता का लप लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना ।	"
		१३ एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना ।	"
		१४ ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना ।	१२६४
		१५ संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का यौवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना ।	१२६५

[४६] विनय मंगल प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२७४ तक)

१ अप्सरा के संयोगिता के नाम से

- १६ अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ । १२६६
 १७ विनय मंगल की भूमिका । ”
 १८ पति का गौरव कथन । १२६७
 १९ स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना । ”
 २० पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना । ”
 २१ विनय भाव की मर्यादा गौरव और प्रशंसा । ”
 २२ सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं । १२६८
 २३ मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा । ”
 २४ विनय का गौरव । १२६९
 २५ विनय की प्रशंसा उस के द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन । ”
 २६ उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान । १२७०
 २७ स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता । ”
 २८ विनय हीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती । ”
 २९ एक मात्र विनय की प्रशंसा और उप-योगिता वर्णन । १२७१
 ३० इति विनय मंगल कांड समाप्त । १२७३
 ३१ ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से संयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना । ”
 ३२ दुर्जा का दुर्ज से कथा कहने को कहना । ”
 ३३ दुर्ज का उत्तर । ”
 ३४ पृथ्वीराज का वर्णन । ”
 ३५ कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रा मग्न हो जाना । १२७४

[४६] सुक वर्णन ।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

- १ संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश । १२७५
 २ सुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना । ”
 ३ सुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वी-राज के दरबार में जाना । ”
 ४ ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना । ”
 ५ दुर्ज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय में चर्चा करना । ”
 ६ संयोगिता के जन्म पत्र के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन । १२७६
 ७ छः महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना । १२७७
 ८ विनयमंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना । ”
 ९ अनंगपाल के हृदय में वैराग उत्पन्न होने का वर्णन । ”
 १० मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना । ”
 ११ अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य दे देना । १२७८
 १२ पृथ्वीराज की कूट नीति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना । ”
 १३ अनंगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को चला जाना । ”
 १४ दसों दिशाओं में सुविस्तृत पृथ्वीराज की उज्ज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना । १२७९
 १५ संयोगिता का वर्णन । ”

- १६ बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयः सन्धि अवस्था होती है उसका वर्णन । १२७६
- १७ स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन । १२८०
- १८ संयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता । १२८१
- १९ संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन " १२८२
- २० ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौन्दर्य की कथा सुन कर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना । १२८३
- २१ पृथ्वीराज की कामवेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन । १२८४
- २२ सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना । "
- २३ यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना । "
- २४ पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन । "
- २५ उक्त वर्णन सुन कर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना । १२८५
- २६ पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन । "
- २७ ब्राह्मण का कहना कि चहुआन अद्वितीय पुरुष है । १२८६
- २८ संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना । "
- २९ संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहिर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना । १२८७
- ३० वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन । "
- ३१ निर्जन बन में यच्चों के एक उपवन का वर्णन । "

- ३२ पृथ्वीराज का दरवांन को जीत कर भीतर बगीचे में जाना । १२८७
- ३३ यच्च पत्तिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप । १२८८
- ३४ यच्च का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा है । "
- ३५ पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना । "
- ३६ गन्धर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना १२८९
- ३७ अप्सराओं का दिव्य रूप और शृंगार वर्णन । "
- ३८ पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गन्धर्व का उन्हें एक सर्व सिद्धि कवच देना । १२९१

—:—

[४८] बालुकाराय समय ।

(पृष्ठ १२८३ से पृष्ठ १३२९ तक)

- १ राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमंत्रण भेजा जाना । १२८३
- २ यज्ञ की सामग्री का वर्णन । "
- ३ यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना । १२८४
- ४ जयचन्द का प्रताप वर्णन । "
- ५ जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य देने के लिये संदेसा भेजने की इच्छा करना । "
- ६ जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा । १२८५
- ७ जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और

- मंत्री सुमन्त का जयचन्द को यज्ञ करने से मना करना । ”
- ८ जयचन्द का मन्त्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना । १२६७
- ९ मंत्री का स्वामी की आज्ञा मान कर दिल्ली को जाना । ”
- १० सुमन्त का दिल्ली पहुंचना । १२६८
- ११ पृथ्वीराज का सुमन्त का यथोचित सत्कार और सम्मान करना । ”
- १२ मंत्री सुमन्त का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना । ”
- १३ सुमन्त की बातें सुनकर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्मचारियों से सलाह करना । १२६९
- १४ सामन्तों की सत्कीर्ति । ”
- १५ जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना । ”
- १६ कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिलकर जयचन्द का संदेसा कहना । १३००
- १७ पृथ्वीराज के सामन्तों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना । ”
- १८ कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ठोठता को धिक्कारना । १३०१
- १९ दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और बालुकाराय को उसे समझाकर शान्त करना । यज्ञ का सामान होना । ”
- २० संयोगिता के हृदय में विरह बेदना का संचार होना । १३०३
- २१ संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एवं देहिक अवस्था का वर्णन । ”
- २२ संयोगिता का वय और उसके स्वाभाविक सौन्दर्य का वर्णन । १३०४
- २३ संयोगिता के यौवन काल की वसन्त ऋतु से उपमा वर्णन । ”
- २४ पृथ्वीराज का अपमान हुआ जानकर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही विवाह करने का पण करना । १३०५
- २५ अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुन कर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामन्तों से सलाह करना । १३०६
- २६ सब सामन्तों का अपना अपना मत प्रकाशित करना । ”
- २७ जयचन्द के भाई बालुकाराय को मारने के लिये तैयारी होना । १३०७
- २८ कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामन्तों का कहना कि कन्नौज पर ही चढ़ाई की जाय । ”
- २९ कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है । १३०८
- ३० दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये मूर्त देखने की आज्ञा देना । ”
- ३१ ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना । १३०९
- ३२ उक्त नियत तिथि पर तय्यारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना । ”
- ३३ पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन । १३११
- ३४ तय्यारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन । १३१२

३१	सेना सैन्य कर पृथ्वीराज का चलना आर कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना ।	१३१२	५१	बालुकाराय का रणकौशल ।	१३१८
३६	बालुकाराय का परदेश की तरफ यात्रा करना ।	"	५२	मूरता की प्रशंसा ।	"
३७	पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जानेवाले योद्धाओं का वर्णन ।	"	५३	बालुकाराय का धिरजाना और उसका पराक्रम ।	१३१६
३८	बालुकाराय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना ।	१३१३	५४	युद्ध स्थल का चित्र दर्शन ।	"
३९	चहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।	"	५५	बालुकाराय का पृथ्वीराज पर आक्र- मण करना । पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना ।	"
४०	पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना ।	१३१४	५६	पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना । व्यूह का वर्णन ।	१३२०
४१	पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुन कर बालुकाराय का आश्चर्यान्वित और कुपित होना ।	"	५७	बालुकाराय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना ।	"
४२	पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका- राय का सेना सजना ।	१३१५	५८	दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना ।	१३२१
४३	बालुकाराय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना ।	"	५९	कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना ।	१३२२
४४	चहुआन से युद्ध करने के लिये बालु- काराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन ।	"	६०	बालुकाराय के मारे जाने पर उसके वीर योद्धाओं का जूझना ।	१३२३
४५	चहुआन राय की सेनासंख्या ।	१३१६	६१	बालुकाराय की राजधानी का लूटा जाना ।	"
४६	दोनों सेनाओं की परस्पर देखा देखी होना ।	"	६२	बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन ।	१३२४
४७	बालुकाराय की सुसज्जित सेना को देख कर चहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना ।	"	६३	बालुकाराय के शौर्य की प्रशंसा वर्णन ।	"
४८	दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन ।	१३१७	६४	बालुकाराय के पक्षपाती पवन योद्धा- ओं की वीरता का वर्णन ।	"
४९	बालुकाराय का युद्ध करना ।	"	६५	जयचन्द की सेना और मुसल्मानों सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना ।	"
५०	बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन ।	"	६६	पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मौलिक पाने के विषय में कवि की उक्ति ।	१३२५
			६७	दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।	"
			६८	चहुआन और मुसल्मान सेना का घोर युद्ध ।	१३२६
			६९	कन्नौज की सेना का भागना और	

- पृथ्वीराज की जीत होना । १३२६
 ७० बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न । १३२७
 ७१ बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता । ”
 ७२ पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार
 कर दिल्ली को आना । १३२८
 ७३ गत घटना का परिणाम वर्णन । ”
 ७४ बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के
 यहाँ जाकर पुकार करना । ”

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव ।

(उंचासवां समय ।)

- १ यज्ञ के बीच में बालुकाराय की स्त्री
 का कन्नौज पहुँचना । १३३१
 २ यज्ञ के समय कन्नौजपुर की
 सजावट बनावट का वर्णन और
 जयचन्द को बालुकाराय के मारे
 जाने की खबर मिलना । ”
 ३ सात समुद्रों के नाम । १३३२
 ४ दसों दिशाओं और दिग्पालों के
 नाम । ”
 ५ बालुकाराय का बंध सुनकर जयचन्द
 का क्रोध करना । १३३३
 ६ यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द
 का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने
 की तैयारी करना । ”
 ७ यह सब सुनकर संयोगिता का
 अपने प्रण को और भी दृढ़
 करना । १३३४
 ८ समय उपयुक्त देखकर जयचन्द का
 संयोगिता के स्वयंवर करने का
 विचार करना । ”
 ९ यह सुन कर संयोगिता का चौहान
 प्रति और भी अनुराग बढ़ना । १३३५

- १० पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय
 शत्रु की फौज से विर जाना । १३३५
 ११ सब सेना का भाग जाना । १३३६
 १२ केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वी-
 राज का शत्रु पर जै पाना । ”

(५०) संयोगिता नाम प्रस्ताव ।

(पचासवां समय ।)

- १ पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना
 और कन्नौज के गुप्त चर का जय-
 चन्द को समाचार देना । १३३७
 २ पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना
 और सांभ होते ही साठ हजार शत्रु
 सेना को उसे आ घेरना । ”
 ३ सब सामन्तों का शत्रु सेना को मार
 कर विदार देना । १३३८
 ४ सामन्तों की स्वामिभक्ति का
 वर्णन । ”
 ५ जयचन्द का अपने मंत्री से संयो-
 गिता का स्वयंवर करने की सलाह
 करना । १३३९
 ६ जयचन्द का संयोगिता को सम-
 भाने के लिये दूती को भेजना । ”
 ७ दूतिका के लक्षण और उसका
 स्वभाव वर्णन । १३४०
 ८ दूती का संयोगिता से बचन । ”
 ९ दूती की बातों पर कुपित होकर
 संयोगिता का उत्तर देना । १३४१
 १० पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयो-
 गिता के विचार । ”
 ११ संयोगिता का बचन । ”
 १२ धा का बचन । १३४२
 १३ सहचरी का बचन । ”

- १४ पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन ।
संयोगिता का वाक्य । ”
- १५ सखी का वाक्य । १३४३
- १६ संयोगिता की संकोच दशा का वर्णन । ”
- १७ सखी का वचन । १३४४
- १८ संयोगिता का वचन । ”
- १९ सखी का वचन । ”
- २० संयोगिता वचन(निज पण वर्णन) । ”
- २१ दूती का निराश होकर जयचंद से संयोगिता का सब हाल कह सुनाना । १३४५
- २२ संयोगिता के हठ पर चिट्ठ कर जयचंद का उसे गंगा किनारे निवास देना । ”
- २३ गंगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश । ”
- २४ संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना । १३४६

(५१) हांसीपुर युद्ध ।

(इक्यावनवां समय ।)

- १ दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना । १३४७
- २ पृथ्वीराज का हांसीगढ़ की रक्षा के लिये सामन्तों को भेजना । ”
- ३ हांसीपुर का मोरचा पक्का कर के पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना । ”
- ४ बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसीगढ़ पर चढ़ाई करने का षडयंत्र रचना । १३४८
- ५ पृथ्वीराज का उक्त वर्ष अजमेर में रहना । ”

- ६ बलोच पहार का पत्र पाकर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना । १३४९
- ७ शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के भेजना । ”
- ८ हांसीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामन्तों का वर्णन । ”
- ९ बलोच पहार का संचित वर्णन । १३५०
- १० बलोच पहार का हांसीपुर में स्थानापन्न होना ।
- ११ बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रास्ता देने को पञ्जनराय से कहना और सधुवंशराम का उससे नहीं करना । १३५१
- १२ बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामंडराय का उसे लूटने की तय्यारी करना । ”
- १३ बेगम के पड़ाव का वर्णन । ”
- १४ बलोच पहारी का सामन्तों के पास जाकर शाह का वर्णन करना । १३५२
- १५ सामन्तों का रात को धावा करके बेगम को लूटना । ”
- १६ बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामन्तों से प्रार्थना करना । १३५३
- १७ धन द्रव्य लूटकर चामंडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहाँ जा पुकारना । १३५३
- १८ बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना । १३५४
- १९ माता के विलाप वाक्य सुनकर शाह का संकुचित और क्रोधित होना । ”
- २० शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना । १३५५
- २१ शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्यादा कथन कर के दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तय्यारी का हुक्म देना । ”

- २२ तत्तार खाँ का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना । १३५६
- २३ शहाबुद्दीन की दृढ़ता का वर्णन । ”
- २४ शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन । १३५७
- २५ शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना । ”
- २६ शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर बहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरक्कीब पूछना । ”
- २७ राजमंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना । १३५८
- २८ शाह का तत्तार खाँ से प्रश्न करना । ”
- २९ तत्तार खाँ का हांसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना । ”
- ३० हांसीपुर पर चढ़ाई होने का मसौदा पक्का होना । १३५९
- ३१ शहाबुद्दीन की आज्ञा । ”
- ३२ तत्तार खाँ की प्रतिज्ञा । ”
- ३३ शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना । ”
- ३४ गजनी के राजदूतों का सिन्धु पार होना । १३६०
- ३५ यवन सेना का हिन्दुस्तान की हद्द में बढ़ना । ”
- ३६ तत्तार खाँ और खुरसान खाँ की अपनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन । ”
- ३७ तत्तार खाँ का पड़ाव दस कोस आगे चलाना । १३६१
- ३८ शाही सेना का हांसीपुर के पास पड़ाव डालना । ”
- ३९ शाही सेना का हांसीपुर को घेरना । १३६२
- ४० मुसलमानी जातियों का वर्णन । ”
- ४१ यवन सेना की व्यूह रचना का वर्णन । ”
- ४२ युद्ध वर्णन । १३६३

- ४३ शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना । १३६३
- ४४ चामुंडराय के उत्कर्ष वचन । १३६४
- ४५ युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बन्द होना । ”
- ४६ प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना । ”
- ४७ गढ़ में उपस्थित सामन्तों के नाम । १३६५
- ४८ दोनों सेनाओं में युद्ध आरम्भ होना । ”
- ४९ युद्ध का वर्णन और दस चोद में यवन सेना का परास्त होना । ”
- ५० इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या । १३६६
- ५१ अलील खाँ का प्रतिज्ञा करके धावा करना । १३६७
- ५२ दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना । ”
- ५३ लड़ाई का वाकचित्र वर्णन । ”
- ५४ सामन्तों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना । १३६८

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध ।

(बावनवां समय ।)

- १ तत्तार खाँ का पराजित होना मुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना । १३६९
- २ वरन वरन की व्यूहबद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना । १३७०
- ३ शहाबुद्दीन का सामन्तों को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना । ”
- ४ शहाबुद्दीन का संदेसा पाकर साम-

न्तों का परस्पर सलाह और बाद विवाद करना ।	१३७१	बुलाने के लिये कहना ।	१३७९
५ सामन्तों का भगवती का ध्यान करना ।	"	२३ रावत समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना	"
६ हांसी के किले में स्थित सामन्तों के नाम और उनका वर्णन ।	"	२४ हांसीपुर को छोड़कर आए हुए सामन्तों का पृथ्वीराज से मिलना ।	"
७ कुछ सामन्तों का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बगरी का उसे न मानना ।	१३७२	२५ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को समझा बुझा कर सांत्वना देना ।	१३८०
८ कवि का कहना कि समयानुसार सामन्त लोग चूक गए तो क्या ।	"	२६ पृथ्वीराज का सामन्तों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना ।	"
९ देवराव बगरी का वचन ।	१३७३	२७ पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि ।	"
१० कल्हन और कमधुज का बगरी राय के वचनों का अनुमोदन करना ।	"	२८ सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।	१३८१
११ सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसीगढ़ पर आक्रमण करना ।	"	२९ रावल का चहुआन के पहलेही हांसीपुर पहुंच जाना ।	१३८२
१२ अन्यान्य सामन्तों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन ।	१३७४	३० समरसीजी के पहुंचतेही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना ।	"
१३ देवराय बगरी की वीरता ।	१३७५	३१ समरसिंह जी की सिपाहगिरी और फुर्तीलेपन का वर्णन ।	१३८३
१४ युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन ।	"	३२ यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन ।	"
१५ देवकर्ण बगरी का वीरता के साथ मारा जाना ।	१३७६	३३ समरसीजी की वीरता का बखान ।	१३८४
१६ वीर बगरी का मोक्ष पाना ।	"	३४ समरसीजी के भाई अमरसिंह का मरण ।	"
१७ इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली ।	"	३५ युद्धस्थल का चित्र वर्णन ।	"
१८ एक सहस्र सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामन्तों का किला न छोड़ना ।	१३७७	३६ यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना ।	१३८५
१९ पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना ।	"	३७ घोर युद्ध वर्णन ।	"
२० पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन ।	१३७८	३८ इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना ।	१३८६
२१ हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना ।	"	३९ अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना ।	१३८८
२२ कैमास का रावल समरसी जी को	"	४० पृथ्वीराज के पहुंचतेही याही सेना का बल हास होना ।	"
		४१ पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना ।	"

४२ रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन ।	१३८६
४३ रणस्थल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन । "	"
४४ मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना ।	"
४५ यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम ।	"
४६ यवन वीरों की प्रशंसा ।	१३९०
४७ हिन्दू पक्ष की प्रशंसा ।	३३६१
४८ सामन्तों का वीरता मय युद्ध करना ।	"
४९ युद्धस्थल का वाकचित्र दर्शन ।	"
५० घोर युद्ध उपस्थित होना ।	१३६२
५१ पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा ।	१३९३
५२ पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन ।	"
५३ युद्ध का आतंक वर्णन ।	१३६४
५४ किवकृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन ।	"
५५ वीर रस प्रभात वर्णन ।	"
५६ प्रातःकाल होतेही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना ।	१३६५
५७ प्रभात वर्णन ।	१६६६
५८ सूर्य की स्तुति ।	"
५९ सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन ।	१३६७
६० सामन्तों की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन ।	"
६१ यवन सैनिकों का उत्साह ।	"
६२ युद्ध का अक्षम आनन्द कथन ।	१३६८
६३ युद्ध में मारे गए वीरों के नाम ।	"
६४ तत्तार खां का मनहार होकर भागना ।	"
६५ खेत भरना होना और लाशों का उठवाया जाना ।	"

६६ युद्ध में मृत वीरों के नाम ।	१३६९
६७ हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन ।	"
६८ रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना ।	१४००
६९ रायल का दिल्ली में बीस दिन रहना ।	"

(५३) पञ्जून महुवा प्रस्ताव ।

(तिरपनवां समय ।)

१ कविचंद की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ ।	१४०१
२ कविचंद का उत्तर देना ।	"
३ खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना ।	"
४ शाही सेना का वर्णन ।	"
५ निहंदुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना ।	१४०२
६ राजा का दरबार में कहना कि महुवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जाय ।	"
७ सब लोगों का पञ्जूनराय के लिये राय देना ।	"
८ पञ्जून राय की प्रशंसा ।	"
९ पञ्जून राय को जागीर और सिरों-पाव देकर आज्ञा देना	१४०३
१० पञ्जून की प्रतिज्ञा ।	"
११ पञ्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना ।	१४०४
१२ युद्ध वर्णन ।	"
१३ पञ्जूनराय की वीरता ।	"
१४ यवन सेना का भाग उठना ।	१४०५

- १५ पञ्जूनराय की प्रशंसा । १४०५
 १६ पञ्जूनराय का दिल्ली आना और
 शाह का गजनी को जाना । ”

(५४) पञ्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।
 (चौवनवां समय ।)

- १ और सामन्तों को छोड़कर पञ्जून का
 नागौर जाना । १४०७
 २ मनहीन शाह का गजनी को जाना
 और पञ्जून राय को परास्त करने
 की चिंता करना । ”
 ३ धर्मार्थन का गजनी को समाचार देना । ”
 ४ शहाबुद्दीन का मंत्री से पञ्जूनराय
 के पास दूत भेजने की आज्ञा देना।
 इधर सेना तय्यार करना । १४०८
 ५ यवनदूत का नागौर पहुँचना । ”
 ६ पञ्जून राय का हँस कर निधड़क
 उत्तर देना । ”
 ७ दूत का गजनी जाकर शाह से

- पञ्जूनराय का संदेश कहना । १४०९
 ८ शहाबुद्दीन का कुपित होना । ”
 ९ इधर नागौर में किलेबन्दी होना । ”
 १० पञ्जून राय की वीर व्याख्या । १४१०
 ११ यवन सेना का नागौर गढ़ घेर
 कर नोल चलाना । ”
 १२ राजपूत सेना का घबड़ाना और
 पञ्जूनराय का उसे धैर्य देना । ”
 १३ पञ्जूनराय का यवन सेना पर रात
 को धावा मारना । १४११
 १४ मुसलमान सेना के पहरुओं का शोर
 मचाना और सेना का सचेत होना । ”
 १५ हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं
 का युद्ध । १४१२
 १६ दोनों में तलवार का युद्ध होना । ”
 १७ पञ्जूनराय के पुत्रों का पराक्रम । १४१३
 १८ पञ्जूनराय का शहाबुद्दीन को पकड़-
 ना और किले में चला जाना । १४१४
 १९ यवन सेना का भागना । ”
 २० पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन
 को पुनः छोड़ देना । ”



पृथ्वीराज रासो ।

तीसरा भाग ।

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

(उन्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास
को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार
गज़नी में पहुंचा ।

कवित्त ॥ दिल्लीपति प्रथिराज । अरुनि आषेटक ^१षिल्लय ॥

साठ सहस्र असवार । जाइ लगा धर दिल्ली ॥

धूनि धरा पतिसाह । रहे पेसोर ^२सुथनाय ॥

सथ्य लिये सामंत । दिल्ली कैमास सु ^३जानय ॥

अगया सु रमय प्रथिराज बर । गज्जन वै धर धूसियै ॥

दूसरौ इंद्र दिल्ली बर । सुभर सरस ढिग सुभिभयै ॥ छं० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर गज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज
धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है ।

दूहा ॥ गई षवर भ्रम्मान की । उट्ट चढ़े असवार ॥

दिल्ली धर लिजै तषत । दिसि गज्जनै पुकार ॥ छं० ॥ २ ॥

प्रथीराज साजत पवंग । है नै नर भर भार ॥

दिल्लीपति आषेट चढ़ि । कुहकवान हथनारि ॥ छं० ॥ ३ ॥

हेरा करि पेसोर नृप । सहस्र सठ्ठि सुभ बाज ॥

सोन पंथ विच पंथ दोइ । गल ग्रज्जै अग्राज ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए.-षिल्लिय, दिल्लीय । (२) ए. क. को.-धरत्तिष (३) ए. क. को.-मत्तिष । (४) ए.-पंच ।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया ।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत । चले चारों चतुरन्नर ॥

लौय पवरि प्रथिराज । चले पच्छे गजजन धर ॥

किय सलाम जब दूत । तबहि तत्तार सु बुझिभय ॥

कहा करंत दिलैस । चढ़त गिरबर घर धुज्जिय ॥

संग सत्त षट् सामंत चलि । तीन पाव लष्यह सुरी ॥

अनि स्वर बौर नरवर सकल । उड़ी घेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥

आषेटक दिन रमय । संग खानं घन चौते ॥

नावक पावक बिपुल । जक्कि दिन जामह जीते ॥

सहस तुरी बघ्यह सु । संत मेघा कलि कंठिय ॥

सौहगोस पुच्छिय सु । लंब सिरपां सिर पुडिय ॥

जुरा रू वाज कूही गुहा । धानुकौ दारु धरा ॥

वहु काल भाल वदकं बिला । जम भय तव जित्तिय धरा ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा ।

रमै राज आषेट । सत्त एकल बल भंजै ॥

पंच पथ्य परिगाह । रंग अप्पन मन रंजै ॥

सहस एक बाजिच । स्वर किरनह संपेघै ॥

सुनि गोरी साहाव । दाह दिल महन बिसेघै ॥

जित्तौब जव प्रथिराज को । तब तसबी कर मंडिहौ ॥

टासंक सह नहह करौ । जुगति साह तब छंडिहौ ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरासान, रूम, हबश और बलख आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना ।

(१) क. को. ए.-सित्त ।

(२) मो. को. क.-पुच्छिय ।

(३) ए. क. को.-जु ।

(४) मो.-छंडिहौ ।

दूहा ॥ देस देस कगद फटे । पेसंगी पुरसान ॥

रोम हबस अरु बलक में । फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ॥ ८ ॥ ✓

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना
और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना ।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जंत । लष पंचह मिलि पघर ॥

कूच कूच परि घैर । गुरज धारी लष गघर ॥

कोस दहं दह कूच । आइ गिरवान सपत्तौ ॥

दौरि दूत दिल्लेस । जाम कर चय दिन वित्तौ ॥

मुक्काम कियौ प्रथिराज नृप । तहां षवरि कहि दूत सब ॥

गोरी नरिंद है नै सुभर । सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छं० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने
कूच किया और वह घघर नदी पहुंचा ।

चैत मास रवि तीज । सेत पघर कल चंदह ॥

भयौ सुदिन मध्यान । चळ्यौ प्रथिराज नरिंदह ॥

कटक सबर हिल्लोर । भार सेसह करि भगिय ॥

चढ़ि सामंत सकज्ज । नह सुर अमर जगिय ॥

गज रोर सोर बंधे घटा । सिलह बीज सिलकावलिय ॥

पण्पीह चौह सहनाइ सुर । नदि घघर मेलान दिय ॥ छं० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन । ✓

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह । पैसंगी पतिसाह ॥

पच्छाई बादल प्रवल । भग्गे राह विराह ॥ छं० ॥ ११ ॥

बरन बरन तहां देषिये ॥ घंटा रव गजसाज ॥

सन्नाहा सन्नाह रजि । पण्पर सण्पर साज ॥ छं० ॥ १२ ॥

भई हलोहल सेन सब । पान व्यूह बर घेत ॥

लष एक भर अंग में । छव धन्यौ सिर जैत ॥ छं० ॥ १३ ॥

हुअ टामंक सु दिसि बिदिसि । हुअ संनाह सनाह ॥

हुअ हलोहल सुभरन । दोज दिन इक राह ॥ छं० ॥ १४ ॥

सेना का वर्णन ।

चोटक ॥ हुअ सह सु सह नह भरं । घन घेरिक कीय सु फौज वरं ॥

लष लष मिले दल संमिलयं । नर भद्व बाहल संमिलयं ॥

छं० ॥ १५ ॥

सु अगें हथनारि अपार सजं । तिन देशत काइर दूरि भजं ॥

तिन पिठु हजार उमत्त चले । छह रिक्त ^१भरंत करी तिहले ॥

छं० ॥ १६ ॥

तिन पिठुह फौज गहब्बरयं । धरि गोरिय मुठु करं धरियं ॥

कमनेत अभूल सु लष लियं । तिन मध्य ततारह छच दियं ॥

छं० ॥ १७ ॥

लष दोय गुरज्ज स गषरियं । घुरसान दियं दल पषरियं ॥

बलकी उमराव सु सत्त सयं । निसुरत्तह लष हुकम्म भयं ॥

छं० ॥ १८ ॥

घुरसान तनं दल उप्पटयं । मनुं साइर सत्त उलटु भयं ॥

^२जल बानिय ^३पानिय अइ सरं । लोहानिय पानिय घेत घरं ॥

छं० ॥ १९ ॥

हवसी उजबक्क हमीर भरं । कलबानिय रुम्मिय अगग धरं ॥

सरबानि ऐराकि मुगल्ल कती । बहु जाति अनेक अनेक भती ॥

छं० ॥ २० ॥

मुसलमान सेना का व्यूहवद्ध होकर नदी पार करना ।

कवित्त ॥ फौज बंधि सुरतान । मुष अगगे तत्तारिय ॥

मधि नायक सुरतान । नील घुरसान सु भारिय ॥

मोती निसुरति घान । लाल हवसी कोलंजर ॥

पाचि पीठि रुस्तंम । पना बहु भांति अवर नर ॥

उत्तरिय नह गोरीस पहं । बज्जा दस दिसि बज्जिया ॥
मानों कि भह उलटी मही । साइर ^१अंबु गरज्जिया ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर

चामण्डराव को आगे किया ।

दूहा ॥ दिल्लीपति फौजह रची । दियौ जैत सिर छत्र ॥

चामंड रा अगौ भयौ । मनो सु गिरवर गत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की ।

कवित्त ॥ फौज रची सामंत । गरुड़व्यूहं रचि गढ़िय ॥

पंष भाग प्रथिराज । चंच चावंड सु गढ़िय ॥

गावरि अत्ताताइ । पांड गोइंद सु ठढ़िय ॥

पुच्छ कन्ध चौहान । पेट पम्मारह पढ़िय ॥

सुंडाल काल अगो धरे । ^२कढे दोइ कलहन्न किय ॥

चालंत बान गोरै प्रबल । मानहु अंधकि मार दिय ॥ छं० ॥ २३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरों

का कैमास को घेरना ।

तत्तारह उप्परह । चित्त चावंड चलायौ ॥

दुहूं फौज अगंगज । दुहूं भुज भार भलायौ ॥

मीर बान बरषंत । धार धारा हर लगौ ॥

बाही चामण्डराइ । भूमि तत्तारह भगौ ॥

उत्तरे मीर सै पंच दुइ । दाहिम्मै किन्नौ दहन ॥

पहिलै जु भुभुभु दिन पहिल कै । मच्यौ जुझ जानै महन ॥ छं० ॥ २४ ॥

तत्तार खां का घायल होना । मीरों की वीरता ।

भूमि प-यौ तत्तार । मारि कमनेत प्रहारै ॥

एक घाव दोइ टूक । परे धारन मुहु धारै ॥

‘पुर बजै पुरतार । चमकि चामंड चलायौ ॥
 भरै बथ्य सिर हथ्य । एक बहु लष्पन धायौ ॥
 जब परै बूंद तब बीर हुआ । सत्त घरी साहस धरै ॥
 तिनमा ^३कटक चिबिधी घड़ा । एक एक पग अनुसरै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का
 आगे बढ़ कर उसे बचाना ।

षान षान आषूंद । अठु सहसं बहु गष्वर ॥
 परिय पंति अवनैस । पारि बहु ^३अष्वर गष्वर ॥
 ‘हयौ नेज चामंड । बीर दो सहस लरै भर ॥
 हस्ति एक विन दंत । तमह तिन मथौ सहस कर ॥
 दाहिमराव मुरछयौ पयौ । दौयौ जैत महा बलिय ॥
 मानों कि अग जज्जर बही । कलि मभभे रिन बट कलिय ॥
 छं० ॥ २६ ॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की
 सेना में कहर मच गया ।

धपी ‘सेन सुरतान । ‘मुठि छुट्टी चावहिसि ॥
 मनु कपाट उधयौ । कूह फुट्टिय दिसि बिहिसि ॥
 मार मार मुष किन्न । लिन्न चावंड ‘उषारे ॥
 परे सेन सुरतान । जाम इक्कह परि धारे ॥
 गल बथ्य घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ । जानि सनेही भिंटयौ ॥
 चामंडराइ करि वर कहर । गोरी दल बल ‘कुट्टयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन ।

जैत राइ जडधार । लियौ कर दंत मुष कर ॥
 परे बज्र सिर धार । मनो सेना सिर उष्वर ॥

(१) ए.-पुर ।

(२) ए.-कमंड ।

(३) मो.-परिकर, क.-पष्वर ।

(४) क.-पयौ, ए.-भयौ ।

(५) मो.-मुठि ।

(६) मो.-तुठि ।

(७) ए.-उषारे ।

(८) ए.क.को.-कुट्टयौ ।

पुरसानी बंगाल । मनहु ^१डंडूर रमावै ॥

भरै पच जोगिनी । डक्क नारह बजावै ॥

अपहरा गीत गावत इला । तुंबर तंत बजावहीं ॥

सुरतान सेन दिल्लेस बर । ^२मग्ग मग्ग जस गावहीं ॥ छं० ॥ २८ ॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव

और खुरासान खां की तुमुल युद्ध हुआ ।

सिर धुनत पतिसाह । धाह सुनि सेना सथिय ॥

लुथिय लुथिय मुह धार । परे बथ्यन सों बथिय ॥

जम सों जम आहुरै । स्हर जुट्टै दोइ घुट्टै ॥

नई गंठि तन जोग । स्हर मुंडावलि घुट्टै ॥

पुरसान जैत अब्बूधनिय । धार धार मुह कट्टिया ॥

ऐसो न जुद्ध दिष्पौ सुन्यौ । दारुन मेछ दबट्टिया ॥ छं० ॥ २९ ॥

मनु दादस स्हरज्ज । हथ्य चंद्रमा महा सर ॥

जिन उप्पर षलमलै । ताहि धर गोरिय सुभर ॥

कटक कूह किलकार । सार परमार बजायौ ॥

भिरि भंज्यौ सुरतान । एक एकह मुष धायौ ॥

सिर सार धार बुब्ब्यौ प्रहर । तब दौज्यौ पज्जून भर ॥

निसुरत्ति पान लष्पह बली । लष्प एक पाइल सुभर ॥ छं० ॥ ३० ॥

घोर युद्ध हुआ । निसुरत खां मारा गया । दोपहर के

समय पृथ्वीराज की विजय हुई ।

भुजंगी ॥ मचे ^३कूह कूहं, बहै सार ^४सारं । चमकै ^५चमकै, करारं सु ^६धारं ॥

भभकै ^७भभकै, बहै रत्त धारं । सनकै ^८सनकै, बहै बान ^९भारं ॥

छं० ॥ ३१ ॥

हबकै ^{१०}हबकै, बहै सेल मेलं । हलकै ^{११}हलकै, मची ठेल ठेलं ॥

कुक्कै ^{१२}कूक फूटी, सुरत्तान ठानं । बकी जोग माया, सुरं अप्प थानं ॥

छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. क. को.-दंडूक ।

(२) ए.-बग्ग ।

(३) ए. क. को.-हूक हूकं ।

(४) ए. क. को.-धारं ।

(५) मो.-धारं ।

बहै चट्ट पट्टं, उघट्टं उलट्टं । कुलट्टा 'धरै' अण्ण, अण्णं उहट्टं ॥
 दडक्कं बजै सथ्य, मथ्यं सुट्टं । कडक्कं बजै सैन, सेना सुघट्टं ॥
 छं० ॥ ३३ ॥

बहै हथ्य परमार, सिरदार सारं । परे सेन गोरी, बहै रत्त 'धारं' ॥
 पन्थौ घान मिसुरत्ति, सेना सहित्तं । हुअौ खूर मध्यान, दिखे स जित्तं ॥
 छं० ॥ ३४ ॥

एक लाख कालंजरीं का धावा, कन्ह चौहान के आंख की
 पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना ।

कवित्त ॥ कालंजर इक्क लष्ष । सार सिंधुरह गुड़ावै ॥
 मार मार मुष चवै । सिंघ सिंघा मुष धावै ॥
 दौरि कन्ह नरनाह । पट्टी छुट्टी 'अंघिन' पर ॥
 हथ्य लाइ 'किरवान' । रुंड माला किन्निय हर ॥
 बिहु बाह लष्ष लोहै परिय । जानि करिब्वर दाह किय ॥
 उच्छारि पारि धरि उपरै । कलह कियौ कि उघान किय ॥
 छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ छुट्टी अंघि पट्टी, मनो उगि खूरं । गिरे काइरं, खूर बड्डे सनूरं ॥
 लियं हथ्य करि वार, भंजै कपारं । पियै जोगनी पच, कौयै डकारं ॥
 छं० ॥ ३६ ॥
 बहै अच्छरी हथ्य, अन्नेक सथ्यं । करं खूर संम्हालियै, घल्लि बथ्यं ॥
 करै कज्ज साई, समप्पै सुघट्टं । लियं कन्ह गोरी, तनं मारि थट्टं ॥
 छं० ॥ ३७ ॥

कालंजर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना । कन्ह
 चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना ।

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय । भगिय सेना पतिसाहिय ॥
 पंच फौज एकट्ट । कन्ह करवारि 'सम्हारिय' ॥

(१) ए.-धरा ।

(२) मो.-वारं ।

(३) ए.-अंघनि ।

(४) ए.-क. को.-करिवार ।

(५) क.-सम्माहिय ।

धर पारे बहु मीर । सथ्य जब सेना भगिय ॥

गर घत्ती कंमान । लियौ गोरीय उछंगिय ॥

उत्तरे मीर पच्छे फिरे । हाय हाय मुष हुंक्यौ ॥

पज्जून झेलि मुष मीर कौ । कन्ह लेइ गोरी ब्यौ ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना ।

कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना ।

जनु उद्यान हलाइ । पवन चलै ज्यौं बांधै ॥

त्यों पज्जून नरिंद । मीर जमदहूँ सांधै ॥

परे मीर सै सत्त । बिए रन छंडिव भज्जे ॥

चामर छत्र रषत्त । तषत लुट्टे ज्यौं सज्जे ॥

कन्ह नरिंद पतिसाह लै । गयौ थान अण्णन बलिय ॥

पंमार सिंघ लग्यौ सु पय । चाव भाव कौरति चलिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे

वहां किले में रखना ।

रहै कन्ह अजमेर । * गयौ चहुआन जैत लिय ॥

धरि अगोरी नरिंद । दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय ॥

गयौ अण्ण अजमेर । † लिए पतिसाह नरिंदह ॥

दिन किज्जै महिमान । पास ठहूँ रहै वंदह ॥

बैठारि तषत सिर छत्र दिय । सभा विराजे सु पहुंभर ॥

सिर फेरि घैर दिज्जै दुनौ । यों रष्यै पतिसाह दर ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और

लूट के माल की संख्या ।

एक लक्ष बाजिच । सहस तीनह मय मत्तह ॥

लक्ष एक तोषार । तेज ऐराकी तत्तह ॥

(१) ए. को.-है ।

* ए. क. को.-लिए पतिसाह नरिंद हिय ।

† ए. क. को.-तहां चहुआन जैत लिह ।

आरावा हथिनौ । सत्त सै सत्त सु भारिय ॥
 चामर छत्र रषत्त । साहि लिन्निय धर सारिय ॥
 सामंत सूर बहुविधि भरिग । पट्टे घाव सु बंधियै ॥
 रन जीत सोधि संभर धनौ । बज्जे अनत सु बज्जियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी
 बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय ।

रची सभा प्रथिराज । सूर सामंत बुलाए ॥
 गोयँद निद्धुर सलष । कन्ह पतिसाह पठाए ॥
 करौ दंड सिर छत्र । राम प्रोहित पंडीरह ॥
 रा पज्जून प्रसंग । राव हाहुलि हंमौरह ॥
 इत्तने मत्त मभभह मिले । हम मारै छोरै न अब ॥
 ह्वै न हास्य अबकें हमैं । फिर न आइहै इह सु कब ॥ छं० ॥ ४२ ॥

कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर
 इसे छोड़ दिया जाय ।

दिए देस घंधार । दिए पछिबानं सारं ॥
 कासमीर कबिलास । दिए घरटिला पहारं ॥
 गज्जन रष्यै देस । बियौ समपै प्रथिराजह ॥
 ना तरु छुट्टै नाहिं । कर हम उप्पर काजह ॥
 बोल्यौ कन्ह नरनाह सुनि । अबकैं मारै कोइ नह ॥
 पंजाब दियौ छुट्टै सु अब । यह हमीर दिज्जें हमहि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना
 को साथ दे कर शाह को घर भेज देना ।

तब बुल्यौ प्रथिराज । कहै काका त्यों किज्जिय ॥
 जेता रंजक होइ । तिता लादा भरि लिज्जिय ॥
 जग्य कियौ पंडवन । हेम काचौ उन आन्यौ ॥

त्यों लभ्यौ पतिसाहि । लख लोहा हम मान्यौ ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह को । लोहानौ सथ्यै दियौ ॥
असवार सहस सथ्ये चले । कर सिर कन्ह इतौ कियौ ॥४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना । शाह का
कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार
नजर दे कर घर जाना ।

करि जुहार तब कन्ह । गयौ अजमेर दुरगह ॥
तज्यौ कन्ह पतिसाह । बत्त सब जंपी अप्पह ॥
ह्वै पुसाल गजनेस । दर्ई इक लाल सहित मनि ॥
कन्ह लेइ पतिसाह । गयौ दिल्ली सु ततच्छन ॥
मनुहार करिय सामंत सब । तेग दर्ई दिल्ली बर ॥
दो अश्व करी दोइ देय करि । साहि चलायौ अप्प घर ॥
छं० ॥ ४५ ॥

सुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब
कभी आप से विग्रह न करूंगा ।

करि सलाम गजनेस । करिय नव निह दिल्ली सर ॥
तम रषियो हम प्रीति । बरष मन सत्तह केसर ॥
पेसंगी धर सीम । बीच पौरान कुरान ॥
जां तक्कौं तुम अबे । तबै तुम कड़ियौ प्रानं ॥
उत्तरौं अटक तौ मैं अवर । मुसलमान नाही धरौं ॥
तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत । हून अबै ऐसी करौं ॥४६॥
सुलतान के अटक पार पहुंचने पर उधर से

तत्तार खां का आकर मिलना ।

पहु चलयौ सुरतान । दियौ लोहानौ सथ्यै ॥
दूत चारि अनुसार । काल छुयौ सें हथ्यै ॥
गयौ बीस म्होलान । अटक उत्तरि इन पारं ॥

सोवन पथ मेलान । सहस सन्है असवारं ॥

निसुरति सुतन दरिया सुतन । आइ कियौ सल्लाम तहां ॥

आजान बाह महिमान किय । चल्थौ अप्पगज्जन रहां ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर
अटक उतर रास्ते में रोकना ।

रयसल हरौ नवट्ट । सहस अठारह सथ्ये ॥

हेरौ करि पतसाह । पुले लगा इन पथ्ये ॥

दूत चार अनुसार । कटक देष्यौ असवारह ॥

कह्यौ चरन सब सथ्य । सहस दोइ सेना सारह ॥

तिन बार बज्जि चंबाल बहु । सिलह सज्जि सिरदार सहु ॥

उत्त-यौ कटक छोरिय अटक । नहि हुअौ उगंत पहु ॥ छं० ॥ ४८ ॥

गाथा ॥ बज्जै पुठि चंबालं । हथिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥

जानि समुह उहालं । किय गजनेस हुकमयं मीरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप
रयसल का मुकाबला करना ।

कवित्त ॥ कह्यौ साह लोहान । कौन बज्जा बज्जाए ॥

दौरि दूत तिन बेंर । धनी पछिवानह धार ॥

कूच कूच पर कूच । कौन पछिवान धनी कहि ॥

तब जान्यौ रयसल । सेन आजान ब्यौ सह ॥

पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं । सहस डेढ़ असवार दिय ॥

बंधेव फौज लोहान बर । दुहूं फौज टामकं किय ॥ छं० ॥ ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा ।

अरुन किरन परसंत । आइ पहुंच्यौ रयसल ॥

बज्जै वान बिहंग । जानि जुट्टा दोइ मल्ल ॥

संमाही आजान । तेग मानहु हबि दिट्ठिय ॥

जानि सिपर मक्ति बीज । कंध रैसलह बुट्ठिय ॥

लोहान तनी बज्जै लहरि । कोउ हल्लै कोउ उत्तरै ॥
 परनाल रुधिर चल्लै प्रबल । एक घाव एकह मरै ॥ छं० ॥ ५१ ॥
 दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी । लोह बज्जौ लोहान ॥
 इक उपर इक इक तर । लुथ्ये लुथ्य समान ॥ छं० ॥ ५२ ॥
 रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय गजनी पहुँचना ।
 पयौ लुथ्य रयसल्ल तहं । दुँढि घेत लोहान ॥
 सुबर साह गोरी निभय । गयौ सु गजजन थान ॥ छं० ॥ ५३ ॥
 तातार खां खुरासान खां आदि मुसाहबों का सेना सहित
 सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना ।
 कवित्त ॥ तत्तारिय पुरसान । सुतन गोरी पय लगा ॥
 न्योछावर करि पैर । बहुत मनसा भय भग्ना ॥
 लघ्प एक असवार । मिल्यौ गोरी दल पघ्पर ॥
 लघ्प भये दरवेस । आइ पइ लग्गे गघ्पर ॥
 उद्यछाह भयौ गज्जन इला । गयौ मभिभू गोरी धनिय ॥
 दरवार भीर भीरन्न घन । मिलत आइ अप अप्पनिय ॥ छं० ॥ ५४ ॥
 दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास
 घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया ।
 हेरा दिय लोहान । करिय मनुहारि रोज दस ॥
 करिय सत्त आजान । तुरिय पंचास अप्प बस ॥
 इह दिन्नौ लोहान । बियौ भेज्यौ नृप राज ॥
 लाटे दाइ हजार । सत्त सै तोला साज ॥
 इक इक तुरी हथ्यौ सु इक । सामंतन दीनौ सबै ॥
 मुह करिय कित्ति अन्नेक बिधि । सुबर स्वर फेरिय जबै ॥ छं० ॥ ५५ ॥
 लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला । पृथ्वीराज ने
 एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों
 को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी ।

सीष दर्ई लोहान । चल्थौ दिल्लीय पंथानं ॥
 संग सहस असवार । अण्ण रिध वासव थानं ॥
 दिल्लीपति सामंत । कली छत्तीसह दण्णै ॥
 मिल्यौ बाह आजान । बत्त सुरतान सु अण्णै ॥
 इक इक्क तुरिय हथ्यी सु इक । सामंतन पठए धरै ॥
 सोबन्न रासि रंजक षहर । मुक्कलियै चिचंगपुरै ॥ छं० ॥ ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की
 भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया ।

गढ़ ^१चीतौड़ ^२दुरग । भट्ट पठयौ परिमानं ॥
 लादे सित्त सुरंग । सित्त लै ^३तुला प्रमानं ॥
 दोइ हथ्यी मय मत्त । सत्त हैबर कुल राकिय ॥
 छत्र लियौ पतिसाह । जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
 लै चंद चल्थौ चित्तोर गढ़ । जाइ समण्णौ रावरह ॥
 बहु दान दियौ रावर समर । चल्थौ भट्ट अण्णन घरह ॥ छं० ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी
 की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमो
 प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

(१) ए. क. को.-चित्रकोट । (२) ए. क. को.-दुरगा । (३) ए. क. को.-तोल, तोल्य ।



अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसवां समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना ।

दूहा ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयौ ^१कनवज्ज ॥

चढ़ते पंग सम्हौ मिल्यौ । सुबर बीर कमधज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥

करि षलषट सुरतान सौं । दल भगौ सु विहान ॥

अब करनाटी देस पर । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ २ ॥

यद्दव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना ।

करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेइया का

पृथ्वीराज को नज़र करके संधि करना ।

कवित्त ॥ चढ्यौ सुबर चहुआन । बीर क्रन्नाट देस पर ॥

मिलि जहव बर सेन । तारि कढ्यौ सु तुंग नर ॥

दग्घिन दछिन नरिंद । सबै प्रथिराज सु गाही ॥

तिन राजन इक पाच । पठय नाइक घर थाही ॥

बर बीर जुड कमधज्ज करि । भीर भगी बर बीर ^२अचि ॥

तिहि दिनां बीर पज्जून पर । षग मार बोहिथ्य ^३मचि ॥ छं० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना ।

दूहा ॥ लै आयौ नाइक सथ । करनाटी प्रथिराज ॥

जच तच एकठ भये । ^४सबै साज संमाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली

में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत

विद्वान केलहन नायक को सौंप देना ।

(१) ए.- कसवज्ज ।

(२) ए. क. को.-अगि ।

(३) ए. क. को.-मार्ग ।

(४) मो.-सब कमधजहि साज ।

कवित्त ॥ संवत इकतालीस । दिवस प्रथिराज राज भर ॥
 अति सामंत उभार । आइ अति भ्रम ठिलि धर ॥
 दिय थानक नाइक । नाम केलहन गुन दैयं ॥
 अति संगीत सु विद्य । कला संजुत सुनेयं ॥
 ता सथ्य चौय रतिरुव तन । बर चवइ चातुर सकल ॥
 दुव तीस सु लच्छित मति विमल । अति मति अगनित विद्यबल ॥
 छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा सुन कर पृथ्वीराज का
 उस के लिये कामातुर होना ।

बाधा ॥ संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं । अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
 कला सपूरन पूरन चंदं । पूरन हाटक बरन बिबंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
 बानी जेम बीन कल सारं । स्वर जनु पंचम मभभ गुँजारं ॥
 नष सिष रूप रूपगति उत्तं । सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
 छं० ॥ ७ ॥

दरसन ताहि अवर नन दिष्यै । बासन महल मंभ तन दिष्यै ॥
 सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि । जग्यौ काम नृपति उर अंदरि ॥
 ॥ छं० ॥ ८ ॥

अति सनमान सु नाइक दीनौ । बहुर प्रसंसन साधक कीनौ ॥ छं० ॥ ९ ॥
 पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन ।

दुहा ॥ संभ समय अंदर महल । किय सुराज ग्रह धाम ॥
 अप्य बयठौ राज तहँ । अनत सजगित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन ।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जगियं । सु धाम तेज तगियं ॥
 सजे सुभाल आसनं । अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

सु दीप साम सोभयं । सुगंध गंध ओभयं ॥
 कपूर पूर जंभरं । मृगज्ज बास अंगरं ॥ छं० ॥ १२ ॥
 सु सज्जि सिंघ आसनं । समोल रोहि वासनं ॥
 कनक छत्र दंडयं । सु रंग रंग मंडयं ॥ छं० ॥ १३ ॥
 अबीर 'जघ्न कर्दम' । सरोहि ग्रहे सदर्म ॥
 अभूत साध लोभयं । अबीर भूर ओभयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
 अयास धूम घोमरं । प्रसार वास ओमरं ॥
 प्रसून ब्रन्न वन्नयं । स भूषनं स अम्मयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
 घनं सु सार समरं । अभूत वास अम्मरं ॥
 भुअं कुसम्म केसरं । सुरं अभूत जे सुरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
 तहां सु राज आसनं । सरोहि सिंघ सासनं ॥
 सुपाय अंग रणियं । कला जु काम लणियं ॥ छं० ॥ १७ ॥
 प्रवीन भाव पायसं । विचित्र चित्र पासयं ॥
 भवन्ति कंति भूषनं । सुबुद्धियं विदूषनं ॥ छं० ॥ १८ ॥
 प्रसून 'विद्धि वासनं' । अभूत 'सिद्धि आसनं' ॥
 बरघ्न घोडसं समं । अदोस रूपयं 'रम' ॥ छं० ॥ १९ ॥
 कला विग्यान विद्धयं । सु पास भूप सिद्धयं ॥
 सिंगार सार सारयं । अभूषनं स धारयं ॥ छं० ॥ २० ॥
 ग्रहे विदून चामरं । सु विंभ राज सामरं ॥
 धरंत कवि पन्नयं । सु कंठ धान सन्नयं ॥ छं० ॥ २१ ॥
 सु घन्नसार पानयं । सुगंध विद्ध मानयं ॥
 करें सु 'द्रुष्यकं कर' । सु सध्वि 'अद्धि संमरं' ॥ छं० ॥ २२ ॥
 शृंगार ग्रहे सोमयं । अभूत दुत्ति ओमयं ॥
 समोभ धामयं सजं । सुबास वासवं लजं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम ।

(१) छ. ए.-दच्छ, जच्छ, जच्छ ।

(२) मो.-विद्ध ।

(३) मो.-मद्धि ।

(४) को. ए.-समं ।

(५) छ.-दर्प, ए.-दप्प ।

(६) मो.-अद्ध ।

कवित्त ॥ रञ्जि धाम अभिराम । राज हरि थान वयट्टौ ॥
 दिपत दीह सुभ लीह । तेज उम्भर तप जिट्टौ ॥
 बोलि चंद चंडीस । बोलि जइव रा जाम ॥
 निदुर बोलि कमधज्ज । अत्ति जामनि बल साम ॥
 बलिभद्र बोलि कूरंभ भर । लोहानौ आजानभुअ ॥
 बैठक बैठि आसन्न सजि । ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और
 पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा
 के विषय में पूछना ।

बोल ताम नाइक । सय्य सय्यह सब साजं ॥
 बोलि पाच कर्नाटि । बैठि गानं बर वाजं ॥
 नाटक भेद निबंध । बूझि राजन बर बत्तं ॥
 कवन कला कृत पाच । कहौ नाइक निज सत्तं ॥
 नाइक कहै प्रथिराज सुनि । एह पाच देख्यो सु पय ॥
 इह रूप रंग जीवन सु वय । कला मनोहर चिंति मय ॥ छं० ॥ २५ ॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेले जिस में
 निदुर राय प्रसन्न हों ।

पडरौ ॥ उच्चयौ ताम कविचंद बानि । नायक अहोमति मरम जानि ॥
 सो धरौ कला विचार साज । निदुरह बयट्टौ पास राज ॥ छं० ॥ २६ ॥
 नाटक विविध बुझै बिनान । विचार चार सुर तान गान ॥
 नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं ।
 नाइक जंपि हो चंद भट्ट । नप पास बयट्टौ को सुभट्ट ॥ छं० ॥ २७ ॥
 कविचंद का निदुरराय का इतिहास कहना ।
 उच्चयौ चंद नायक सरीस । कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
 ता अनुज बंध बरसिंघ देव । ता सुअन कमध निदुरह एव ॥ छं० ॥ २८ ॥

नायक कहै हय बत्त सच्च । आवन्न केम हुआ दिली तच्च ॥
 बरदाइ कहै नायक चित । आवन्न कित करन्नमित्त ॥ छं० ॥ २८ ॥
 जै सिंघ कियौ तहां उच्च काज । अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
 लघु बैस उभय बंधव सरूप । अत थान उभय पेलंत भूप ॥ ३० ॥
 आइयौ महल निददुर समेक । कहि कुमर राज सझौ सु एक ॥
 उच्चयौ ताम निददुर देव । कर कुमर हंम मिच्छंत सेव ॥ ३१ ॥
 जयचंद समुष निरषेत ताम । कल 'कलिय लग्ग चामठु धाम ॥
 करि सभा सु निददुर आइ ग्रह । सुष धाम काम बिलसंत देह ॥
 ॥ छं० ॥ ३२ ॥

निददुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना ।

कवित्त ॥ समय एक निददुर । कमंध आषेट सपत्तौ ॥
 बिधि कुरंग दुअ तीन । उभय एकल निज घत्तौ ॥
 आइ बग सारंग । सुवन सोवंत प्रधानह ॥
 करिय गोठि उच्चार । सथ्य संभरे सवानह ॥
 ता अग्न गोठि सारंग सजि । घन पकवान असान रस ॥
 ग्रिह गये वाग आगम सकल । लहयौ निददुर भेव तस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निददुर के रंग में भंग करना ।

मुरिख ॥ निददुर ताम 'गोठिलिय अप्पं । तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
 घन पकवान सरस गति सारं । रच्चे मंस विवह बिसवारं ॥ छं० ॥ ३४ ॥
 करि क्रीडा सो गोठि अहारे । 'चपतौ सथ्य सबै बिधि भारे ॥
 सुमनह द्राव सुमन सब सोहै । कासमीर चंदन सुर रोहै ॥ छं० ॥ ३५ ॥
 आहारे तंमोल 'सुगंधं । मादक आइ अग्नि जहां जगं ॥
 सुनौ अवन सारंग सुवत्तं । आयौ आतुर 'वग्न तुरत्तं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

(१) ए. क. को.-मल्लिय ।

(२) ए.-गोगिय ।

(३) मो.-नृप तौ ।

(४) मो.-सुरंगं ।

(५) मो.-बेगि ।

‘कठिन वाच निदुर्दुर सम बाचे । तरस्यौ निदुर्दुर ताम्रैत राचे ॥
 मयौ अग्र जैचंद सु रावं । लुट्टी बस्त गोठि मनि सावं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
 निदुर्दुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और
 जैचंद का सारंग का पक्ष करना ।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं । कलमलि कोप रोस सब अंगं ॥
 निसा महल निदुर्दुर सँपत्तौ । फेरे मुष जैचंद बिरत्तौ ॥ छं० ॥ ३८ ॥
 न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ । निदुर्दुर ताम्र अप्प ग्रह आयौ ॥
 सजि सु सथ्य जुगनिपुर आयौ । अति आदर करि पिथ्य बधायौ ॥
 ॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही
 नाट्य कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो ।

दुहा ॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन । धनि धनि बेंन उचार ॥
 लहै सुविद्या अर्थ गुन । जै जै अर्थ उचार ॥ छं० ॥ ४० ॥
 गाथा ॥ राजनीति गति रुखं । गुन संपूर चौस एकंगं ॥
 जे रंजे रज ध्यानं । सुनि कविराज सव्व संपूरं ॥ छं० ॥ ४१ ॥
 राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन ।

साठक ॥ विद्या विनय विवेक ^१वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा ॥
^२सुविचारो सु विचक्षणो रु सुमनं सौजन्य सौदर्यता ॥
^३भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभोगयं ॥
 मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला ॥ छं० ॥ ४२ ॥
 मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं ॥
^४उदायं उदार दाव उद्धवं एते गुना राजयं ॥

- (१) ए.-कनिक । (२) ए. क. को.-मार सलयं, विवेक विचारयं ।
 (३) ए. क. को.-विचारं ससु तप्य सौष सुमनं सौजन्य सौभाग्ययं ।
 (४) ए. क. को.-भाग्यं ।
 (५) ए.-जदायं ।

सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं ॥

सोयं 'नीति सनीत किति अतुलं प्राप्त' जयं 'जोरयं' ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ फुनि नाइक जंपै सु नमि । अहो चंद बरदाइ ॥

राग विनोदह चीसपट । कहौं सुनौ विधिसाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

* दंडमाली ॥ दरसन नाद विनोदयं । सुरबंध नृत्य समोदयं ॥

गीताद्य अधि नव वादयं । अभिलाष अर्थ पदादयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

'वक्रात जग्यपवीतयं । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं' ॥

पंडीत पालक तल्पयं । ते पदय तर्क विजल्पयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

प्रमान सरन प्रमोदयं । प्रातापयंच प्रमोदयं ॥

प्रारंभ परिछद संग्रहं । निग्राह पुष्टित तुष्टिहं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

प्रासंस प्रीति स प्रापयं । प्रातिग्र यासु प्रतिष्ठयं ॥

धीरज्ज धीर जुधं वरं । सो रज्जएव सतं नरं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ सुनि नायक राजन्न मति । जंपहि दिली नरेस ॥

पात्र प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना ।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥

पाछे नृत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन ।

भुजंगी ॥ तबै वोलियं अप्प नाइकअ गं । मुषं पाच आरोह उच्चार जगं ॥

धरै आप बीना सुरंसाज सारे । सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥

छं० ॥ ५१ ॥

धुनिं रूप रागं सुहानं उपाए । रचे चार राहं सुभा सुभभ भाए ॥

गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं । रचे मंडली राय आयास थानं ॥

छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-तीन ।

(२) ए.-को.-चोवरं ।

* ए. क. को. में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है ।

(३) क. ए.-वक्यत, वकमत ।

मनं सर्व मोहे अति राग रूपं । तनं लग्गए तार आरंग भूपं ॥
 तनं षेद रोमं च उच्छाह अंगं । वयं विस्रयं वेपथं मोद रंगं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
 दया दीन चित्तं अभिलाष जगं । गुनं रूप रागं जिते चित्त लग्गं ॥
 नपं सिष्प जग्यौ तनं मीनकेतं । चट्टौ मत्त बेली चितं पच हेतं ॥
 छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से
 मूल्य पूछना और नायक का कहना कि
 आपसे क्या मोल कहूं ।

तबै बोलि नाइक राजन्न तामं । कहा मोल पाचं कहौ द्रव्य नामं ॥
 कहै नाम नाइक पाचं सरीसं । कहा मोल पाचं नृपं जोग जीसं ॥
 छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर बेइया को
 महलों में रखना ।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं । ग्रिहं रग्घियं अप्प पाचं सुभासं ॥
 विसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्टे । कला काम क्त्यं निसा पाच तुट्टे ॥
 छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात
 दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना ।

दुहा ॥ काम कला तुट्टिय नृपति । सु ग्रह पवारी द्वार ॥
 तिन अवास दासौ सघन । अह निस रह रषवार ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी
 पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव
 संपूरणम् ॥ ३० ॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि
सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर
बैठना और कैमास का आकर राजा
के पास बैठना ।

कवित्त ॥ महल भयौ नृप प्रात । आइ सामंत खर भर ॥
ठट्टा दिसि ^१उच्चरिय । राय चामंड बीर बर ॥
बंधन वास जु राज । ^२कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावहिसि अरि नन्ह । सौम कहै नह आजं ॥
कैमास बोलि मंची तहां । मंच लाज जिहिं लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य के विषय में वार्तालाप
होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि
पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पड्वरी ॥ बैठे सु राज आरंभ गुभक्त । पड्वरी छंद वरनैति मभक्त ॥
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सइ सु जुड संग्राम श्रीर ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बंचाइ राज कगद सु ताम ॥
सामंत खर तपि तोन बंधि । आवत्त रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ॥ ३ ॥
दिम सुड राज चलियै सु आज । सम बैर बीर बंकान साज ॥
जैचंद सेन दुसह प्रमान । पुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ॥ ४ ॥

चालुक्य बौर गुज्जर नरेस । कित करै जुझ करनी विसेस ॥
 यल वटिय बौर मझिभय हुआव । रघुंति खर तिन मध्य आव ॥
 छं० ॥ ५ ॥

सब सबर अरौ चहुँ दिस नरिंद । तिन मध्य दन्द पृथिराज इन्द्र ॥
 सो वरन बौर उज्जेन ठाम । महि मंह काल सुभयान ताम ॥
 छं० ॥ ६ ॥

तिन वरन ठाम देवास तीय । संग्राम राज मंडन सु बीय ॥
 बंचौ सु राज कगद प्रमान । धर धनुह धार अर्जुन समान ॥
 छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन
 में कीर्ति ही सार है ।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल । सामंत खर तिन मध्य लाल ॥
 देवास धीय देवास व्याह । मंडौ सु राज संभरि उछाह ॥ छं० ॥ ८ ॥
 जैचंद करहु अम्पर निधान । कलि काल बत्त चलै प्रमान ॥
 सा पुरस जीवतं बिय प्रकार । संभरै एक कित्ती सँसार ॥ छं० ॥ ९ ॥
 जीरन सु जुग इह चलै बत्त । संमार सार गलहां निरत्त ॥
 इह कच्च पिंड 'संची' सु बत्त । जैहै सुजोग जोगाधि तत्त ॥ छं० ॥ १० ॥
 जैहै सु भान सब ग्रह प्रकार । दिष्टिये मान सो बिनसि सार ॥
 वापी विरष्य सर मढ प्रमान । मिलिहै सु सर्व भ्रगतिख जान ॥
 छं० ॥ ११ ॥

छंडो न बौर देवा सु मुष्य । रष्यौ सुमंत गलहां 'पुरुष्य' ॥ छं० ॥ १२ ॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच
 ने अपनी अस्थि देवताओं को दी । दुर्योधन
 ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए ।

कवित्त ॥ गलहां काज सु देव । अस्ति दधीच दीय वर ॥
 गलहां काज सरुष्य । बज किन्नौ सु इंद्र जुर ॥

गल्हां काज नरिंद । बंस दुरजोध मान रषि ॥
 गल्हां काज सु धात । मान अरुति भूमि लषि ॥
 रषिहै नरन गल्हां सुबर । गल्हां रषी नृपति उष ॥
 जयचंद बंध दल बल सकल । सबर 'साँइ किजै सरुष ॥ छं० ॥ १३ ॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना ।

दूहा ॥ इह 'परतग्या नरिंद मन । करै बनै प्रथिराज ॥
 सकल सूर सामंत ज्यौ । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ।

चोटक ॥ इति सामंत सूर प्रमान धरं । दरबार विराजत राज भरं ॥
 चढ़ि चच्चर चंद पुंडीर कियं । सोइ देह धरै फिरि आनंदियं ॥
 छं० ॥ १५ ॥

नृप लज्ज नृपत्तिय सारंग्य' । सभ पुज्जिन सामंत ता बरयं ॥
 अतताइय अंग उतंग भरं । सिव सेव कियै तन फेरि धरं ॥
 छं० ॥ १६ ॥

नर निहदुर एक नरिंद सम' । कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
 गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥
 छं० ॥ १७ ॥

छिति रघुन छिति पजून भरं । तिन पुत्र बली बलिभद्र नरं ॥
 परमार सलष अलष गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥
 छं० ॥ १८ ॥

कयमास सु मंचिय राज दरं । अरि अंग 'उछाहन बौर बरं ॥
 अचलेस उतंग नरिंद धरं । रन मभभ विराजत पंग भरं ॥
 छं० ॥ १९ ॥

चावंड नरिंद सु षग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
 बर लंगरिराइ उतंग षलं । बय देहिय जानि सुबाहु बलं ॥ छं० ॥ २० ॥

'इक रंग सु अंग करंत रनं । कर पाइ सु अंघय हृष्य तनं ॥
लरि लोह लुहानय कित्ति करं । अरि वाइव धूर ज्यों पत्त ँढरं ॥
छं० ॥ २१ ॥

भजि भौह चंदेल सु षेल षगें । धर धूसन भुंमिय जंपि जगं ॥
दिवराज सु बगारि बंध बियं । जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं ॥
छं० ॥ २२ ॥

उदि उद्दिग बाह पगार बली । हरि तेज ज्यों रोर फटंत षली ॥
नरनाह सु कन्ह का कित्ति करौं । भर भौषम भारथ सुद्धि धरौं ॥
छं० ॥ २३ ॥

भय भट्टिय भान जिहान जपै । तिहि नाम सुने अरि अंग कपै ॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं । तिन कंकन बंक बियं अमयं ॥
छं० ॥ २४ ॥

रज राम गुरं षग धम्म बली । जिन कित्ति दिसा दस बट्टि चली ॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं । जिन कंदल रुद्धि उठंत अमं ॥
छं० ॥ २५ ॥

कविचंद हकारि सु अग लियौ । भर भट्टिय भान भयंक बियौ ॥
रघुवंसिय राम सुरंग बली । कनकू जिन नाम नरिंद कली ॥
छं० ॥ २६ ॥

बर राम नरिंद नरिंद समं । तिहि कंदल उठि रुधं सु जमं ॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं । घरि हँ भर उठिज बूंद भरं ॥
छं० ॥ २७ ॥

भगवत्ति अराधन न्याय करै । रघुवंसिय किलह नरिंद बरै ॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाब धरं । ॥
छं० ॥ २८ ॥

जिन पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ । धर मंडव मंड चका बरत्यौ ॥
पांवार सलष सु पुच बली । नृप जैत सजैत कि कित्ति कली ॥
छं० ॥ २९ ॥

- (१) ए. क. को.-इक रंग सुरंग । (२) ए. क. को.-धरं । (३) क.-कंकानि ।
(४) ए.-मंडिय ।

सु चलै बर भाइ 'दुभाइ भर' । तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू नृप 'धावरयं' । जित तित्त नहीँ मन सावरयं ॥

छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन 'तूँअर नेत चिनेत बरं' । परिहार पहार सु नाम धरं ॥

छं० ॥ ३१ ॥

सज्यौ जय सह पुँडौर बली । जिनके भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु घीचिय षग बली । चमरालिय कित्ति नयंद हली ॥

छं० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरिंद सु अलहनयं । भजि भारथ कुंभज किरहनयं ॥
सारंग सुरंगिय कित्ति बली । बर चालुक चार नक्षत्र हली ॥

छं० ॥ ३३ ॥

परि पारथ क्रन्न कुँवार नृपं । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग पंडिय छिचिय छित्त रनं । सब सामंत सूर समोह तनं ॥

छं० ॥ ३४ ॥

हहकारि उमै नृप पास लिए । समतप्ति सु मंचिय मंच बिए ॥
जित जोध विरोधत राज करै । तिन मैं मुष भारथ नाउ सरै ॥

छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमी । तिनके गुन चंपि नरिंद भमी ॥
सिर अंतय आतप छत्र धर्यौ । कमकाबलि मंडिय मंडि हय्यौ ॥

छं० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोदय राज चली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं । सुक सकय बक्रय बुद्धि नरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनोँ छवि मेरय भान फिरं ॥
बर सेंगर सूर कल्यान नमं । जिहि भारथ कोँ प्रथिराज समं ॥

छं० ॥ ३८ ॥

(१) मो.-सुभाइ ।

(२) मो.-धीवरयं ।

(३) ए. कृ. को.-तूँअर ।

(४) ए. कृ. को.-छत्रिय ।

जयचंद जँघारय नाहरयं । नृप राज सु रष्यन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर बली । प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥

छं० ॥ ३६ ॥

कठ हेरिय सारंग सूर बली । प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुअ राव हमीर बरं । छिति पत्ति कंगूरह सूर गुरं ॥

छं० ॥ ४० ॥

नर रूप नराइन राज भरं । भर भारथ जुग्गिनि पाच करं ।
गुरराज सु कन्हय जम्म जिसौ । मग बेद चलंतह ब्रह्म इसौ ॥

छं० ॥ ४१ ॥

गुर ग्यारह सै सकसैन बरं । प्रथिराज चढ़ंतह वाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं । बजि बंब कि अंबर घुम्भरयं ॥

छं० ॥ ४२ ॥

अननंकत षग फरी धरयं । भजि डंक ज्यौं डकत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं । जनु छुट्टि जलह विहह भ्रमं ॥

छं० ॥ ४३ ॥

चलि मल्लन हल्ल ज्यौं रोस रसै । जमजूथ मनो दल दंद ग्रसे ॥
हयनारि सुधारि के कंक षगी । धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥

छं० ॥ ४४ ॥

कमनैत बनैत कि नेत धरं । मँडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं । सु मनौ घन फुट्टिय अग्नि भरं ॥

छं० ॥ ४५ ॥

सब सेन सभा इह व्रत्र कहै । बरषा रुव संत दै ब्रह्म लहै ॥

छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना ।

दूहा ॥ जो बुलै सामंत सथ । तौ 'चल्लै' प्रथिराज ॥

करि उप्पर जैचंद कौ । अरि बंधौ सिरताज ॥ छं० ॥ ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना ।

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत । स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
 ज्यौ मंचह गुन ग्यान । धीय मानंत तंत लिय ॥
 ज्यों सु भ्रम उबरत्त । बीर चढ़ौ परिमानं ॥
 ज्यों गुरु बलहुअ विदुष । तत्त सोई करजानं ॥
 सा भ्रम चिया अग्या नृपति । मान मोह जानै न अंग ॥
 सामंत सूर प्रथिराज सम । सबल बीर चलेत संग ॥ छं० ॥ ४८ ॥
 जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ बल । गिनी न तिन गति काज ॥
 तिन उप्पर जैचंद कौ । सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥
 कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति
 सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ।
 चोटक ॥ सीइ सज्जिय सूर नरिंद बलं । छिति धारन को छिति छत्र कलं ॥
 मति मंच बरषय सूर बरं । धर पर्वत ज्यौं भर कन्ह करं ॥
 छं० ॥ ५० ॥
 आवत्त अहीर करै बलयं । सुरष्ठी गिर एक हरी छलयं ॥
 सु करै बलबीय आवत्त भरं । नृप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥
 छं० ॥ ५१ ॥
 हरसिंघ महाबल बंधु बियौ । बरसिंघ बली अरि छत्र लियौ ॥
 बर जइव जाम जुवान नरं । जिन कंधय ठिल्लिय राज गुरं ॥
 छं० ॥ ५२ ॥
 नर नाहर टांक नरिंद नमं । तिहि कंठ अरी धर भ्रम तमं ॥
 पंचम पवार सु पुंज बरं । मद मोष बिछुटिय काल भरं ॥
 छं० ॥ ५३ ॥
 परषत्त सु पल्हन अल्हनयं । भुज रषिय भारथ ठिल्लनयं ॥
 बर तूंअर रावति बान बली । जिन कित्ति कलाधर भ्रम छली ॥
 छं० ॥ ५४ ॥

बर बीर काँठी पुरसान 'रन' । हथ चीय अहुठपती सुभनं ॥
 काँठीर कलंकृत जैत बली । जिहि ओटत जंगल देस भली ॥छं०॥५५॥
 नृप रूप नरिंदति वाहनयं । पुरसान दलंषिति सा हनयं ॥
 जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं । पित की पित कंध परै न धरं ॥

छं० ॥ ५६ ॥

जनएस गुरेस सबंध बली । जिहि निददुर उप्पर पंष पुली ॥
 परसंग पवित्र पवित्र छती । पुरसान दलं जिन जुद्ध मती ॥

छं० ॥ ५७ ॥

अवनीस उमाह तुरंग 'तुर' । जिहि बंधन वास उगाहि धरं ॥
 जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं । कयमासय उप्पर कीय घनं ॥छं०॥५८॥
 महनंग महा मुर नैन समं । तिन राज सु रमिषय जित्ति क्रमं ॥
 बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी । सु मनो कल जोति सरौर बढी ॥

छं० ॥ ५९ ॥

सभ सोहत सित्त रु पंच इकं । जिन जानत 'मोद' मयं करिकं ॥
 कवि नामति जित्तिय जानि तिनं । तिनकी विरदावलि जंपि फुनं ॥

छं० ॥ ६० ॥

सत में षट राजत राज समं । तिनके जुव नाम कहोति क्रमं ॥

छं० ॥ ६१ ॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में
 सब से अधिक मान्य थे ।

कवित्त ॥ निददुर स्वर नरिंद । कन्ह चहुआन सपूरं ॥
 जिपड़ जैत जैसिंघ । सलष पावारति स्वरं ॥
 जामदेव जइव जुवान । भारथ्य पत्ति सिर ॥
 बर रघुवंसी राम । द्रग महिं कौन तास बर ॥
 बर वीर्य रक्त 'पच्छै' सुनिय । रुधिर बूंद कंदल परहि ॥
 मधि मझि मुहूरत इक बर । अरि बर गन रुंधहि भिरहि ॥छं०॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं ।

(२) मो.-हली ।

(३) मो.-सुरं ।

(४) ए. कृ. को.-मोह ।

(५) ए. कृ. को.-परै ।

उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन ।

सौ सामंत प्रमान । 'उग्गि अंकूर बीर रस ॥
 सद्धि भल्ली नकपत्त । अंग लग्गे सुभंत तस ॥
 'राजस तम सातुक्क । साघ अग्गै अधिकारिय ॥
 जय्य कय्य आरुहिय । रत्ति ढिल्लीपति धारिय ॥
 जंगलू देस जंगल न्वपति । जग लेवै वर सूर षट ॥
 घुरसान घान उप्पर चढ़िय । वर बीर रस बीर पट ॥ छं० ॥ ६३ ॥

सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना ।

अनल दंग अरि लग्गि । उग्गि अगिवान बीर रस ॥
 सामंता सतभाव । पंग उप्पर कीजै कसं ॥
 पंच घटी सौ कोस । राज अग्गं ढिल्ली तँह ॥
 साम दान अरु भेद । दंड निरनय^३साधौ जँह ॥
 मन बच क्रम कह कह कल्यौ । अलप न सुर सद्दय सुघट ॥
 दुजराज संधि गुरराज कौ । सद्धि मल्लरत चट्टिपट ॥ छं० ॥ ६४ ॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था ।

चोटक ॥ प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतिबिंबं नृपं । ससि राज इकं प्रति व्यंब पथं ॥
 प्रतिव्यंबह मभक्त इकंत उभै । चहुआनरु सामंत सूर सुभै ॥
 छं० ॥ ६५ ॥

दिस राकय अर्कय थान बियौ । तम भंजित तेज सु राज लियौ ॥
 सोइ लच्छि हयगय मंत पुली । रवि कौ किरनावलि तेज डुली ॥
 छं० ॥ ६६ ॥

पर पष्पर स्याह तुरंग रनं । सु मनो घन सोभत नैर तनं ॥
 सु विचें विच राजत राज रती । सु मनो प्रतिबिंब किदेव किती ॥
 छं० ॥ ६७ ॥

(१) ए. क. को.-“रौद्र भयानक रस” ।

(२) मो.-राजत ।

(३) मो.-साधै ।

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा ।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक्क मुष । न्प सेवक अरु इष्ट ॥

एक मंच एकह बुले । वियौ न जंपै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके
सब का अपने अपने घर जाना ।

तिते स्हर तिहि रत्ति बर । ग्रहे सपत्ते बीर ॥

पंचमि बर बैसाष धुर । लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना ।

अरिस्त ॥ अण्य अण्य गय ग्रहे सस्हरं । मरन महरत मरन न पूरं ॥

चढ़े बीर चावहिसि रंगं । मनौ 'षलह लिय मेघ असंगं ॥ छं० ॥ ७० ॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना ।

दूहा ॥ मेघ पंति वहल विषम । बल दंतिय सजि स्हर ॥

चढ़ि जिहाज पर दिष्पियै । धर नहिं परै करूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

धरनौधर तिय गुननि बर । लिय कारन परिमान ॥

स्हर उगै सत पच ज्यौ । ज्यौं भद्व बल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के
मेघों से उपमा वर्णन ।

चोटक ॥ सुअं बर बीर सु चोटक छंद । छिती छिति मत्त हयगय इंद ॥

रनं किय बीर नफौर रवह । ढलकिय ढाल सु ढिल्लिय भद्व ॥ छं० ॥ ७३ ॥

षनंकिय संकर अंदुन अंद । जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥

छिती छितिपूर हयगय भार । दिसौ दिसि दिष्पहि ज्यौं जल धार ॥

छं० ॥ ७४ ॥

ढरै दिगपाल सु अठ्ठय मेर । भये भयभीत भयानक मेर ॥

सुनै स्तुति छचिय सह निसान । दिसा पुरसान सु बढ्ढय पान ॥

छं० ॥ ७५ ॥

मंहे मय मत्त 'गहम्महराज । उठै बर अंकुर मुच्छ विराज ॥
कहै कविचंद सु उप्पम ताहि । मनो सुर लगिय चंद कलाहि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

'अपे प्रथिराज समप्पय दाज । तिनें दिधि पंतिय प्रब्वत लाज ॥
दुअं दुअं बंधि रकेवन जोर । चढ़े बर छिचिय सूर भकोर ॥
छं० ॥ ७७ ॥

हयदल पंति सुभंतिय ठांनि । मनो बगपंति घनी घट बांनि ॥
मयं मय रुद्र सु रुद्रय सार । भयौ जलु अंत प्रलै दुति वार ॥ छं० ॥ ७८ ॥
डहडुह बज्जय डकय मात । डलै तिन बीर गिरव्वर गात ॥
सु दिप्पन वांस फुरकय नैन । चढ्यौ जलु बीर परब्वत बैन ॥ छं० ॥ ७९ ॥
इसे दोउ बीर विराजत रिंघ । गुफा इक मभ्भ मनो दुअ सिंघ ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर । कहै कविचंद सु उप्पम पूर ॥
छं० ॥ ८० ॥

कहै करुना रस कंतहि चीर । उद्यौ तहां जित्त भयानक बीर ॥
लिषी लिष चिचिय दंपति बैन । मनो पलटै दिन चाचिग नैन ॥
छं० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान । किधो चकई सुपमुकय मान ॥
भयौ मन बीरन बीर प्रमान । भयौ करुना रस तीय प्रमान ॥ छं० ॥ ८२ ॥
दुहुं दिसि चित्त अचित्त अलोल । मनो दुअ पास हलंत हिडोल ॥
दोउ मभ्भ रक्खय सूर सनूर । भजै करुना रस काइर पूर ॥ छं० ॥ ८३ ॥
मिले न्निप आइ सु ढिल्लिय यान । कहै कविचंद बधान बषान ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन ।

दूहा ॥ स्वामि भ्रम्म सों 'सुद्ध मन । ज्यौं 'बांबी दिसि 'सण्ण ॥
मग विषांन ज्यो अरिन बर । जगि बीरा रस जण्ण ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ।

- (१) मो.-गहम्मग । (२) क. को.-अपे । (३) ए. क. को.-जुद्ध ।
(४) को.-बाबी । (५) ए. क. को.-सर्प ।

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु वीर । जग्गि चयनेत अग्गि सिव ॥

कै मचकुंद प्रमान । गुफा बारुन सु दैत्य लिव ॥

कै 'जग्यौ भसमास । दैत्य भग्गा गोरीसं ॥

इसे स्वर सामंत । वीर चावहिसि दीसं ॥

दीनी न नृपति किन निरति बर । किहु न सुनी जैचंद क्रम ॥

बग्गं उपारि धार बलिय । अभिलाषह भारथ्य अम ॥ छं० ॥ ८६ ॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलाषह अम गर्व । भयौ किल किंचित स्वरं ॥

ज्यौं नल मति दमयंत । सेन सज्जौ रन पूरं ॥

भवर सह सम सुमन । प्रेम रस छुटिय जंगं ॥

सुबर राज चहुआन । करन उप्पर बर पंगं ॥

माधुरत मधुर बानी तजौ । रजिय स्वर रंजित सुभर ॥

छिति मत्त 'छिती छिचिय 'छितिग । दिपति दीप दिवलोका धर ॥

छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन ।

मोतीदाम ॥ दंसं दिसि पूरग 'मत्तय भार । चळ्यौ जनु इंद्र धनुषय धार ॥

तुरंगन तुंग हरषय ईस । परक्किय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८ ॥

छईमित छोहय शंकर हथ्य । कहै कविचंद सु ओपम कथ्य ॥

गए गजनेस सुसथ्यय वीर । रहै लागि भौरं तिनै लागि नीर ॥

छं० ॥ ८९ ॥

मनों कुत कुंतय बारय पुल्लि । गए मनु आरद शंकर भुल्लि ॥

करुना रस केलि क्रमीनह वीर । नच्यौ अदबुह स रुद्र डकीर ॥

छं० ॥ ९० ॥

इकं इक रस सु संतिय स्वर । दिषे मुष मत्त महा मति नूर ॥

सुलतानरु हिंदुअ बैर प्रमान । सुआदय जुद्ध निदान निदान ॥

छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. क. को.-जग्या ।

(२) ए. क. को.-छित्त ।

(३) मो.-छिपग ।

(१) ए. क. को.-मध्यय ।

दया बर हीन सगप्पन नथ्य । ॥

उमा कृत काज प्रजापति दच्छि । तज्यौ नन मात उरगिय लच्छि ॥
छं० ॥ ६२ ॥

षिन्ने सिर ईस पटक्किय जट्ट । भयौ तहां जन्म सु बीरय भट्ट ॥
भिरौ भिरि नंदिय दंद प्रकार । पछै दछि दच्छिय दग्धि डचार ॥
छं० ॥ ६३ ॥

इतं मिति मंत सु कंतिय राज । भयौ बर बीर भयानक साज ॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ । बज्यौ रनतूर रवहय एछ ॥
छं० ॥ ६४ ॥

मल्ली जनु जंगम जो गवरीस । दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥
तज्यौ जहां मान लगौ पिय कंध । नयौ रस संत सु मंतिय संध ॥
छं० ॥ ६५ ॥

सु जाति जरा नृप हक्कि प्रमान । चज्यौ तिन बेर बली चहुआन ॥
छं० ॥ ६६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना ।

कवित्त ॥ चाहुआन बर बलिय । भार भारथ रस भिन्नौ ॥
मधुर सुधर सिंधुरस । अंग चावहिसि छिन्नौ ॥
सुबर सेन सामंत । सुबर बल बीर निनारे ॥
मभ मभझह आरुत । देव जनु जुड हकारे ॥
कुसमिस्त जुड देवह करन । रथ सुरत्थ हय हयति नर ॥
सामंत खर पुज्जै नहीं । वर कंदल 'उठ्ठैति धर ॥ छं० ॥ ६७ ॥

सामंतों की वीरता का वर्णन ।

उरग विंद रवि उठै । सौस हक्कै धर नंचै ॥
देवासुर संग्राम । देव पूजा देवंचै ॥
इंद्र जुड तारक । सोइ तत्तह अधिकारी ॥
पंच पंच पंडव सु । भौम दुर्जोधन भारौ ॥

गज मंत दंत कट्टै सु भूत । दैवत जुध सामंत रज ॥
 उहयो जुझ आहत मिति । नहिन मेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥६८॥
 युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित

निहदुदर का वीर-मत वर्णन ।

मिले सूर सामंत । मंत सज्जिय निहदुदर बर ॥
 कहां सु प्रान संग्रहै । पंच किहि जाइ मिलै धर ॥
 कोन क्रम संग्रहै । क्रम को करै सु देहं ॥
 कोन जीव संग्रहै । कोन निमवै सु छेहं ॥
 जैचंद आनि सुरतान बर । अधर राहु लग्यो अवर ॥
 पिब मत्ति दान दिय विप्र बर । रहसि राह लग्यो सु धर ॥
 छं० ॥ ६९ ॥

कह निहदुदर रठौर । सुनहु सामंत प्रकारं ॥
 कहौ देव कौ भ्रम । कित्ति संग्रहौ सु सारं ॥
 बारि बूढ़ बुदबुद । हथ्य वारौ सु आव इत ॥
 ज्यों बहलवै छांहि । घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
 इत्तनिय देह की गत्ति वर । तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
 मस्सान पुरान रु काम के । अंत चित्त सदगत्ति धर ॥छं०॥१००॥
 अंत मत्ति सो गत्ति । अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
 पुब्र भ्रम संग्रहै । पुब्र गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
 दैव भाव संग्रहै । काल केवल गुन वत्तिय ॥
 सिंचिये वेलि जंजं बधै । तंतं बुद्धि पुरान बर ॥
 निधघात घात पत्तिय सु वर । सुहत काल निहारि सु नर ॥छं०॥१०१॥
 स्वामि निंद जिनि सुनौ । स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
 अह निशि पंछौ जरन । भीर संकरै निवासौ ॥
 तब बुल्यौ मदनंग । छंडि इह जंच सखगह ॥
 अस्ति काज दहीचि । दिर सुरपत्त मत्त बहु ॥
 सुरपत्ति मत्त किनौ सु बर । निबर अंग को अंग मय ॥
 जैचंद भूमि उबैलि कै । चढ़हु भूमि घर सुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

गाथा ॥ के के न गया गुर ग्रहं । के के न काल संग्रहे हंतं ॥
 मंची जा प्रथिराजं । रषे जा बीर सो सखं ॥ छं० ॥ १०३ ॥
 साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य सा सुंदरी ॥
 'ता भग्ना मन खूर काइर बरं, 'किल किंचि किंचित रसै ॥
 अभिलाषं छिति गर्व तारुन बिधे, संसार सहकारयं ॥
 वारं जा पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा । तिनै धावतैं होइ मारुत पंगा ।
 भूमै भुंम अगै सुमं तीन संधै । मनो ब्रह्म विधि गंठि लै बाइ बंधै ॥
 छं० ॥ १०५ ॥
 पुजै पंथ अंधी मनं घीन धावै । तिनं उप्पमा कौन कविचंद लावै ॥
 किधौ कैसपन्न चलै चित्त भारी । किधौ चकरी हथ्य आवत तारी ॥
 छं० ॥ १०६ ॥
 किधौ वाय छुटै नहीं चाइ पावै । मगराज कैसै उपमाति लावै ॥
 अगंपाइ दीसे मुषं मेह कारै । मनो दिव्य वानी पढ़ै कव्वि भारै ॥
 छं० ॥ १०७ ॥
 धरे पाइ बाजी हृदंतं निभारै । मनो तार सौं तार बज्जै हकारै ॥
 तिनं दूरि तैं अंग ओपम ऐसे । मनो तार छुटै अकासं सु जैसे ॥
 छं० ॥ १०८ ॥
 इसे बाजि सज्जे समप्पेति राजं । दिषै खूर सामंत हथ्ये सुपाजं ॥
 छं० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

दूहा ॥ बाज राज नृप राज दिय । बिलसि विधान विधान ॥
 तिन उप्पम कविचंद कहि । का दिज्जै धपवान ॥ छं० ॥ ११० ॥

(१) मो.-ना ।

(२) ए. छ. को.-कल ।

(३) ए. छ. को.-दीसंत ।

(४) ए.-गज ।

घोड़ो की शोभा वर्णन ।

रसावला ॥ धपै बान भारै, हकारे निनारै । दुरै अण्य छाया, तते अग्नि ताया ॥

छं० ॥ १११ ॥

धवै 'अंठ भारी, मुकोटं निनारी । बरं नैन ऐसैं, हरी देव जैसें ॥

छं० ॥ ११२ ॥

महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा । उरं पुठु भारी, 'सु मासं निनारी ॥

छं० ॥ ११३ ॥

तुला जानि घंभं, पला जानि अंभं । नघं डंड इद्धं, मनो डंड सिद्धं ॥

छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं वीर दुल्लै, कवी कित्ति पुल्लै । मनो वाय कांडं, परी मभभ होडां ॥

छं० ॥ ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं । अवत्तें निनारे, मनो स्वामि सारे ॥

छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिख वाज राजी । सु दै दै रकेबं, चढ़े वीर 'वेबं ॥

सुरतान पासं, चढ़्यौ वीर भासं । छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना । इष्टपना बिन राज ॥

धन्नि राज प्रथिराज कौ । घग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ।

कवित्त ॥ षल गोरी सुरतान । जाइ रुंध्या रन अगौ ॥

इय गय रथ नर सज्जि । वीर पावस घट जगौ ॥

महन रंभ आरंभ । रत्त अरुनोदय सारिय ॥

चाहुआन सुरतान । वीर जैपत्त करारिय ॥

डमरू डहकि जुगिनि हसै । जिम जिम बंबर धज लसै ॥

सामंत खर चहुआन सौं । वीर बिदुरि सखइ कसै ॥ छं० ॥ ११९ ॥

राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना ।

मेछ मसूरति सत्ति । मत्ति कौनौ रत भारी ॥
 वीरा रस विद्धुरिय । लोह लग्गौ अधिकारी ॥
 छित्ति मित्ति छिति सोभ । अंघि आवै न अंघि षिन ॥
 ज्या नहव वन दिष्ट । चंपि चूवंत मंत घन ॥
 रन हरषि वरषिय मुक्ति जिहि । धग्गि लोह कोहां करास ॥
 चावंडराइ दाहर तनौ । न्वप अग्या विन अग्र धसि ॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस
 आगे बढ़ कर तत्तार षां खुरसान षां पर
 आक्रमण करना ।

रा चावंड जैतसी । लोह आजानबाह बर ॥
 रषे रन सुरतान । 'मत्त लग्गे सुबीर भर ॥
 पंच कोस न्वप छंडि । आप रुंध्या सुरतानं ॥
 वज्र घाट वज्जीय । आइ लग्गा सु विहानं ॥
 छुट्टा कि सिंध पल काज वर । उरसि लोह लग्गा लरन ॥
 तत्तार षान पुरसानपति । अप्प मसूरति मरन मन ॥छं०॥१२१॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुस्लिमानों का कमान
 पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध
 करने को प्रस्तुत होना ।

भुजंगी ॥ पुरासान षानं सु तत्तार बीरं । मनौ वज्र देषे सु वज्रं सरौरं ॥
 महा बाहु बज्जी कढ़े बज्र हथ्ये । लगे अंग अंगं निरथ्ये निरथ्ये ॥
 छं० ॥ १२२ ॥
 छुलिक्का सु बानं कमानेन साही । इसे खूर बेगं षलं लै न्विबाही ॥
 उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे । मनौ देषियै बीर रत्तप्रकारे ॥
 छं० ॥ १२३ ॥

उरं काल काली जम दहु कहुी । किधौ दंढ जम ददहु जम कर विडहुी ॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती । परें रंग चंगं छके जानि गत्ती ॥

छं० ॥ १२४ ॥

दुबं हिंदु मेच्छं तसब्बीति नंधी । सरै सट्टि हज्जार आवत लब्धी ॥
तिनें हथ्य हथ्यं मुकत्ती प्रमानं । मनो देषि देवंत देवाधि थानं ॥

छं० ॥ १२५ ॥

विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे । भए अंग अंगं तही तथ्य सारे ॥
नचै कंध बंधं कबंधं दुरंगी । मनो बीर आवत भारथ्य रंगी ॥

छं० ॥ १२६ ॥

इतौ जुड करि बीर भए दै निनारे । घुमै सार घुमै मनो मत्तवारे ॥

छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा
करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन
का राह छेकना ।

* दूहा ॥ चल्थौ राज सब सेन सजि । दिसि उज्जैनिय रंग ॥

आइ साहि जग हजूरन । लथै सहायक पंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥

गही गैल देवास की । गहन उपज्ज्यौ मिच्छ ॥

नर चित्तन इच्छै कछू । ईसर औरै इच्छ ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है ।

कवित्त ॥ नर करनी कछु और । करै करता कछु औरै ॥

नर चिंतन कर ईस । जिय सु नर औरै दौरै ॥

रचे रचन नर कोटि । जोरि जम पाइ बस्त सह ॥

छिनक मध्य हर हरै । केल किर तप्प क्रम इह ॥

प्रथिराज गमन देवास दिसि । व्याह विनोद सु मंडि जिय ॥

अनचित्ति जगि गज्जन बलिय । आनि उतंग सु कंक किय ॥

छं० ॥ १३० ॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है ।

पृथ्वीराज का राजा बली सेपटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन ।

ज्यों बावन बलि पास । आनि अनचिंत्य छलन किय ॥
 उन धर ले उन 'दीन । 'इन सु सुर बंधि छंडि जिय ॥
 दसों दिसा दल उमड़ि । घुमड़ि घनघोर आइ जनु ॥
 मौर मसंद ससंद । बान बहु बूढ़ बरषि घन ॥
 दोउ दीन दंद दनु देव सम । भ्रम लग्गे लग्गे लरन ॥
 प्रलैकाल हाल पिण्डिय निजरि । मनो मित्र वृत्ती करन ॥

छं० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरंभ होना ।

रसावला ॥ कोह लग्गे षलं, सार उड्डै पलं । अंत तुट्टै रुलं, पग बेली तुलं ॥

छं० ॥ १३२ ॥

नैन रत्ते भलं, जुट्टि जाल षलं । मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं ॥

छं० ॥ १३३ ॥

रुंड नचै दलं, मुंड वक्कै वलं । गिडि सिद्धी कलं, बज्जि कोलाहलं ॥

छं० ॥ १३४ ॥

छिंछ उड्डै ललं, जानि तिंदू अलं । हथ्य तुट्टै नलं, वृष्ण साषा ढलं ॥

छं० ॥ १३५ ॥

पंष पंषी बलं, ईस आसावरं । माल सोमै गरं, रुडि बुंदै भरं ॥

छं० ॥ १३६ ॥

जानि नगं परं, चंडि पत्रं भरं । मंति डक्कं डरं, भूत नचै घरं ॥

छं० ॥ १३७ ॥

उभयं चिक्करं, बक्कि नैरु ररं । कंपि स्यारं नरं, स्हर बड्डै बरं ॥

छं० ॥ १३८ ॥

भभर भारै रुरं, छं० ॥ १३९ ॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे ।

(१) ए. क. को.-दीप ।

(२) ए. क. को.-दन सुरन बंधि छंडिय प्रिय ।

(३) ए. क. को.-वरं ।

(४) ए. क. को.-मन्नि ।

दूहा ॥ सार मंत मत्ते सुभट । षग ढिल्लै गज ठट्ट ॥

स्वामि धम्म सड्डै रनह । मुकति सु झारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर वीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन ।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान । बीर मत्ते चावहिसि ॥

बलि उतंग सजि जंग । अंग जनु पंग कप्पि जिसि ॥

हय दल बल उहछार । कट्ठि गज दंत नडारै ॥

जनु माली महि मध्य । कट्ठि मूला करि धारै ॥

भय सीतभीत काइर कपहिं । बहत स्वर सामंत रिन ॥

कलि कहर कंक बक्कहि विहसि । गहन गोम मत्तौ महन ॥

छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और
उनके पराक्रम से मुस्लमानों की फौज का विचलाना,
हासब खां खुरसान खां का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं तसद्धी तनघं । कले कंक बक हीन जीवं सु लष्णं ।

षलं कन्ह गोइंद कोका प्रमानं । मनौ देषियै देवयं दुंद थानं ॥

छं० ॥ १४२ ॥

बढ़े वीर रूपं प्रमानं निनारै । अरी अग चेतं न चित्तं धारै ॥

नचै कंध बंध असंधं धरंगी । मनो वीर भारथ्य आवत्त रंगी ॥

छं० ॥ १४३ ॥

लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं । षगे षेत षंद्धौ पुरासान घानं ॥

उडै अत्तताई हयं पाइ तेजं । दलं दिष्षिये पेट पष्पे करेजं ॥

छं० ॥ १४४ ॥

हन्यौ हासबं घान सीसं गुरज्जं । गयं उड्ढि गेनं सु षोपरि पुरज्जं ॥

इतौ जुड करि वीर भय दै निनारे । घुमे सार घुम्मे मनो मत्त वारे ॥

छं० ॥ १४५ ॥

दूहा ॥ रत्त मत्तवारे सुभट । विधि विनान उनमान ॥

तहन सुष्प दुष्प निजहि । मोह कोह रस पान ॥ छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित
होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की
प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ मोह कोह रस पान । बीर मत्ते चावहिसि ॥

तबल तुंग बजि जंग । बीर लग्गे सु बीर कसि ॥

जा दिष्पै सुरतान । नैन बड़वानल धारी ॥

प्रलय करन करवान । प्रलय इन षग हकारी ॥

सुभि लोह मोह अरुनय तनह । अति उदार चिन्त्य रनह ॥

प्रथिराज राज राजिंद गुर । गहन गज्जि लीनों पनह ॥ छं० ॥ १४७ ॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ।

साहन बाहन विरद । साह गोरी सयन्न सम ॥

हय गय दल विद्धरहि । रोस उद्धरहि वीर भ्रम ॥

बजहि षग आवृत्त । जूथ उडुहि असमान ॥

मनहु सिंघ गुर गज्ज । हकि कारिय सिर भानं ॥

दल जोरि विहसि साहाब भर । भर भर भिरि असिवर बजिय ॥

जानेकि मेघ मत्ते दिसा । निसा नभ विज्जुल लसिय ॥

छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धरं । सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥

भिरि भारथ पारथ से उचरे । मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥

छं० ॥ १४९ ॥

रननंकय नागय वीर सुरं । मनो वीर जगावत वीर उरं ॥

छिति छच दुहाइय छच धरं । सु मनो वरबा हवि वज्र भरं ॥

छं० ॥ १५० ॥

छिति सोहत ओन अपुब रनं । मनो भारत पूर चली सुमनं ॥
 दोउ दीन विराजत दीन उमै । रंग रत्त रमै छिति छत्र सुमै ॥
 छं० ॥ १५१ ॥

सुमनो मधु माधव रीति इलै । सुजनो हत कंकर वीर फुलै ॥
 इक अंग विमंगन हथ्य चरै । सु मनो कल वीर कला दुसरै ॥
 छं० ॥ १५२ ॥

मिति मत्त अटत्तन घाइ घटं । सु नचै जनु पारथ वीर भटं ॥
 छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ बरकि वीर भट सुभट । भुमि हकै चावहिसि ॥
 इक इक आवत्त । वीर बरषंत मंत असि ॥
 नचि नारद किलकंत । जग्गि जुगनि हकारिहि ॥
 सार ताल वेताल । नचि रन वीर डकारिहि ॥
 अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि । करसि वीर लग्गे सु बर ॥
 बहुआन आन सुरतान दल । करहि कैलि समरस अडर ॥ छं० ॥ १५४ ॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन ।

नव बाजी नव हथ्य । रथ्य नव नवति सुभ्र भर ।
 इन बज्जै असि बरह । सार बज्जै प्रहार धर ॥
 केक अंत जमकंत । कट्टी जमदाढ़ निनारी ॥
 मनु कट्टी जम दढ । हथ्य सामंत सुभारी ॥
 चालुक चंपि चच्चर कियौ । सार धार सम उत्तयौ ॥
 इह करी कोइ करिहै न कोइ । करौ सु कोगुन विस्तयौ ॥
 छं० ॥ १५५ ॥

दूहा ॥ जंमति जमकिय जंम सम । जम प्रमना दोउ सेन ॥
 मिले वीर उत्तर दिसा । आवतह तिन नैन ॥ छं० ॥ १५६ ॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी
 वीरता की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ अइ कोस नृप अग । सूर रोपे पग गढै ॥
 सह मह गजराज । चंडि पढै बल चढै ॥

लज्ज बंध संकरिय । बीर अंकुरिय दिष्ट रन ॥
 सार धार बज्जी कपाट । निघात घुमत रन ॥
 कलमलिय कांक इम मिच्छ सह । जनु लुअ लगत जेठ महि ॥
 जहव सु जाम घरि इक्कलो । जनु बडवानल चंद कहि ॥
 छं० ॥ १५७ ॥

गाथा ॥ दिष्से मुष्य मच्छरयं । अरज दुषं सन्नाम अवनयं ॥
 अछरि वर कर इच्छं । भ्रमत 'फिरंत' 'गौन मग्गाइं' ॥ छं० ॥ १५८ ॥
 पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना ।

कवित्त ॥ मोरव्यूह रचि राज । सज्जि सब सेन सुद्ध करि ॥
 चंच पीप परिहार । कन्ह गोइंद नयन सरि ॥
 कांठ चंद पुंडीर । पांव जुग जैत सलष सजि ॥
 निद्धुर भर बलिभद्र । पंष बजि बाय तेज गति ॥
 सम पुंछ और सम पुंछ मन । बरन बरन छवि सिलह तन ॥
 रन रोहि रछौ प्रथिराज महि । गिलन अप्प सुरतान रिन ॥
 छं० ॥ १५९ ॥

गाथा ॥ मुछ्छीजं वर मछ्छरं । तं वटे अछरी अंगं ॥
 सोयं साध प्रमानं । सा पूजी खर सामंतं ॥ छं० ॥ १६० ॥
 न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना
 और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का
 हरावल सम्हालना ।

कवित्त ॥ कर बल घान ततार । घान न्याजी घां गोरी ॥
 हरवल 'पीप' नरिंद । साहि बंधी बिय जोरी ॥
 मोरव्यूह चहुआन । मार धारह संधारै ॥
 गिलन अप्प सुरतान । बोल बडा उचारै ॥
 छत अछत सीस धारन भिरवि । जै जै जै चारन सु धुअ ॥
 सुरतान खर आवत्त वर । धन्नि सुबर सामंत भुअ ॥ छं० ॥ १६१ ॥

तन तरफत धर मिचछ । वला छवि जानि नटकै ॥
 मत्त दन्ति आरुहै । दंत सौ दंत कटकै ॥
 समर अमर करि वंदि । भये विस्मृत पल'चारिय ॥
 जहँ तहँ चंद पुंडीर । चंद ज्यौं रेनि उजारिय ॥
 तन ग्रहेह नेह मन अंत सम । भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर ॥
 संभरिय स्वर सुरतान दल । महन रंभ मच्चौ सु 'धर ॥ छं० ॥ १६२ ॥
 युद्ध होते होते रात्रि होजाना ।

इनूफाल ॥ इति इनूफालय छंद । कल विकल कल छत चंद ॥
 भय निसा उदित प्रमान । चहुआन सेन सुथान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
 कर हथ्य बथ्यन थाक । मनौ मंडि बंधि चिराक ॥ छं० ॥ १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना ।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस । सेन उभै चावहिस ॥
 रत्तिवाह सम जुद्ध । बीर धावंत बीर रस ॥
 तेज चिराक रु सस्त्र । रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
 सार धार निरधार । बेद छेदन गुन जानं ॥
 सारूक करकै रंक पल । निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
 सामंत स्वर इम उच्चरै । सुबर बीर भारथ्य नहिं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन
 आक्रमण करना और मुस्लमान फौज का पैर उखड़ना ।

अड्ड होत बर रत्ति । साहि गोरी धरुंध्यौ ॥
 तोंअर बर पाहार । कित्ति सा सिंधुह संध्यौ ॥
 सेत बंध बंध्यौति । स्वर बंध्यौ रिन पाजं ॥
 जै जै जै उच्चार । धन्नि सामंत सु लाजं ॥
 सुरतान सेन भग्ना सुभर । तीन बान पुंजान गय ॥
 गज घंट न घंट न मत्त सुनि । सुनि जंपै बर हयति हय ॥ छं० ॥ १६६ ॥

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना ।

दोत होत मध्यान । पीप नें पन मन मंझौ ॥
 प्रबल पानि परचंड । साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
 सेत बंधि ज्यौं राम । चंद सुर भान सूर सधि ॥
 यों लिनो परिहार । बालि दस कंध कंध मधि ॥
 रन छंडि हंडि धर मच्छि हुच्च । लाजवंत के फिरि भरिय ॥
 जय जय सु जयें मुष धर अमर । सु कविचंद कवितह धरिय ॥
 छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव,
 अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई
 हुजाब खां का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ पय्यौ राव तिन वेर खींची प्रसंग । जिने घंडियं घित्तवल घग्ग अंगं ॥
 पय्यौ राव पज्जून पुचंति राजं । गयं सुर्ग लोगं करे देव गाजं ॥
 छं० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धकै अजमेर राई । दुअं सेन जंपी मुषं कित्ति चारई ॥
 बधं जामदेवं बधौ वीरभानं । लरी अच्छरी मभभ वीरं बरानं ॥
 छं० ॥ १६९ ॥

पय्यौ घाइ घेतं अतत्ताइ तातं । मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं ॥
 पय्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं । हयं अट्ट भग्ग सु उट्टे कमंधं ॥
 छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे । दिषे थान थानं मिछं प्रात तारे ॥
 छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना ।

दूहा ॥ इन परंत सुरतान गहि । ग्रह निग्रह घट वीर ॥
 तिन जस जंपत का कवी । जिन करि जज्जर और ॥ छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान । साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
 विन सेवा विन दान । पान षगह षल संध्यौ ॥
 फिरि ग्रह पत्तौ राज । लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
 डोला तेरह तीस । मझि साहाब सुभक्तिय ॥
 ग्रह गयौ लियैं सुरतान संग । जै जै जै जस लख्यौ ॥
 जयचंद कनाइत चिंति जिय । मान प्रसंसन सिद्धयौ ॥ छं० ॥ १७३ ॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन ।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान । मान भंज्यौ सुरतानं ॥
 उन उप्पर नन कियौ । हुतौ बर बैर निदानं ॥
 पंग लज्ज उच्चरै । सुनौ मंची अधिकारिय ॥
 करिय घेत चहुआन । इदं पहु पंथह वारिय ॥
 सुह सुच्छ सुच्छ सोमेस सुअ । भुअ समान संभरि धनियं ॥
 पडरै दीह जस चहुई । धर पडर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन । रन संध्यौ सुरतान ॥
 लच्छि लई चतुरंग जिति । बर बज्जे नौसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छच मुजीक निसान । जीति लीने सुरतानं ॥
 गो धर ठिस्लिय ईस । बज्जि निरघात निसानं ॥
 दिसा दिसा जय कित्ति । जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
 बाल वृद्ध भर जुवन । जंग जंपै धनि लाजं ॥
 सा भ्रम्म धारि छची नृपति । दिपति दीप भुअलोक पति ॥
 पुज्जै न कोइ सुरतान को । मुष अयन्न पारय्य गति ॥ छं० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ हालाहल वित्ते सुभर । कोलाहल अरि गान ॥
 सुबर राज प्रथिराज कौं । तपय बौर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन ।

कवित्त ॥ छंडिदियौ सुरतान । सुजस पहू पीप मंडि सिर ॥
 जित्ति जंग राजान । इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
 भूमिय मिलि इक आइ । इक बंधे बस किज्जिय ॥
 इक अण्ण पहराइ । मान भजि रूमन दिज्जय ॥
 आवै 'न पार लच्छी सहज । षट् बरन सुग्घह रुगन ॥
 चहु आन खर संभरि धनी । तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके मोरव्यूह पीपा
 पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥



अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ ^१कितक दिवस वित्ते न्वप्रति । सारंगीपुर साज ॥

धर मालव मंडौ न्वपति । आषेठक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना

और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअगगानी सट्टि । खर सामंत ^२सु सथ्यं ॥

मालव धर प्रथिराज । सज्जि आषेठक तथ्यं ॥

बर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥

बल संमर जो गट्ट । गाहि चहुआन ^३जु सीमं ॥

सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम बर न्वपति ॥

संभाग समर सुनयौ समर । समर बीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुवर बीर चिंतै न्वपति । बर बरनी दुति काज ॥

बर इन्द्रावति सुंदरी । बरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छवि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद्र सुंदरी नाम । बीय इन्द्रावति सोहै ॥

बर समुंद पांवार । धरिग अति सम संग लोभै ॥

मनमथ मथन नरिंद्र । हाइ करि भाइह गाढ़ी ॥

^१रूप तरंग भंकुरित । तुंग दोऊ करि काढ़ी ॥

(१) क. ए. को.-कितेक, केतेत, फितेक ।

(२) मो.-जु ।

(३) मो.-सुसीमं ।

(४) ए. क. को.-रुअन अंग, अंग ।

ज्यों हिति काम जंघ्यौ परित । अति सुदेह निम्मल भलकि ।
संकुच सु काम कर कलिय तिहि । रिरिपु सुदेख आयौ ललकि ॥
छं० ॥ ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना ।

दूहा ॥ श्रीफल दुजबर हथ्य करि । दैन गयौ चहुआन ॥

दिन पंचमि बर भोम दिन । लगन करै परमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

**पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय
इत्यादि के विषय में प्रश्न करना ।**

दुज पुच्छै आतुर न्वपति । किहि वय किहि उनहार ॥

किहि लच्छिनमति कौन विधि । कहि कहि सुमति विचार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना ।

कुंडलिया ॥ वय लच्छन अरु रूप गुन । कहत न बनै सु बाम ॥

सारद मुष उच्चारती । साधि भरै जो काम ॥

साधि भरै जो काम । कहै सारद मुष अप्पन ॥

साधि चित्त नन धरै । कहिय दिषियं सु अप्पन ॥

बलि सरूप सज्जी मदन । सुभ सागर गुर मेव ॥

सो सज्जिय भज्जिय दिवह । तकि प्रथिराज बलेव ॥ छं० ॥ ७ ॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना ।

दूहा ॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन । दुरि दुरि अवन सु हित ॥

जिम जिम दुजबर उच्चरत । तन मन तिम तिम रत्त ॥ छं० ॥ ८ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन ।

(१) मो.-कर लीय ।

(२) ए. क. को.-फेरिपु देख ।

(३) मो.-करइ ।

(४) ए.-बुध ।

(५) ए. को.-किहि किहि ।

(६) ए. क. को.-भरै ।

(७) ए. क. को.-दुरि दुरि ।

हनूफाल ॥ सुनि प्रथम बालिय रूप । बर बाल लच्छिन नृप ॥
 अहि संधि सैसव पाल । अजु अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ८ ॥
 सैसव सु सूर समान । वय चंद चढ़न प्रमान ॥
 सैसव जोवत रल । ज्यों पंथ पंथी मेल ॥ जं० ॥ १० ॥
 परि भोह भँवर प्रमान । वै बुद्धि अच्छरि आन ॥
 द्रिग स्याम सेत सुभाग । सावक म्रग छुटि बाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
 बिय द्रिगन ओपम कोड़ । सिस भ्रंग घंजन होड़ ॥
 बर बरन नासिक राज । मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
 गति सिषा पतंग नसाव । ओपम दे कवि आव ॥
 नासिक दीपन साल । भँप देत घंजन बाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
 बिय बाल जोवन सेव । ज्यों दंपती हथलेव ॥
 वैसंधि संधि अचिंद । ज्यों मत्त जुरहि गुविंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
 * कहि ओपमा कविचंद । ॥
 तुछ रोम राजि विसाल । मनो अग्नि उगिय बाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
 कुच तुच्छ तुच्छ समूर । मनो काम फल अंकूर ॥
 वय रूप ओपम रह । मनो कामद्रपन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
 वर छिन्न थकत तेह । जा जनक नृप कर देह ॥
 वैसंधि कविवर वंधि । ज्यों वृद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
 वैसंधि संधि समान । ज्यों सूर ग्रहन प्रमान ॥
 वै राह ससि गिलि सूर । चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
 वर बाल वैसंधि रह । सिक्कार काम करेह ॥
 लज करे लज लजि छंडि । चित रंक दीन समंडि ॥ छं० ॥ १९ ॥
 कहां लगि कहौ बर नाइ । तो जंम अंत सु जाइ ॥
 फल हथ्य लिय परवान । तप तूंग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥
 उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी
 समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ।

(१) ए.-रूप ।

(२) मो.-चढ़त ।

* यह पंक्ति मो.-प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है । (३) ए. क. को.-प्रमान ।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव । रंग वज्जे नीसानं ॥
 इंद्रावति सुंदरी । बीर दीनी चहुआनं ॥
 राज मंडि आषेट । समर कगर बर धाइय ॥
 बर गुज्जरवै राव । चंपि चित्तौरै आइय ॥
 उत्तरे बीर प्रव्वत गुहा । धर पड्डर मेलान किय ॥
 जोगिंदराव जग हथ्य बर । गढ़ उत्तरि 'किरपान लिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना ।

दूहा ॥ छंडि बीर आषेट बर । गौ मेलान नरिंद ॥
 छंडि छूर सिंगार रस । मंडि बीर बर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन
 को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना ।

कवित्त ॥ मतो मंडि चहुआन । सबै सामंत बुलाइय ॥
 दै पंडो पज्जून । बीर उज्जेन चलाइय ॥
 सथ्य कन्ह चहुआन । सथ्य बड़गुज्जर रामं ॥
 सथ्य चंदपंडीर । सथ्य दीनौं नृप हामं ॥
 आवत अत्तताई सुबर । रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
 मुक्कलयौ गोर निद्धुर सुबर । मुक्कलि जैसिंघ पणलिय ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूहा ॥ मुक्कलयौ कविचंद सथ । 'नृप मुक्कलि गुरराम ॥
 मुक्कलयौ कैमास सँग । दाहिमों बर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
 सब सामंत सुसंग लै । लै चलयौ चहुआन ॥
 बरनि चिन्ह उर सल्लई । कहिग कबिय 'बघान ॥ छं० ॥ २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन ।

चीटक ॥ ग्रथिराज च्छ्यौ सिर छत्र उपं । ससि कोटि रबी ज्यों नछिच तपं ॥
 गजराज विराजत पंति घनं । घनघोरि घटा जिम गर्जि 'गनं ॥
 छं० ॥ २६ ॥

(१) ए. कृ. को.-करपान ।

(२) ए. कृ. को.-नृप ।

(३) ए. वषान ।

(४) ए. कृ. को.-मनं ।

हय पष्पर बष्पर तेज 'तुनं । किननंकहि 'धकहि सेस धुनं ॥
 सहनाइ नफेरिय भेरि नदं । धुरवान निसानन मेघ 'भदं ॥ छं० ॥ २७ ॥
 घन टोप सु ओप अनेक सरं । मनु भद्व बौज उपम धरं ॥
 * किरवान कमानन तान करं । हथनारि हवाइ कुहक वरं ॥
 छं० ॥ २८ ॥
 सुजयं प्रथिराज सु सारथयं । दुतियं कहि भारथ पारथ यं ॥
 छं० ॥ २९ ॥

(४) मो.-नुमं ।

(५) ए.-धकाहि ।

(६) मो.-नदं ।

* यह पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है ।

मोतीदाम ॥ चढ्यौ न्वप बीर अनंदिय चंद । सु मुत्तियदाम पयं पय छंद ॥
 दए न्वप कगद भृत्त सु इष्ट । मिले सब आइस जंग न रिष्ट ॥
 छं० ॥ ३० ॥
 उड़ी पुर धूरि अछादिय भान । दिसा धरि अठु न सुभभय 'सान ॥
 बजे घन सह निसान सुहद । लजे तिन सह समुदय रह ॥
 छं० ॥ ३१ ॥
 'मुदे सतपच कमोदन घेरु । करे चतुरंगय संकिय मेरु ॥
 द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी । तिनकै बर कन्ह परे धुरसी ॥
 छं० ॥ ३२ ॥
 जु अनंदिय चंद निसाचर यों । किल कंपहि तुंड जसं बर यों ॥
 बिफुरै बर सूर चिहूं दिसि यों । डरपै सुर पत्ति उरं बसि यों ॥
 छं० ॥ ३३ ॥
 फन फूंक फनंपति को बिसरी । धरकें पय बज्जि पुरं दुसरी ॥
 जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं । तिनसों बर 'पांति षगं उरभं ॥
 छं० ॥ ३४ ॥
 बर बज्जि तंदूर तहां तबलं । निसु नन नवीनय बंस बलं ॥
 जु धरै बर गौर 'उछंग हरं । सु कहै बर कंतिन कं पि डरं ॥
 छं० ॥ ३५ ॥

(१) मो.-भान ।

(२) ए. क. को.-सुदे ।

(३) ए. क. को.-पंषियते ।

(४) मो.-उबग ।

जु बजावत 'डोह' उक्क सुरं । रन नंकहि जोग जुगाधि हरं ॥
 सजियं चतुरंग 'प्रथीपति' । दुतियं कथि भारथ पारथयं ॥
 छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और
 उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज
 का रावल की कूशल पूछना ।

दूहा ॥ सजी सेन प्रथिराज बर । बीर बरन चहुआन ॥
 बरद सौर संभय मिल्यौ । चिचंगी परधान ॥ छं० ॥ ३७ ॥
 उत रावर सम्हौ मिल्यौ । चिचंगी परधान ॥
 कहौ समर रावल कहां । पुच्छि कुसल चहुआन ॥ छं० ॥ ३८ ॥
 कुंडलिया ॥ मिलत राज प्रथिराज बर । समर कुसल पुछि तीर ॥
 कहां सेन चालुक्क कौ । कहां समरंगी बीर ॥
 कहां समरंगी बीर । दियौ उत्तर परधानं ॥
 करहेरा चिचंग । राज आहुठु प्रमानं ॥
 गुज्जरवै गुरि 'ज'म । हक्क उत्तर पद्धर चलि ॥
 गढ़ इत्त' देस कोस । समर उभो समरं मिलि ॥ छं० ॥ ३९ ॥

प्रधान का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ कहि चिचंगिय मंचि । चंपि आयौ चालुक्कह ॥
 तुम नन दीनौ भेद । आइ 'मंडोवर' चुक्कह ॥
 चिचंगी चतुरंग । आइ अड्डो करहेरां ॥
 जुद्ध रुद्ध चालुक्क । हुए कोऊ दिन भेरां ॥
 हम दैन धवर तुम मुक्कलिय । कहौ 'कही' मुष मुष रुष ॥
 प्रथिराज राज अगौ विवरि । कही वत्त परधान मुष ॥ छं० ॥ ४० ॥
 पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही
 परास्त करूंगा ।

(१) मो.-घोरे ।

(२) ए. क. को.-मंडोहि बर ।

(३) मो.-प्रति पतियां ।

(४) ए. क. को.-जंग ।

नृप बुभुक्षै चालुक । सेन कित्तक परमानं ॥
 आइ ग्रह्यौ चिचंग । निरत दीनौ नन आनं ॥
 खर सुवर आहत । रीति रण्यौ विधि जानं ॥
 इन अग्यौ चालुक । बेर कित्ती भगानं ॥
 जोगिंद राव जीयन बलिय । कलिय काल छप्पन विरद ॥
 समरंग बीर सम सिंघ बल । चंपि लैन चालुक दुरद ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना ।

चौपाई ॥ करि अग्ये लीनो परधानं । आतुर हीं चल्थौ चहुआनं ॥
 दै गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं । समर सजन संमुह उठि धानं ॥ छं० ॥ ४२ ॥
 रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ पावस रन प्रव्वाह । अभ्र छाथौ छिति छाड्य ॥
 छिचौ छित्ति प्रमान । अभ्र बदरं उठि भांड्य ॥
 आलस 'नींद्य घीभ्र । सत्त राजस गर्ह तामस ॥
 धर दुह रन बुठनह । करै उद्दिम रन हामस ॥
 अंगार रंभ ग्रहं बसह । औ कुलटा सुकवीय हुव ॥
 कारन्न कित्ति औ काल मिसि । द्रवै इंद्र खरह सुलव ॥ छं० ॥ ४३ ॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ।

ज्यौं गुनाव गारडू । सेन चालुक मिसि साही ॥
 विषम जोर फुंक्यौ । सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
 जीभ घग्ग जभभारि । सेन सज्जे चतुरंगी ॥
 बान मंच मने न । रसन कुंनन आवग्गी ॥
 मन धीर बीर तामस तमसि । निधि चल्हे मन मध्य दिसि ॥
 भोरा भुवंग भंजन भिरन । पुब्व दई चिंतह सु बसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ।

यह संभरि चहुआन । बीर पारधि षरि आड्य ॥

दुहुं निसान बजि समुह । भूभि पुर कं पि हलाइय ॥
 बीर सिंघ आहुठ । बीर चालुक मुष साहिय ॥
 पुच्छ मग चहुआन । दुहुन बर बीर समाहिय ॥
 उत्तरिय मनो सामुह तहि । उदित दीह मंगल अरक ॥
 जोगिंद जेम जोगिंद कसि । अष्ट कुली बंछै मुरक ॥ छं० ॥ ४५ ॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ।

दूहा ॥ चालुकां चहुआन दल । भई सनाह सनाह ॥
 दोज सेन कविचंद कहि । बरनि बीर गुन चाह ॥ छं० ॥ ४६ ॥
 दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना ।
 मोतिदाम ॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ । परे बर बीर निसानन घाइ ॥
 भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क । मनो मरु पुत्त इकारहि इक्क ॥
 छं० ॥ ४७ ॥
 अछादि अरुन्न न लुझत भल्ल । करे किधो सोर कपी बर गरुह ॥
 गहवर बैन उचारत ओन । इहै जुधकार प्रकारय दोन ॥
 छं० ॥ ४८ ॥
 धरं गज आगम नीम अउड । छुटे बर पाइक फूलय रुह ॥
 सुसील अफूल बन्धो हथवान । विचै गुथि मोति कुहक 'अचान ॥
 छं० ॥ ४९ ॥
 दुहुं विच नग मगं नग पंति । परी तहां पटुनराइ मपंत ॥
 जु भाल अंक्रु सु सुंदप बिंद । धरी हथनारि छतीसय चंद ॥
 छं० ॥ ५० ॥
 कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि । तिठौहर बंध नरिंद सु बंध ॥
 सरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव । दिसं बुलि भट्टिय दल्लि न काव ॥
 छं० ॥ ५१ ॥
 दिसि वाम जवाहर मेर अराव । रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव ॥
 रंग स्याम सनेत कसे घन रूप । तिन में बर छीन सुरंग अनूप ॥
 छं० ॥ ५२ ॥

पसरी बर क्रन्न सनाह न तीर । अचवै उत कालिय के रुचि घीर ॥
 सजी चतुरंगन बग बनाइ । चढ़े अरि के उर चालुक राइ ॥
 छं० ॥ ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का
 चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ चालुकां चित्रंगपति । मिले दिष्टि दुअ दौरि ॥
 मनो पुब पच्छिमहु तैं । उड़ि डंवर इल सौर ॥ छं० ॥ ५४ ॥
 इत चण्णौ चित्रंगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
 आइ राज उप्पर करन । बज्ज निसानन घाव ॥ छं० ॥ ५५ ॥
 कुंडलिया ॥ ढाल ढलकि दुअ सेन बर । गज पंतौ हलि जुथ्य ॥
 मनो मल्ल आसुद दीउ । तारी दै दै हथ्य ॥
 तारी दै दै हथ्य । राम अवनौ अन पिम्बे ॥
 दुहुन दिष्ट अंकुरिय । पाज बंधन बल दिम्बे ॥
 चंपि सेन चालुक । बीर भ्रम सौ बर मिले ॥
 चाहुआन बर सेन । दुरी पच्छिम दिसि ठिल्ले ॥ छं० ॥ ५६ ॥
 पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज

व्यूहरचना रचना ।

कवित्त ॥ सब सामंत रु समर । बीर दच्छिन दिसि हंडिय ॥
 चाहुआन हूसेन । गज्ज व्यूहं रचि गढिय ॥
 एक दंत हूसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
 सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
 दिसि वाम सबै आकार गज । महन सीह मोरी सुबर ॥
 बट्टनय अंग आहुट्टपति । महन रंभ मच्चौ सुभर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

पडरौ ॥ घन घाइ घाइ अधघाइ सूर । सिंधु औ राग बज्जै कर ॥
 हुंकार हक जोगिनिय डक । मुह मार मार बज्जै बबक ॥ छं० ॥ ५८ ॥

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस । पष्वर उपट्टि घुंटे घुरीस ॥
 नाचंत नह नारह तुंब । अच्छरी अच्छनद जानि लुंव ॥ छं० ॥ ५८ ॥
 गिद्धिनी सिद्ध वेताल फाल । घेचर घपाल कूदै कराल ॥
 ओनित्त जानि सरिता प्रवाह । कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह ॥
 छं० ॥ ६० ॥

चमकंत दंत मथ्यै क्रपान । मानों कि ऊक लग्यौ गिरान ॥
 पति चिचकोट चहुआन सेन । चालुक्क चूर किनौ सुरेन ॥
 छं० ॥ ६१ ॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर
 संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना ।

दूहा ॥ चालुक्कां परि खूर रन । सहस एक मुर सत्त ॥
 चूक चिंत चूकौ चितन । औ अचिज्ज विधि बत्त ॥ छं० ॥ ६२ ॥
 पंच पहर वित्यौ समर । दिन अथवंत प्रमान ॥
 उभै सत्त रावर 'समर । प्रथीराज सत्त आन ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना ।

निस बर घटीति 'सत्तरहि । सेष जाम पल तीन ॥
 भिरि भोरा रावर समर । रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
 भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना ।

नदि उत्तरि चालुक्क बर । चिंपि सुभर प्रथिराज ॥
 सुभर भीम उप्पर परे । मनो कुलींगन बाज ॥ छं० ॥ ६५ ॥

घमासान युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ परे धाड़ चहुआन चालुक्क मुष्ण । मनो मोष मद मत्त जुट्टे कुरष्ण ।
 बजे कुंत कुंतं समं सेल साही । परी सार टोपं बजी तं चघाई ॥
 छं० ॥ ६६ ॥

भरै सार अगगी दभै टोप दभभं । मनो तं चनेतं प्रलै अगि सज्जं ॥
फटै गज सीसं सिरं भेदि लोही । धसौ भारती कासमीरंति सोही ॥

छं० ॥ ६७ ॥

दिए नागमुष्यं गजे तं तबानं । ठनकंत घंटं फटै पीतवानं ॥
बजे बज घाई उकतीति चिन्हं । बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं ॥

छं० ॥ ६८ ॥

गहै दंत सूरं चढ़ै कुंभ तंती । फिरै जोगिनी जोग उचारवती ॥
लगी हथ्य गोरी गई अंग भेदी । मनो राह सूरं बटे माहि छेदी ॥

छं० ॥ ६९ ॥

हंधी धार मंती सुमंती उछारै । उतकंठ भेली जु रंभा विचारै ॥
परै घुमि सूरं महा रोस भीनं । मनो वारुनी मह प्रथमं सु पीनं ॥

छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा

रुख देकर धावा करना ।

दूहा ॥ औसरि भर पिच्छे परे । समर तिरच्छौ आइ ॥

मानहुं षल हुत्तेसनी । भई बीभछ निधाइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन ।

चिभंगी ॥ तिय बिय अरि संतं, बहु वलवंतं, ग्यारह जंतं, अति रंगी ।

चिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिदं, बर रंगी ॥

विय हुअ नय नालं, बज रिन तालं, असिवर भालं, रन रंगी ।

सामत भर सूरं, दिठु करुं, मिलि 'अरिपूरं, अनभंगी ॥ छं० ॥ ७२ ॥

मनु भान पयानं, चढ़ि बर वानं, मिलि बथ्यानं, असिभारं ।

ओडन कर डारं, बेन करारं, तामस भारं, तन तारं ॥

जुट जुटिय जुडं, जोवति वृडं, अरिनि अरुडं, अरि बकं ।

उर धरि चालुकं, सूर जहकं, 'मुर आतकं, धक धकं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दल बल पर ओटं, सीस विघोटं, रन रस वोटं, परि उटुं ।

दंतं उष्यारं, कंधय मारं, अरि उत्तारं, धत छुटुं ॥

जोगिन किलकारौ, हसिहिं ततारी, दै दै भारी, हिलकारी ।
 अरि तन तन कालं, परि वेहालं, चालुक झालं, बर सारी ॥
 छं० ॥ ७४ ॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना ।

कवित्त ॥ वीर बीर आरब्ध । चढ़िय बीरं तन हक्के ॥
 चावहिसि विद्धुरे । मोह माया न कसक्के ॥
 एक दिनां आहुरे । आदि जुद्धं षिति लग्गे ॥
 कै छुट्टे मद मोष । जानि बीरन द्रग जग्गे ॥
 घन घाइन घाइ आघाइ घन । मति सुभाइ विभाइ परि ॥
 कविचंद बीर इम उच्चरै । प्रथम जुद्ध आदीत टरि ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उन
 का नाम ग्राम कथन ।

दूहा ॥ संभ सपट्टिय बीर भर । परिग सुभर दस राइ ॥
 तिय घवास परिगह नृपति । सिर घुम्नै घट घाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥
 कवित्त ॥ पन्थौ समर घावास । जित्यौ जिन सम चालुकिय ॥
 परि भट्टी महनंग । छच नष्यौ अरि सकिय ॥
 पन्थौ गौर केहरी । रेह अजमेरी लगिय ॥
 परिग बीर पामार । धार धारह तन भगिय ॥
 रघुवंस पंच पंचौ मिले । बर पंचानन और कवि ॥
 चिचंग राव रावर लरत । टरय दीह अथवंत रवि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन खां
 का चालुक्य पर आक्रमण करना ।

घरी अद्ध दिन रछ्यौ । चलिग हसेन घान भ्रम ॥
 चालुकां दिसि चलयौ । मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम ॥
 असि प्रहार चढ़ि धार । मन न मोच्यौ तन तोच्यौ ॥
 अस्त वस्त वज्जी कपाट । दधीच ज्यों जोच्यौ ॥

बर रंभ बरन उतकांठती । खर हूर उत कांठ मिलि ॥
 ढिल्लीव ढोल जीरन जुगं । गल्ल बौर जुग जुग चलि ॥६०॥७८॥
 एक दिन राति और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज
 की जीत होना ।

दूहा ॥ निसि दिन घटिय तिसत्त बर । दल चहुआनन चीन्ह ॥
 भिरि भोरा रावर रिनह । रत्तिवाह सो दीन ॥ ६० ॥ ७९ ॥
 गुरजर राय भीम देव का भागना ।
 भिरि भग्नौ सुत भुअंग कौ । गरुड़ समर गुर राज ॥
 फिरि पच्छौ पुंछी पटकि । बिन सु गरब तजि लाज ॥ ६० ॥ ८० ॥
 कवित्त ॥ घेत जीति चिचंग । हथ्य चळ्यौ चहुआनं ॥
 के भोरी भर सुभर । लीन अण्ह पर आनं ॥
 केक किए परलोक । मुक्ति लभ्यौ 'जुग जानं ॥
 पंच तत्त मिलि पंच । सार धारह लग्गानं ॥
 चहुआन समर इकतन्नि मह । तहां सेन उत्तरि सुभर ॥
 चालुक्क भीम पट्टन गयौ । करौ चंद कित्तिय अमर ॥६०॥८१॥
 कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।
 चौपाई ॥ अमर कित्त कविचंद सु अष्यौ । जा लागि ससि खरज नभ सष्यौ॥
 इह काया माया जिन रष्यौ । अंत काल सोई जम भष्यौ ॥६०॥८२॥
 पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्ज्वल भेष धारण कर स्वप्न में
 पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।
 दूहा ॥ निसि सुपनंतर राज पै । कित्त आइ कर जोर ॥
 नौतन अति उज्जल तनह । नौद नपति मन चोर ॥ ६० ॥ ८३ ॥
 कीर्ति का कहना की हे क्षत्री में तुझे दर्शन देने आई हूं ।
 जपि जगाइ सोमेस सुअ । मदन भीम चहुआन ॥
 देत रूप बची प्रकृति । दरसन तवही पान ॥ ६० ॥ ८४ ॥

कोटि लखन सुंदरि सहज । भय सुंदरि तिन प्रेम ॥
खर सुभर डरपै रनह । तौ सुधीर कहि केम ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन ।

कवित्त ॥ तो कित्ती चहुआन । निदरि संसारह चलो ॥
तीन लोक में फिरौ । देव मानौ उर सलो ॥
थान थान द्रिगपाल । फिरिव चावहिसि रुंध्यो ॥
तन विसाल उज्जल सुरंग । दुज्जन सिर घुंदो ॥
हूं सार अडर डोरु कहन । जोग प्रमानह उत्तरी ॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन । भूत भविष्यत विस्तरौ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ तो कित्ती चहुआन हौं । तीनौं लोक प्रसिद्ध ॥
धीरज धीरं तन धरै । द्रवै भूभि नव निद्ध ॥ छं० ॥ ८७ ॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज । तुम गुन गुंथित देह ॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह । लग्यौ प्रेमलह नेह ॥ छं० ॥ ८८ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम
को सुनाना और फल पूछना ।

कवित्त ॥ जु कछु लिख्यौ लिलाट । सुष्य अरु दुःख समंतह ॥
धन विद्या सुंदरौ । अंग आधार अनंतह ॥
कलप कोटि टर जाहि । मिटै नन घटै प्रमानह ॥
जतन जोर जो करै । रंच नन मिटै विनानह ॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि । बुझिभू चंद गुरुराम तरु ॥
बरनी विचित्र राजन बरहि । कहौ सत्ति मत्तौ सु अरु ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने
वाली कीर्ति देवी थी ।

दूहा ॥ इह सुपनंतर चिंततह । कहि सु देव जिम कीम ॥
रत्ति वाह बर नरिंद सों । दीनों भोरा भीम ॥ छं० ॥ ९० ॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार । सलष नंदन रचि गढ़ौ ॥
ता सत्यह चामंड । भीम भट्टी रचि ठढ़ौ ॥
महन सीह बर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात षिभिभय बर सौकी ॥
हजार पंच अरि टारि कै । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में । अग्नि तिनका अरि परिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ अत्ति अच्छी रनं, तेग कढ़ी घनं । रत्ति अझी मनं, बीज कुही घनं ॥
बीर रस्तं तनं, सार भंजे घनं । हक मची रनं, बाह बाहं तनं ॥
छं० ॥ ८२ ॥
रुंड मुंड घनं, ईस इच्छै चुनं । षग भगं तनं, ग्राह गंगं जनं ॥
संभ रुट्टी मनं, तार चौसठिनं । भूत प्रेतं तनं, भष्य दिन्नौ घनं ॥ छं० ॥ ८३ ॥
जानि सीलं रुधी, कवि ओपमसुधी । मनं भारथ जलं, मेदि उप्पर चलं ॥
छं० ॥ ८४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत । पयौ पांवार रूपघन ॥
पयौ किलह चालुक । संधि चालुक हजूरन ॥
पयौ वीर बगरी । भयौ अगार चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंध । सिंध रष्यौ षिजवानं ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयौ ॥
तिय सीत अग्नि अंधार पष । चंद तुच्छ उदित भयौ ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

दूहा ॥ चालुका चहुआन दल । लुथ्यि स देढ़ हजार ॥
सब घाइल 'होड़' परिय । तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ॥ ८६ ॥

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआन । लुथ्यि ^१हुँढन उप्पारिय ॥
 खेत तिरछौ मुक्कि । पिभिय लग्गौ अरि भारिय ॥
 यों आतुर लग्गयौ । जान चालुक न पायौ ॥
^२कन्ह वैन ^३संभलियं । फेर बर भीम धसायौ ॥
 उहछरिय पानि बर मह भिरि । संग लोह हकारि दुहुं ॥
 गुजर नरिंद चहुआन दुहुं । परि पारस भारत्य कहुं ॥छं०॥८७॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना ।

बर प्रभात बन होत । होड़ चौहान सु लग्गिय ॥
 लरत सूर दिनमान । सिरह चालुक पत षग्गिय ॥
 षह धरि बज्जि निसान । रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
 लोह किरन पसरंत । सूर विरुभत ^४वथ गत्तां ॥
 बर सूर दिष्य काइर विडुरि । ठठुकि सूर सामंत रन ॥
 दिष्यनह सूर इन काम बर । चढ़ि दिष्यन गौ सूर तन ॥छं०॥८८॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना ।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक चहुआन गत्तं । लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
 दिवं दच्छिनं भीम भिरि चिचकोटं । परे मार ओटे चहुआन जोटं ॥
 छं० ॥ ८९ ॥
 किए सूर कोटं न हल्लै हलाए । अमी सेन दून रहे हथ्य पाए ॥
 रसं बीर आयौ चलयौ मोह प्रानं । जिनै छच बंसं धरौ ध्यान मानं ॥
 छं० ॥ ९० ॥
 भज्यौ चित्त ^५वाहं लजे सूर दिष्यं । तहां चंद कब्बी सु ओपम्म पिष्यं ॥
 पियं चास पिष्यं सघी पास लग्गी । मनो बाल बडू परे ^६पाइ अग्गी ॥
 छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए.-हुँढन ।

(२) मो.-कैन वैन संभलिय फेरि बर नीम धसायौ ।

(३) ए.-संभरिलिय ।

(४) ए. रु. को.-वग रत्तां ।

(५) मो.-चाह ।

(६) को.-आइ ।

असव्वार ऐसें सनाहंत कट्टं । मनो^१ बीय सौकी इषी भाग वट्टं ॥
उडै काइरं हक्क हरि जीव चासं । उपमा करं फुटै नैन पासं ॥

छं० ॥ १०२ ॥

मनो^२ पुत्तली कंठ गढ़ि चिच लाही । करं जान लग्गी टगं टग चाही ॥
फुटै फेफरं पेट तारंग भुल्लै । मनो^३ नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥

छं० ॥ १०३ ॥

दिह नाग मुष्पी गजं हड्ड पग्गी । पितं तेज आयौ वरं जंत लग्गी ॥
उपमा न पाई उपमा न बंची । मनो^४ इंद्र हथ्यं करं राम षंची ॥

छं० ॥ १०४ ॥

करौ फारि फट्टं करं ऐक कोरं । जकै सिंधु भारं जुरै जानु जोरं ॥
पयं जोर ऐसै प्रतंगं चलायौ । भगदत्त छब्बी तहां स्वर पायौ ॥

छं० ॥ १०५ ॥

गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै । उपमा तिनं की न ओपम चारै ॥
हकै सीस नीचं धरं उंच धायौ । मनो^५ भंगुरी रूप न्यपती दिषायौ ॥

छं० ॥ १०६ ॥

समं पाज घट्टै कितं साम काजं । तिते ऊपरे स्वर चढ़ि कित्ति पाजं ॥
बड़ै स्वर सिद्धं सिधं कोन जोगी । म्रिगं पल्ल की भंति ज्यो पाल ओगी ॥

छं० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

कवित्त ॥ चढ़त दीह विष्णहर । परिग हज्जार पंच लुथि ॥

वान बचन भरि नरिंद । भारि उच्चारि देव धपि ॥

षट छह बर हज्जार । रुक्मि मंभे चहुआनं ॥

बर कट्टन चालुक्क । मत्ति कीनी परिमानं ॥

सह सेन बीर आहुठि तहां । तौ पट्टनवै कट्टयौ ॥

उच्चयौ बंभ भट्टी विहर । धार धार अपु चट्टयौ ॥ छं० ॥ १०८ ॥

(१) ए. क. को.-वियं पियं, ।

(२) मो.-गहि ।

(३) ए. क. को.-गजं ।

(४) ए. क. को.-छब्बं ।

(५) ए. क. को.-उत्तरे । (६) मो.-परिवानं ।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना ।

तब रा निंगर राव । भुभुभ धर रावर मंडिय ॥
 रुक्मि सेन चहुआन । घग्ग मग्गह तन षंडिय ॥
 परिगहिय सब सथ्य । गयौ चालुक बजाइय ॥
 षभर षेह षग मिलिय । निरति प्रथिराज न पाइय ॥
 बीरंग बीर बज्जर बिहर । भिरत बज्जि निय विष्णहर ॥
 बज्जरत बीय बंभन परत । गयौ भीम तन वर कुसर ॥ छं० ॥ १०६ ॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना ।

दूहा ॥ तीस सहस बर तीस अग । गत चालुक रन मंडि ॥
 तिन में कोइ न ग्रह गयौ । सार धार तन षंडि ॥ छं० ॥ ११० ॥
 बाव स्वर कोइ न भयौ । धनि चालुक्की सेन ॥
 सामि काज तन तुंग सौ । चिन करि जान्यौ जेन ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना ।

कवित्त ॥ षेत ढूँढि चहुआन । समर उष्यारि समर में ॥
 निठ पायौ चामंड । मिले सब मंस रुधिर में ॥
 है गै बर विभूत । रंक लुट्टी चालुक्की ॥
 किन हय हथिय लुट्टि । गयौ पति प्रबत 'मुक्की ॥
 दिन अठ्ठ राज चित्तौर रहि । बहुत भगति राजन करी ॥
 जोगिनी न्वपति जुगिनि पुरह । जस बेली उर बर धरी ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना ।

दूहा ॥ दिल्ली न्वप दिल्ली गयौ । बजि निघात सुदंद ॥
 जिम जिम जस ग्रह राज करि । तिम तिम रचित कबिंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥
 जस धवलौ मन उज्जलौ । निब्वी पहुमि न होइ ॥
 भूत भविच्छति त्रित्त मन । चिचनहार न कोइ ॥ छं० ॥ ११४ ॥

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना ।

घंडौ सुनि पठयौ सु न्वप । बंजि निसानन घाइ ॥

बर इन्द्रावति सुंदरौ । बिय बर करि परनाइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके करहे रो रावर
समरसी राजा प्रथिराज विजय नाम बत्तीसमो प्रस्तावः ॥३२॥



अथ इन्द्रावती व्याह ।

(तैंतीसवां समय ।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज
का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट । खर बंध्यौ सुरही ^१रित ॥
^२दीना सों प्रति प्रीति । सामि करिहै जु सामि ^३मित ॥
^४अमृत रत्त विष होत । अमृत रस रत्त उपजै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति । सार सों सार सपजै ॥
^५कठु सों कठु बर बंधियै । नारि नरन सों चाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि । त्यों बरनौ बर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥
कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने
गए तो क्या बुरा किया ।

सुनि भीमंग पँवार । चढ़े प्रथिराज प्रपत्ते ॥
समर दिसा चालुक्क । ^६सजे चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि मगन तन आनि । कित्ति चहुआन सुनिजै ॥
साम दान अरु भेद । दंड सुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनौ ^७षर जाइ तौ । नृप बर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए । लज्ज बंधि तुव हथ्य ^८दिय ॥ छं० ॥ २ ॥
भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

- (१) ए. क. को.-तत । (२) ए. क. को.-तदिनां । (३) ए. क. को.-मति ।
(४) ए. क. को.-रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपजै । (५) मो.-कंठ ।
(६) मो.-सुजो । (७) ए. क. को.-पर । (८) ए. क. को.-दिप ।

कहै जोइ वरदाइ । मंत कविचंद सु आमन ॥
 मन वासौ' मन मिलत । जियत कै कंठ सामन ॥
 जो वासुर मुर पंच । 'पग मंडै चहुआन ॥
 तौ भाविक जिह लेष । तिही हैहै परिमान ॥
 भावी विगति भंजन गढ़न । दइय दुसंकह जानि गति ॥
 लिषि बाल सीस दुष सुष दुहु । सत्य होइ परमान मति ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना ।

दूहा ॥ सुनि इन्द्रावति सुंदरी । धरनि सरन सिर लाइ ॥
 कै धरनी फट्टै कुहर । कै पावक जरि जाइ ॥ छं० ॥ ४ ॥
 इन भव न्वप सोमेस सुअ । जुध बंधन सुरतान ॥
 कै जलहि वूड़वि मरै । अवर न वंछौ' प्रान ॥ छं० ॥ ५ ॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना ।

कवित्त ॥ सघी कहै सुनि वत्त । सुतौ दानव कुल कहियै ॥
 अवर जाति अनेक । राइ 'गुर परनह लहियै ॥
 करे कोन परसंग । पाइ अगमद घनसारं ॥
 कोन करै कुष्टीन । संग लहि कामवतारं ॥
 तो पित्त अवर बर जो दियै । तो नन जंपै अलिय वच ॥
 राचियै अप्प राचै तिनह । अनरचै रचै न सुच ॥ छं० ॥ ६ ॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन
 कदापि पलट नहीं सकता ।

दूहा ॥ तुम दासी दासी सु मति । मो मति न्वप पुचीय ॥
 बोलि विन चुकै न नर । जो वर मुकै जीय ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर
 क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते ।

(१) ए. क. को.-माझि आयौ ।

(२) ए. क. को.-भंजी ।

(३) ए. क. को. छंडौ ।

(४) ए. क. को.-गुन ।

कहै भीम कविचंद 'सुन । स्वामि काम तुम अड्ड ॥
 सेन सगप्पन रीत नह । तुम दानव कुल चड्ड ॥ छं० ॥ ८ ॥
 कवित्त ॥ हौं सु भीम मालव नरिंद । मोहि घर बर अच्छिय ॥
 सवा लाष मो ग्राम । ठाम संपति बहु लच्छिय ॥
 विधि विधान निम्मान । कोन मिट्टै इह बत्तिय ॥
 होनहार होइहै पुरुष । जंपै गति मत्तिय ॥
 तुम कहो नाम बरदाइ बर । गुरुराज बंदे चरन ॥
 ओछी सु बत्त कहुँ कथन । एह सगप्पन विधि बरन ॥ छं० ॥ ९ ॥
 कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य
 करना ही बुद्धिमत्ता है ।

दूहा ॥ अहो भीम 'सत्तह सुमति । तुम मतिमान प्रमान ॥
 औसर तकि कीजै 'जुगत । औसर लहिजै दान ॥ छं० ॥ १० ॥
 भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के
 पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और
 को शूरवीर ही नहीं जानते ।

कवित्त ॥ कहै भीम पज्जून । सुनौ पामर मतिहीना ॥
 'अमत कियौ तुम मंत । बरन बरनी घग लीना ॥
 तुम सहाब बलि बंधि । गर्व सिर उप्पर लीना ॥
 गिनोँ और तिल मत्त । कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना ॥
 छत्तीन वंस छत्तीस कुल । सम समान गिनियै अवर ॥
 घर जाहु राज मुकौ बरन । करन ब्याह उछछाह नर ॥ छं० ॥ ११ ॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर
 क्या पलटते हो ।

(१) ए. क. को.-कहि ।

(२) ए. क. को.-सतिमत्ति ।

(३) को. क. ए.-जु रन ।

(४) मो.-अमन ।

जैतराव जम जैत । नैन लल्ले करि बोलै ॥
 अहो भीम करि नीम । बत्त पहली तुम भोलै ॥
 बल बलिष्ठ केहरिय । स्यार क्यों मुष वर घल्लै ॥
 लोक भाष बुझझी न । न्योत बैरी को मिल्लै ॥
 हम कज्ज लज्ज साईं धरम । क्यों कहुय मुष बत्तरिय ॥
 सु विहान बरन थप्पै मरन । आज तुम्हारी रत्तरिय ॥ छं० ॥ १२ ॥
 भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये
 विग्रह करना कौन सा धर्म है ।

दूहा ॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि । अहो सु गुर दुज राम ॥
 अमत मत्त मंडौ मरन । इह सु कोन भ्रम काम ॥ छं० ॥ १३ ॥
 गुरुराम का ऐतिहासक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना ।
 कबित्त ॥ चिया काज सुन भीम । मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
 'कहिय बत्त पय लगि । नाथ मो बालि हत्यौ ग्रब ॥
 हरी नारि तारिका । मास घट जुझ सु मंडौ ॥
 अस्ति वस्थ करि सिथल । अतक सम वर करि छंडौ ॥
 तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय । अब सहाय तुम सारयौ ॥
 बंधियौ सात तारह सु जिय । बलिय बान इक मारियौ ॥ छं० ॥ १४ ॥
 भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना
 कि जैतराव को तुम समझाओ ।

दूहा ॥ तुम बंभन बंभन सु मति । पढ़ि पुस्तक कहि सुत्त ॥
 दो घर मंगल मंडियै । इह घर जानी बस्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
 अहो चंद दंद न करहु । तुम कुल दंद सुभाव ॥
 जैतराव 'मिलि राम गुरु । लै काने समभाव ॥ छं० ॥ १६ ॥
 कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना ।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद । चीय कज रावन षंड्यौ ॥
 'बैरोचन न्वप नंद । मारि अण्णन भ्रम भंड्यौ ॥
 कंस कन्ह सिमुपाल । कज्ज रुकमनि जुध मंड्यौ ॥
 'ता बंधव रुकमान । बंध मंडवि सिर छंड्यौ ॥
 सुर असुर नाग नर पंघि पसु । जीव जंत त्रिय कज भिरै ॥
 रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को बर बरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान 'भर । कहौ सु कीजै काम ॥
 जुझ जुरै चहुआन सौं । ज्यों इल रष्यै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए
 पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना ।

कवित्त ॥ इह सु नाम 'अन्नाम । जेन नामह घर जाइय ॥
 इहै नहीं घर जोग । अग्नि दीपक दिष्याइय ॥
 पढ्येँ ही भजियै । होइ दुज्जना हसाई ॥
 इन्द्रावति सुंदरी । देहु चहुआन प्रयाई ॥
 सुनि भीम राज तत्तौ तमकि ॥ गई बत्त बुझझी सु तुम ॥
 इक्कारि जैत गुरराम कवि । षग व्याह न न करै हम ॥ छं० ॥ १९ ॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना ।

दूहा ॥ उठि चले सामंत सब । करन दंद मति ठाम ॥
 जो बरनी बिन पछि फिरै । नृपति न मन्नै माम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचन ।

कवित्त ॥ फिरि जानी पांवार । राम रघुवंस बिचारी ॥
 जीवन जो उधरै । मरन केवल संचरी ॥

(१) ए.-वैरीचन, बैरीचन ।

(२) मो.-के बंधव रुकमता ।

(३) ए. कृ. को. बर ।

(४) ए. कृ. को.-सन्नाम ।

* महंकाल बर तिथ्य । तिथ्य धारा उडारौ ॥
 स्वामि भ्रम तिय तिथ्य । मुक्ति संसो न बिचारौ ॥
 पांवार सुबल मालव नृपति । बर समुंद जिम भारयौ ॥
 बर नीति कित्ति सुर वर असुर । मुगति मयन संभारयौ ॥ छं० ॥ २१ ॥
 मतौ मंडि सब सथ्य । मत्त को बित्त बिचारिय ॥
 बर पट्टन दम्भिहै । धेन लैहै हक्कारिय ॥
 बर बाहर पालिहै । स्वामि धिम्भिहै पांवारय ॥
 बर आतुर धाइहै । अप्प संम्हौं हक्कारिय ॥
 धर दहै कोस अधकोस बर । फिरि चावहिसि रुंधही ॥
 करतार हथ्य केतिय कला । तिहिं दुज्जन फिरि बंधही ॥ छं० ॥ २२ ॥

**चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर
 पट्टनपुर में खलभल पड़ना ।**

दूहा ॥ पंच कोस मेलान करि । लिय नृप पट्टन धेन ॥
 कूक कहर बज्जिय बिषम । चढ़िय भीम नृप सेन ॥ छं० ॥ २३ ॥
 उंच क्रान अनमिष नयन । प्रफुलित पुच्छ सिरेन ॥
 रंग गंग गौ निजरि लषि । प्रज्जलि भीम उरेन ॥ छं० ॥ २४ ॥

**चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना
 और भीम का उसका साम्हना करना ।**

कवित्त ॥ औसरि 'बसि सामंत । धेन लुट्टिय पट्टनवै ॥
 बर मंडल उज्जेन । धाक बज्जिय बहनवै ॥
 ग्राम ग्राम प्रज्जरहि । खूर मानव बर बज्जै ॥
 सामंतारौ धाक । धार मुक्किय बिधि भज्जै ॥
 संभरिय बीर बाहर अवन । बाहर हर बाहर चढ़िय ॥
 चतुरंग सज्जि पांवार बर । मृगन हंकि मृगपति बढ़िय ॥ छं० ॥ २५ ॥

* महंकाल=महाकाल “ उज्जैन्याम् महाकाले ” इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है ।

(१) मो.-सव ।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना ।

हय गय रथ चतुरंग । सज्जि साइक पाइक भर ॥
 आइ मिले मुषमेल । दुहुन कट्टिय असि बर बर ॥
 'तेग मार सिर झार । धुंम धुम्मार हर लुक्किय ॥
 पन्थौ घोर अंधियार । विछुरि निसि भ्रम चक चक्किय ॥
 को गिनै अपर पर को गिनै । लोह छोह छकै बरन ॥
 सामंत सूर जैतह बलिय । कहत चंद जुगति लरन ॥ छं० ॥ २६ ॥

रघुवंसराय का नाका बांधना और पञ्जून का भीम की
 गाएँ घेर कर हांकना ।

बर सिप्रा नदि तट । धाड़ सामंत जु रुक्किय ॥
 रोकि मुष्प रघुवंस । धेन पञ्जून सु हक्किय ॥
 दुतिय बीर बर टिके । भीस भारथ जिम लगिय ॥
 सूर बिना प्रथिराज । धके जुरि षगन षगिय ॥
 मुकि धेन गंठि बंधिय मिलवि । औसर षग कट्टिय लरन ॥
 झरि सार तिनंगा तुट्टि बर । तिरदू झर लग्यौ झरन ॥ छं० ॥ २७ ॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम ॥ तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ । कला ससि संधि जगन्नय पाउ ॥
 पयं पिय छंद सु मोतियदाम । कछौ धर नाग सु पिंगल नाम ॥
 छं० ॥ २८ ॥

मिले जुध जैतर भीम नरिंद । मच्यौ जुध जानि वृतासुर इंद्र ॥
 षगे षग मग परे धर मुंड । परे भर बध्य मरोरत भुंड ॥
 छं० ॥ २९ ॥

कटक्कहि हड्डहि गूद करक्क । विछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक्क ॥
 भभक्कत बक्कत घाड़ल छक्क । उरभक्कत अंत सु पाइन तक्क ॥ छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. क. को. - "मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मार हर लुट्टिय ।

(२) मो.-सति ।

करकस केस मनो नट भंग । नचे सब सारद नारद संग ॥
रनच्चिय बेस उलथ्य पलथ्य । परै धर लुथ्यि उनें उन जथ्य ॥
छं० ॥ ३१ ॥

करें कर आवध डंड छतीस । तकै छल सांडय धम्म मतीस ॥
नचै भर षण्णर चौसठि नार । इसौ जुध रुद्ध अनुद्ध अपार ॥ छं० ॥ ३२ ॥
गए भगि सेन संग्राम सियार । भिदै रवि मंडल खर सुवार ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ आदि खर पांवार बर । भीम मरन तिन जान ॥
हमसि हमसि संग्हौ भिरै । षग पन मोषन पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि ।

पञ्चरी ॥ * अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध खर । बरि भिरत भंति दीसै करूर ॥
भलमली संगि फुटि परदि तुच्छ । उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बदल सु माहि दीसै प्रमान । निक्क-यौ पंचमो भाग भान ॥
१ बर सांग फोरि सिप्पर प्रमान । छरि महत चंद सो भासमान ॥
छं० ॥ ३६ ॥

मानो कि राह ससि ग्रहै धाइ । पैठयौ सरन बदलन जाइ ॥
किरवान बंकि बहू बिसाल । मनु ससिअ डोर कढ़ि चक्र लाल ॥
छं० ॥ ३७ ॥

सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ । मानहु कि चक्र हरि धरि चलाइ ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह । मानो द्वपंति पंषिय सजूह ॥ छं० ॥ ३८ ॥
कढ़ि इसी तेग धाइय पहार । मनु अमं इंद्र सज्जो संभारि ॥
विरचै जु खर बाहै विहथ्य । दिषि दूर चहु मनमथ्य रथ्य ॥
छं० ॥ ३९ ॥

भरहरै सख पाइल सुभार । रिन रूप देव दिसि खर पार ॥
गुरहरी भेरि वर भार सार । बज्जे सु तबल आकास तार ॥
छं० ॥ ४० ॥

* : न्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है ।

१ यह पंक्ति मो. को.-रु. इत्यादि प्रतियों में नहीं है ।

(१) ए. छ. को.-सूप राज ।

भक्त भक्त उभक्त बहल दिषीव । ओपम्म चंद तिन कहत हीव ॥
 कट हित्त स्वर जोधाइ मुक्कि । कहुंत बाल ज्यों बाल रुक्कि ॥ छं० ॥ ४१ ॥
 इह सार सुद्ध मिट्टिय डरेन । जानिये चीय वयसंधि तेन ॥
 परि सहस सत्त दोउ सेन बीर । रवि गयौ सिंधु तीरह सुतीर ॥
 छं० ॥ ४२ ॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना ।

कवित्त ॥ संभ हेत बहि सार । मार करि तुट्टि सनह रिझ ॥
 सो ओपम कविचंद । भ्रंग छुट्टे कि बाल पिझ ॥
 टोप ओप उत्तरै । परै विपरीत विराजै ॥
 मनो सु भाजन भोम । हथ्य जोगिनि रुध काजै ॥
 यों भच्यौ सेन सम बर सुबर । नन हाच्यौ जित्यौ न कोइ ॥
 दोउ सेन बीच सरिता नदी । निस कट्टी बर बीर होइ ॥
 छं० ॥ ४३ ॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना ।

होत प्रात सामंत । पान व्यूहं जुध रच्चिय ॥
 मोती भर सामंत । पान कूरंभ रा सच्चिय ॥
 बर हरिन्य उथ्यट्ट । पत्ति मंडी गुन राजै ॥
 लाल रूप कविचंद । मड्डि कनइक दुति साजै ॥
 नालीव रूप लीनो बरन । राम सुबर रघुवंस भिरि ॥
 कोदनि सुरंग पंती करिय । बीय सहस पुंडौर परि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

युद्ध वर्णन ।

मालती ॥ तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे ॥
 मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग घग मिलि, चित हरे ॥

(१) ए. कू. को.-नीर ।

(२) मो.-कहि ।

(३) मो.-ओट ।

(४) मो.-मुध ।

(५) ए. कू. को.-गुर ।

(६) ए. कू. को.-लाज ।

(७) मो.-नालीच ।

नव खूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह भिल मिल, निकरे ॥
 बर खूर तल छुटि, लजन नट्टय, बौर सबदन, बर भरे ॥ छं० ॥ ४५ ॥
 मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि 'नट जिम, 'तानयौ ॥
 झलमलत तेक, सकत्ति ब'किय, ओपमा कबि, मानयौ ॥
 मनौ बिट्ट जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
 धन खूर धार, अधार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
 चिहुं दिसा चाहं, खूर बह बह, जूट चखं, निड्यं ॥
 मनुं रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
 बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्यं ॥
 बर बौर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुभभयं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर
 कर पकड़ लेना ओर इन्द्रावती का चहुआन के साथ
 व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का
 उसे छुड़ा देना ।

कवित्त ॥ दिन पल्लव्यौ पांवार । सख बाहै सखन पर ॥
 चावहिसि सामंत । भीम बीव्यौ सुरंग नर ॥
 तन सट्ट अरि सट्ट । बंधि लीने उज्जैनी ॥
 बल छुव्यौ संग्रह्यौ । दई बर भंभर नैनी ॥
 कविचंद छंडायौ बीच परि । बाल सुबर सुंदर बरी ॥
 धनि खूर बौर सामंत हौ । 'जुमर जुद्ध इत्तौ करी ॥ छं० ॥ ४८ ॥
 भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके
 उनके घायलों को औषधि करना ।

दूहा ॥ भीम भयानक भग्नह्यौ । सरन राम कविराज ॥
 बर इन्द्रावति सुंदरी । मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो. ए. क. को.-घट । (२) मो.-सौनयौ ।

(३) मो.-सु बर ।

जो मति पच्छै उप्पजै । सो मति पहिले होइ ॥
 काज न विनसै अप्पनौ । दुज्जन हँसे न कोइ ॥ छं० ॥ ५० ॥
 आदर करि आने सु ग्रह । भगति जुगति बहु कीन ॥
 जे भर घाइल उप्परे । जतन जिवाइ सु दीन ॥ छं० ॥ ५१ ॥
 षग विवाह भीमंग रुचि । बाजे बज्जन लगि ॥
 मंगल मिलि अलि गावहीं । गौष गौष निस जगि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का
 पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने
 विवाह स्वीकार कर लिया है ।

भुजंगी ॥ रची वेदिका बंस सोब्रन्न सोहै । जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै ॥
 लगी वेद विप्रान सों 'गान भाई' । रचे कुंड मंडप सेषं न साई ॥
 छं० ॥ ५३ ॥

हसे तर्क वित्तर्क हासं सुरासं । घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं ॥
 उड़ै बीर 'गोधूरक' वास रेनं । करे भेरि भुंकार गज्जत्त गेनं ॥
 छं० ॥ ५४ ॥

चवै छंद बंदी ननं पार जानं । करे दान हेमं सु विद्या विनानं ॥
 भई प्रीति जेतं सुरा कव्विरानं । तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं ॥
 छं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ लिषि कग्गद चहुआन दिसि । दिय पुची भीमानि ॥
 इंद्र घरनि सम सुंदरी । कलह कुसल वर बानि ॥ छं० ॥ ५६ ॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन ।

नाराच ॥ कयौ सुन्हांन कामिनी । दिपंत मेघ दामिनी ॥
 सिंगार षोडसं करे । सु हस्त दर्पनं धरे ॥ छं० ॥ ५७ ॥
 वसन्न वासि वासनं । तिलक भाल 'भासनं' ॥
 दुनैन ऐन अंजण । चलं चलंत षंजण ॥ छं० ॥ ५८ ॥

सुहंत ओन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
 सु मुक्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ॥ ५८ ॥
 अनेक जाति जालितं । धरंत पुष्प मालितं ॥
 भूँकार हार नौपुरं । घमेंकि घुंघरं घुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
 विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी घनं ॥
 सु बुद्र घंटि घंटिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० ॥ ६१ ॥
 कनक नगा कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
 बिसाल वानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
 अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
 सहस्र रूप सारदं । सरन्न रूप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥
 इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और
 पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना ।

दूहा ॥ करि शृंगार अलि अलिन संग । रिम भिम भुंडन मंभ ॥
 बसन रंग नवरंग रंगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
 चौपाई ॥ कर गहि घग्ग मग्ग चहुआनं । बरम इंद्र सुंदरि बर वानं ॥
 मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विहाइ विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन ।

दूहा ॥ सत हथ्यी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
 हथलेवौ चहुआन कों । दियौ भीम वर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
 नग्ग चरित चौंडोल सौ । मुर सत दासिय सथ्य ॥
 दै पहुँचाइय सुंदरी । कहौ बनै बर गथ्य ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा ।

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
 पति वृत सेवा मुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
 पति लुप्यै लुप्यै जनम । पति बंचै बंचाइ ॥
 इहै सीष हम मन धरौ । ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

पृथ्वीराज का वंदियों को दान देना ।

बंदिन दान प्रवाह दिय । स्त्रिय सुंदरि जुध जीति ॥

दुहुं जस नमल छंद गुन । पढ़न कविन इह रीति ॥ छं० ॥ ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ धनि सामंत समथ्य । जैन नृप बिन जुध जित्तिय ॥

धनि सामंत समथ्य । जैन जस किङ्कि विदित्तिय ॥

धनि सामंत समथ्य । जैन बरनी बर संध्यौ ॥

धनि सामंत समथ्य । जैन भीमंग रन बंध्यौ ॥

सामंत धनि जिन कित्त बर । दिल्ली दिस पायान कर ॥

बैसाष मास अष्टमि सितह । कित्त संचरिय देस पर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन ।

दिल्लिय पति सिनगार । हट्ट पट्टन की सोभा ॥

गौष गौष जारौन । दिष्पि धिय नर सुर लोभा ॥

भूंगल भेरि नफेरि । नह नीसान म्दंगा ॥

नाना करत संगीत । ताल सों ताल उपंगा ॥

गाजंत नभ गज्जिय गुहिर । नृप प्रवेस सुंदरि करि ॥

सामंत जैत पयलंगि प्रथ । प्रथक प्रथक परसंस करि ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दहेज वर्णन ।

चार अग्न चालीस । मत्त अप्पे गजराजिय ॥

सौ तुरंग तिय अग्न । बीस चव अप्पि सु पाजिय ॥

इक अमोल सुंदरी । सत्त तिय दासिय बिंठिय ॥

सबै सथ्य सामंत । रहे भर करिय अमिंठिय ॥

सामंत करी प्रथिराज बिन । करै न को रबि चक्र तर ॥

सुंदरी सहित अरि जीति कै । गए बीर अष्टमि सु घर ॥ छं० ॥ ७३ ॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना ।

दूहा ॥ बर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि 'भीर' ॥
 अष्ट कोस दिल्लीय तें । चिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥
 उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन
 का पत्र देना ।

गय सुंदरि सन्धौ न्यपति । गवन करन चहुआन ॥
 लोहानौ सन्धौ मिल्यौ । दै कगद 'सुरतान' ॥ छं० ॥ ७५ ॥
 लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर
 दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ।

कवित्त ॥ मेषगाही सेन । दंड पल्यौ सु विहानं ॥
 अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
 बर कमान घुरसान । रोहि रंगे रा गष्यर ॥
 हवस हेल पंधार । सज्जि घल्ली फिर पष्यर ॥
 पंजाब देस पंचौ नदी । बर मंगै संगी सु बर ॥
 चहुआन राह में 'मगिली' । मते मच्छ कटन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥
 पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना ।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
 लै सुंदरि पच्छौ फिच्यौ । बर बज्जे नौसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइस ।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
 सकल सत्त दासी अनुप । नृप इन्द्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों
 सहित पृथ्वीराज के पास आना ।

(१) ए. कृ. को.-बीर ।

(२) ए. कृ. को.-चहुआन ।

(३) मो.-निगली ।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल । सार घनसार सु रम्मिय ॥
 धूप दीप सुगंध । दीप दस दिसि वृत्त जम्मिय ॥
 सेज सुरंगति रंग । हेम नग जरे जरानं ॥
 दिए भीम भूपाल । भोग साजं सु सबानं ॥
 नय देषि अचंभ समानि मन । मुष आतुर देषन महल ॥
 आनिय सु सेज चिय अलिन मिल । अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
 छं० ॥ ७६ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन ।

दूहा ॥ हंस गवन हंसह सरन । गनि गति मति सारह ॥
 रूप देषि भूल्यौ नपति । रचिय विरंचि विहह ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना ।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पज्यौ । सषी रस हार सुरत्तिय ॥
 ठांम ठांम चढ़ि हरम । सह कहकह तह मत्तिय ॥
 सुरत प्रथम संभोग । हंह हंहं मुष रट्टिय ॥
 ना ना ना परि नवल । प्रीति संपति रत थट्टिय ॥
 अंगार हास्य कसणा सु रुद्र । बीर भयान विभाछ रस ॥
 अदभूत संत उपज्यौ सहज । सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
 सुकौ सरस सुक उच्चरिग । गंध्रव गति सो ग्यान ॥
 इह अपुब गति संभरिय । कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह
 सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥३३॥



अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते ।

(चौत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना ।

कवित्त ॥ किहि भेषत प्रथिराज । किहित भेषत चिहु पासं ॥
किहि भेषत दिसि विदिसि । कहौ मनया उल्हासं ॥
किहि उमाह उच्छाह । कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचंद । देव गुरुराज विराजै ॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी । कमल गहन सुरतान बर ॥
नव रस विलास जस रस सकल । तपै तुंग चहुआन बर ॥ छं० ॥ १ ॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्ठू बन में शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना ।

नीतराव धिचीय । भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिखि कौ 'गृह भेद । लिख्यौ कग्गद सुरतानं ॥
बरष उभै षट मास । फेरि सु विहान पलान्यौ ॥
षट्ठू बन प्रथिराज । बहुरि आपेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्यहन को । बर बराह बर धिखइय ॥
दैवान जोध चहुआन बर । भिरि दुज्जन भर दिखइय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्ठू बन में शहाबुद्दीन के दूत का आना ।

सत चीता द्वादसति । खान अच्छे सु रंग दह ॥
बीय अग चालीस । सीह बर गोस कहंदह ॥
सत्त सत्त मग अच्छ । सत्त दह अगति 'पाजी ॥
आपेटक प्रथिराज । बीर ओपम अति राजी ॥

उप्परति राय षट्ठूति बर । मिलि बसीठ गोरी सु बर ॥

मंगे हुसेन साहाबदी । पंच देस बंटन सु धर ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का सामंतों से सलाह लेना ।

मुक्कि राज आषेट । स्वर सामंत ^१बुलाइय ॥

सुबर साह गोरीस । आनि उप्पर घरि आइय ॥

मंगे धर पंजाब । घान हूसेन सु मग्गे ॥

इष्ट भत्त अवसान । दिए कग्गद लिषि अग्गे ॥

संमुहे स्वर सामंत बर । दै मिलान संम्हौ घरिय ॥

चालंत जेम लगत दिवस । भुकि लग्यौ गोरी ^२गुरिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ बेगि स्वर सामंत सह । मिले जाइ चहुआन ॥

सिंधु विहथ्ये दूत मिलि । गोरी वै सुरतान ॥ छं० ॥ ५ ॥

अनंगपाल तीरथ्य गय । बंधव रण सुरतान ॥

बैर बीर ठिल्लिय ^३तिनह । बर मंगै चहुआन ॥ छं० ॥ ६ ॥

शहाबुद्दीन के दूत का बचन ।

कवित्त ॥ बर बसीठ उच्चरै । साहि जानौ पहिलौ ना ॥

अप्यौ पहु हुस्सेन । साहि ^४जानौ दस गुंना ॥

कंक बंक करते । नरिंद कबहुक घर छिज्जै ॥

भिर गोरी तिन भरह । रहट घट्टी घट भज्जै ॥

दुप्परह छांह दौसै फिरत । भावी गति दिष्पी किनह ॥

मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर । करहु एक बुझी सुनह ॥ छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नहीं जानता

कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख

के लिये कर्तव्य छोडना परे है ।

(१) मो.-बुलाये ।

(२) मो.-गुरिय ।

(३) मो.-तिनह ।

(४) मो.-जादौ ।

अरे ठीठ बस्सीठ । कौन हाथी को जित्यौ ॥

किन वित्तग वित्तयौ । कोन वित्तग अब बित्यौ ॥

पंच तत्त पुत्तरी । पंच हथ्यन कर नचै ॥

अजै बिजै गुन बंधि । चित्त तामस रस रचै ॥

बंछै जु सुष्य फल राजगति । वह करतार सु नन करै ॥

उच्चरै किति छल ना रहै । तब लगगै गल बल परै ॥ छं० ॥ ८ ॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै वार मैंने
उसे बंदी किया ।

दूहा ॥ कै कोसां दिल्ली धरा । कै कोसां गजान ॥

षंडा सौ कर बंधिया । चहुआना सुरतान ॥ छं० ॥ ९ ॥

मैं रष्यौ *हुस्तेन बर । बर बंध्यौ सुरतान ॥

उठ्ठाए बस्सीठ बर । बर बज्जै नीसान ॥ छं० ॥ १० ॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस
ऋतु से उपमा वर्णन ।

मोदक ॥ दसमत्त पयो लह, पंच गुरं । षग पन्न हरे बिष पत्त बरं ॥

बर सुइ प्रयान हुलास छबी । कहि मोदक छंद प्रमान कबी ॥

छं० ॥ ११ ॥

जु सजी चतुरंगन दान दियं । कबि दोउअ सेन उपम कियं ॥

सुत वंजन ज्यों बुधगति पढ़ी । सति सीतल बात प्रमान बढ़ी ॥

छं० ॥ १२ ॥

बर रत्त रषत्त सुरत्त वनं । तिन को छवि पावस सज्जि घनं ॥

सु वजे बर बीर निसान वजं । सु मनो घन पावस सज्जि गजं ॥

छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. क. को.-विन । (२) ए. क. को.-बर । (३) ए. क. को.-पुरसान ।

(४) मो.-हरं । (५) मो.-सत । (६) ए. क. को.-बाल ।

* हुसेन शब्द से यहां मीर हुसैन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है ।

बजावत बीर जंजीरन सूर । कँपै सूर बीर पयालनपूर ॥

उड़ि रेन चिहूँदिसि विष्टुरियं । मुदरी द्रग अठुत धुंधरियं ॥

छं० ॥ १४ ॥

तिह ठौर रसं अप बंधव से । तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे ॥

बर जगत नेन सु मेन मुचें । तहां कूर नसें नर आइ नचें ॥

छं० ॥ १५ ॥

अम सूर तिनं अभिलाष रिनं । बर ग्रह बलं बर बंसु तनं ॥

कल किंचित संकर सूर दियं । बर बीर मजादन लाज लियं ॥

छं० ॥ १६ ॥

सहनाइय सिंधुअ अहरियं । तिन ठौर भयानक संचरियं ॥

बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं । बर बीर अवाज दिसं बढियं ॥

छं० ॥ १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन
की तरफ बढ़ना ।

गाथा ॥ तें बीरं जल गंभीरं । आव यों उष्पटी सेनं ॥

गोरी दिसि चहुआनं । चहुआनं गोरीयं साहि ॥ छं० ॥ १८ ॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का
युद्ध के लिये उत्सुक होना ।

कुंडेलिया ॥ इह सु राज आतुर परिय । सुरतानह प्रथिराज ॥

भूमि भार कछु बढ्यौ । सो उत्तारन काज ॥

सो उत्तारन काज । परे आतुर दोउ दीनह ॥

तिन अर बस चर परे । को इन छट्टै मति हीनह ॥

अपन सुसिंह बहुरे सुरह । चकई चक मुकै नहीँ ॥

अपन सुहृथ भरही परै । दया न किजै मन इही ॥ छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. क. को.-परिय ।

(२) ए. क. को.-छट्यौ ।

(३) मो.-पार ।

(४) मो.-छंडे ।

(५) ए. क. को.-सुहर ।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन
को दूतों द्वारा समाचार मिलना ।

दूहा ॥ चढ़त सिंध सुरतान दल । दूत सपत्ते आइ ॥

चर चरित चहुआन दल । कहै साह सों जाइ ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

कवित्त ॥ नहिन इंद्र प्रथिराज । सोम नंदन सिवरं दिसि ॥

बर इंद्रह दीसै न । महल मंड्यौ सु दुहु निसि ॥

जवहीं हम संचरे । काल तबहीं दिसि पासं ॥

परत वाह लघ्यंत । दिष्ट देवन सुष बासं ॥

लच्छीन ग्रीव बस बीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥

मेलान कोस परपंच को । गौरौ वै संहौ चलिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूखीरों का उत्साह करना और
कायरों का भय भीत होना ।

दूहा ॥ इह अवाज चहुआन दल । बंटि सेन सु बिहान ॥

काइर भर सह उच्चरै । कहि बंधन सुरतान ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि साहि । चरनि वरज्यौ सु बिहानं ॥

भुभभ रहै कै जाइ । जु कछु पत्तौ चहुआनं ॥

बरन मेच्छ बर हिंदु । सुनत रन पन कर हेरी ॥

जय जानी अन चंय । पंच चतुरंग सु भेरी ॥

भुअ बीर रूप गोरी सु बर । मुक्कि भयानक भट्ट जिम ॥

पलट्यौ भेष देषत सयन । बर बज्जै नीसान तिम ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

चंद्रायना ॥ बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ ।

उड्डि उड्डगिय रेन, सु मेरनि भान भय ॥

(१) ए. क. को.-पुल ।

(२) ए. क. को.-त्रीष ।

(३) मो.-नीय ।

(४) मो.-तट ।

गोरी वै भौ राह रयन हर मिगई ।

गज असवारन स्वर निब्रत सु लगई ॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संध्यौ ॥

सब पाइ पिंगल सावरे लहु, बरन अछिर बंध्यौ ॥

लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरीयं ॥

गज मह नहय छिरह भहय, अननि दिन दिन जोरय ॥ छं० ॥ २५ ॥

घन चढ्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग उरबरे ॥

तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे ॥

गजदंत कंतिय झलकि उज्जल, पिप्पि पंतन रा इयं ॥

रवि किरनि बहल पसरि धावै, वाय पंकति सज्जयं ॥ छं० ॥ २६ ॥

गज करत दंत सुमंत जरध चंद, उप्पम मंडिकै ॥

मनो बग पंतिय वार, उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥

धर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छवि कवि तामयं ॥

मनों मेघ वरषत विज्ज कोधत, अभ्भ बुढ़ि गिरि स्थामयं ॥ छं० ॥ २७ ॥

गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥

धर चलत गिरवर बरुन बारुन, स्याम बहल हलिचले ॥

भूटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समथ पसु पुज्जवै ॥

अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु लज्जवै ॥ छं० ॥ २८ ॥

चय लप्प मीरति साह गोरीय, भार भुभुभ अलुभभवै ॥

पुरसान घान अरक्क आरव, सज्जि सेन सभंझवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि

अव की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भूमरावली ॥ सजे बर साह तुरंगम तुंग । लजै कविचंद उपम कुरंग ॥

सितं सित चोर गुरै गज गाह । तिनं उपमा बरनौ नन जाइ ॥

छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कू. को.-उडव ।

(२) ए. कू. को.-इम्भ छविहता, छविह ।

(३) मो. झलकंत ।

(४) ए. पुज्जवै ।

(५) ए. कू. को.-अवंझवै ।

जु सजे हय गोरियसाहि घरे । तिन देषि रबी रथ के विसरे ॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करी । सु मनो नदि पूर छिली दुसरी ॥

छं० ॥ ३१ ॥

१कहि चंद कविंद इंदं कवितं । गुरु बंक पिषं मन कै चढ़तं ॥
बजि बाज कुहू धर सह पुरं । सु मनो कठतार बजंत तुरं ॥

छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुरं सित सोभ घमे । मनो सेत वेजरन भान उगे ॥
नभ कै तिमरं जित के समरं । मनु उठि किरन सु पाल परं ॥

छं० ॥ ३३ ॥

विय ओपम चंद बनौ बनिकै । सु धसें मनु गंग तरंगनि कै ॥
जग हथ्य बने हय के सिरयं । गलि प्रवत हेम द्रुमं बरयं ॥

छं० ॥ ३४ ॥

बर पष्पर सोभ करै तनयं । मनु अर्क अरक विचे घनयं ॥
तिनकी हर वाय फुलिंग सजै । सु कहै कविचंद कुरंग लजै ॥

छं० ॥ ३५ ॥

बुहु रैनन आसन जी डरयं । मग मत्त मनो बहरे बनयं ॥
मन मत्ति तिहां इत अत्ति पढ़ी । हय नष्यत रागन सांस कढ़ी ॥

छं० ॥ ३६ ॥

विय बाय अरकन बंध चढ़ै । कविचंद पवकन बाद बढ़ै ॥
सु उड़ै नन धावत धूरि पुरं । गतिमान सुसील विसाल उरं ॥

छं० ॥ ३७ ॥

पय मंभूत अश्वत आतुरयं । विरचे नच पातुर चातुरयं ॥
दुहु पार अषार अबड षरी । मनु गावहि इंदुन बंध धरी ॥

छं० ॥ ३८ ॥

हय अपिय अत्तन साहि बरं । जु गहो चहुआन पयाल पुरं ॥

छं० ॥ ३९ ॥

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का
युद्ध के लिये सेना तैयार करना ।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु बर । चढ़िग घान जमसोज ॥

प्रात सेन चतुरंग सजि । उठि घान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना ।

चौपाई ॥ ढल^१मिली ढाल चिहुं^२ दिसि बनाइ । डम्भरी उठि आकास छाइ ॥

अचरनचरन गोरीस^३ साईं । सेन चहुआन हथ्ये बनाई ॥

छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना ।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय । चावहिसि अरुनग ॥

मुष गोरी चहुआन भिरि । ज्यों रावन लागि अग ॥ छं० ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥ समहौ रन चहुआन सपट्टिय । वजिग वाय सुभिभन^४ नदि उट्टिय ॥

धुंधर अन बहर निसि भहौ । सुभिभन न अंघ कन सुनि नहौ ॥

छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन ।

कवित्त ॥ अट्ट अट्ट जोगिनिय । सुक सन्हौ सुरतानं ॥

दिसा खल दिसि बाम । बैर कन्हा चहुआनं ॥

सिंघ बाम भैरवी । गहक बोलौ गोरी दिसि ॥

गुर पंचम रवि नवों । राह ग्यारमो सुरंग ससि ॥

ईसान मध्य देवी पहकि । गहक मभभ घूघू वहक ॥

आकास मझि गज्यौ गयन । परों बूंद बेवंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ ज्यों जगदीसह कान दै । तकसी रन किहुं कीन ।

मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें । भिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

(१) मो.-मली ।

(२) मो.-मम्भरी ।

(३) ए.-समाई ।

(४) ए. कृ. को.-न दिट्टिय ।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य वजना और उससे सूर वीर
 लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न
 होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध
 हो युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ परे धाड़ धोड़ दीन हीनं न जुड़े । मुषं मार मारं तिनं मान सङ्गे ॥
 परी आवधं होड़ बज्जै निसानं । बजे हक्क सूरं दमामें न जानं ॥
 छं० ॥ ४६ ॥

बढ़ै आवधं हथ्य सामंत सूरं । घुर वै निसानं बजै जैत 'पूरं ॥
 कढ़े वे सनाहं झनक्के उनंगी । मनो आवधं हथ्य बज्जै चिनंगी ॥
 छं० ॥ ४७ ॥

परै पीलवानं मदं 'मरक दंती । ढली ढाल ढालं ढलकं तुरंती ॥
 फुरै हथ्य जनं मुरक्की उरक्की । मुरै धार धारं सुधारं मुरक्की ॥
 छं० ॥ ४८ ॥

तुटै सिप्परं कोर फूलै समंती । ग्रस्यौ राह सूरं छटै नभभ हुंती ॥
 परै सार तीरं छनकंत बज्जै । सदं तीतरं जेम सों पच्छि गज्जै ॥
 छं० ॥ ४९ ॥

वहै सोर गोरी पछै दै सभानं । भगै पच्छिनी पंति पावै न जानं ॥
 तुटै सीस जुभक्कै कमधंत नचै । चलै रुद्धि धारं चिह्नं पास गच्छै ॥
 छं० ॥ ५० ॥

धरा भारती गंग पारथ्य आई । मनो उपठि सो सिंध को मिलन धाई ॥
 फुटी वारि धारं चली ईस सीसं । लगे धार धारं रजं रज्जकीसं ॥
 छं० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोही परे बूंद यानी । दुंढी लुथ्यि पावै न नही वहानी ॥
 मनं मोद लै सीस मुद्राह कीनी । ॥ छं० ॥ ५२ ॥

उठं उड्डं सीसं उपमा समूलं । मनो पावकं प्रलय धौं श्रीन लल्लं ॥
 दोऊ दौन धाए मनें कोपरीसं । तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं ॥
 छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्यि लुथ्यी अलुथ्यी जबै वै । इसौ जुड़ देषौ न दानव देवै ॥
 छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का
 साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चतिय पहर पर पहर । बीर घरियार ठनकिय ।
 गोरी वै सो हथ्य । चंपि चहु आन सु तक्रिय ॥
 घरिय इक्क बनि सेन । खुर सामंत परषिय ॥
 धरि ओड़न करि बग । बैर सु विहान परकिय ॥
 कर बार धारि सिप्पर करह । एक होइ उप्पर तरै ॥
 दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह । उसरि सेन सम्हौ भिरै ॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना ।

षिक्ति नंथ्यौ है नरिंद । भूभि धुज्जिय पुरतारं ॥
 मनौ बहर गज्जयत । सह पर सह पहारं ॥
 उड्डिय नाल चमंकि । मभक्त धुंधर छवि लगिय ॥
 रवि ओपम कविचंद । चंद मावस घन उगिय ॥
 अरि सेन भगि दिसि विड्डरिय । परे मध्य सेना घनिय ॥
 धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ । इहु अरि तें तिन वर गनिय ॥
 छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम ।

इत्त पान मारूफ । फिस्त उसमान पान ढहि ॥
 इन दुज्जन हय नंषि । बाग आजान बाह गहि ॥

(१) मो.-वक्रिय ।

(२) ए. कृ. को.-सिप्पर ।

(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरुजंत ।

इतै दौह अथ्यम्यौ । खर बर सिंधु 'सपन्नौ ।
 मुकत तटु मिलि खर । स्याम रन अप्य अपन्नौ ॥
 साषला खर 'सारंग ठहि । जुरि जुवान पंचाइनौ ॥
 केहरौ गौर अजमेरपति । पय्यौ भुभिक्त रन भाइनौ ॥ छं० ॥ ५७ ॥

सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर । दिसि रत्तौ धवलाइ ॥
 सैसब में जुवन कछू । तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥ छं० ॥ ५८ ॥
 दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की
 तैयारी होना ।

कवित्त ॥ जाम निसा पाछली । सेन सज्जिय दोउ बीरं ॥
 सामंता चहुआन । आनि गोरी कछमीरं ॥
 भान पयानन भयौ । करे द्रिग रत्तह चट्टिय ॥
 ता पहिले पायान । जोध रन असुरन कट्टिय ॥
 अदिहार बीर गोरी सुबर । चाहुआन दिन सुदिन घन ॥
 करतार हथ्य कित्तौ कला । खरन मरन तकसीर नन ॥ छं० ॥ ५९ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन ।

भुजंगप्रयात ॥ पय्यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी । चपौ गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी ॥
 तहां बाहुयो बीर बीरं नरिंदं । लग्यौ धार धारं सची कित्ति चंदं ॥
 छं० ॥ ६० ॥

अनी एक मेकं घरी अइ पच्छी । फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी ॥
 दोऊ दोन बाहै दोऊ हथ्य लोहं । पय्यौ जानि वाराह पारडि रोहं ॥
 छं० ॥ ६१ ॥

कटे कंध बंधं कमंधं निनारे । मनो पत्त रत्तं वसंतं सुडारे ॥
 ननं अश्व चल्लै चलै हथ्य रोजं । ननं चित्त चल्लै रबीं रथ्य दोजं ॥
 छं० ॥ ६२ ॥

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं । तिनं की उपमा कवौचंद गाहं ॥
 ग्रहं पत्ति अग्नै रहै ज्यों कुलट्टं । चितं वृत्ति चलै अग्नै स्वामि घट्टं ॥
 छं० ॥ ६३ ॥

बरं कज्ज माला ग्रहीं रंभ सथ्यं । चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्यं ॥
 रही रंभ रंभी टगंटग आई । मनो पुत्तली कट्ट करसी लगाई ॥
 छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई । मनो पातुरं चातुरं सो दिषाई ॥
 दोज बाह सेना दोज बीर ठेलं । मनो डिंभूरु जानि 'हड्डूड पेलं' ॥
 छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब इक तेग साहं । करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं ॥
 जब विड्डुरी सेन गोरी नरिंदं । दिखे थान थानं मनो प्रात चंदं ॥
 छं० ॥ ६६ ॥

परे धान चौसठि दुहुं बाहु राई । दुहं मुकती रास कवि कित्ति गाई ॥
 छं० ॥ ६७ ॥

**शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन
 सेना का जोर पकड़ना ।**

टूहा ॥ परत साहि गोरी सुधर । है गै भूमि भयान ॥
 रन रुंध्यौ सुरतान कों । परी बींठि चहुआन ॥ छं० ॥ ६८ ॥

**शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना
 और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना ।**

भुजंगी ॥ परी बींठ गोरी सुरे मौर धानं । तबै साहि गोरी गच्छौ कोपि वानं ॥
 न कोकंध कट्टै चाहुआन तिनं । पन्थौ धाड़ पावार भर सलष दिन्नं ॥
 छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान साह्यौ । तहां मौर मारुफ अग्नै गुरायौ ॥
 घरी अइ भुभयौ करी छत्र धारं । बहै सब सामंत विचि तौन धारं ॥
 छं० ॥ ७० ॥

तुटै आवधं सब अरि हथ्य लाजी । तबै आइ सीसं ^१गुरज्जंत वाजी॥
 गजं गहन प्राहार निट्टे ^२ढहायौ । तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ ॥
 छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज
 के सम्मुख प्रस्तुत करना ।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विहान । हथ्य आप्यौ चहु आनं ॥
 चामर छत्त रषत्त । तषत्त लुट्टे सुरतानं ॥
 गोरी वै हुस्सेन । बीर ^३तुट्टे आहु द्विय ॥
 मान तुगं चहु आन । साहि मुष के बल पुट्टिय ॥
 मध्यान भान प्रथिराज तप । बर समूह दिन दिन ^४चढ़े ॥
 जस जोति मंत संभर धनिय । चंद बीज जिम बर बढ़ै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक
 मध्ये गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन
 नाम चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३४ ॥



अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं
कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूँ और आप
इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त ॥ कितक दिवस ^१निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूँ सु कांगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेह में वाचा दषिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ल पच्छै फिरि अषिय ॥
हम्मीर भीर अगों करै । दल ^२भज्जै मति सत्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा ॥ चलिष राज कांगुर दिसा । ^३दयौ ^४भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय । कै जीतौ नृप भान ॥ छं० ॥ २ ॥
दूत के बचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का
क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद । सबद उभार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अण्णन बर ॥
^५जो षजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
^६जो इचना अति सूर । तोइ का ^७भाठी कोपै ।

(१) मो.-मिस ।

(२) मो.-भगौ ।

(३) मो.-दिसौ ।

(४) ए. कृ. को.-भोट ।

(५) ए. कृ. को.-जौ षजूआ ।

(६) ए. कृ. को.-जौ इचना ।

(७) मो.-भावी ।

हूँ नीति जानि अनित न करि । तूँ लोभी आतुर अतुर ॥
इनि बात मोहि आगे अवन । आई फुनि जैहै सु तुर ॥ छं० ॥ ३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहाँ की बात
निवेदन करना ।

दूहा ॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिच्यौ । कही राज सौँ बत्त ॥
तमकि तोन लीनौ न्वपति । मनोँ सुजोधन पथ्य ॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से मानराज का
बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना ।

कवित्त ॥ चढ़िग राज प्रथिराज । सथ्य सामंत खर भर ॥
है गै रथ चतुरंग । गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान । आइ अड्डो षग बज्यौ ॥
जनु कि मेघ में बीज । तमकि तातौ होइ रज्यौ ॥
आवत भरत भारत परत । ओन धार 'धर पैर चलि ॥
इत उत्त खर देखै लरत । घरौ पंच रवि रथ न हलि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न
होकर नृत्य करना ।

दूहा ॥ भिरत भान अति छोह करि । जन जन मुष मुष जानि ॥
घोर विछुट्टी दामिनी । सब चकचौधिय आनि ॥ छं० ॥ ६ ॥
कवित्त ॥ षग बाहिय भिरि भान । अरिन अड्डर धर किनौ ॥
जय जय मुष उच्चार । सीस उम्मापति लिनौ ॥
रिझरु लिंग उत मंग । अमिय विष जंग सु ढरयौ ॥
ठंडौ मंडि असंध । नहि भौ अंग जु परयौ ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा । रुद्र रुद्र मुष हास हुआ ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन । नव रस सुनहिं नरिंद हुआ ॥ छं० ॥ ७ ॥

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना ।

दूहा ॥ स्वम भिलाष गंधर्व 'हुअ । नारद तुम्सर गान ॥

संकर कल किंचित भयौ । चाहुआन प्रमान ॥ छं ० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना ।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिभान । परी अरि मग अरिष्टह ॥

रन मुक्कि न ग्रह 'गइय । वरत अच्छरि नन दिष्टह ॥

कहुं त मंस कहुं अंस । हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ॥

ब्रह्मथान शिवथान । थान देषिय न जम्म जह ॥

दीयौ न अगनि रवि भेद ननि । तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥

इह दीष चरित प्रथिराज ने । कवित 'एह जुग जुग चलयौ ॥

छं ० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना ।

इह परंत चाहुआन । मोष लभ्यौ सु रथं रवि ॥

दिन पूरन पुनि भयौ । मिटे भंकरन भान छवि ॥

दिन पूरन पुनि भयौ । हरह भग्गी 'उतकांठं ॥

भग्गी मनोरथ रंभ । 'ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥

भल हलत नीर काइर मुषन । प्रलय सुभर रनरत्त रह

दिन पति पतन्न सह तप्प तन । भान भान भेदंत 'नह ॥ छं ० १० ॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान

करना और देवी का कर कहना कि मैं

होनहार नहीं मेट सकती ।

तब कंगुर पालहंन । चित्त चिंता उप्पन्नी ॥

सुनि भोटी भर मरन । सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

(१) मो.-भय ।

(२) मो.-नइय

(३) मो.-एक ।

(४) मो.-उप कंठं ।

(५) ए. क. को.-प्रतिषों में "चतुरानन

भगिचेत टारि रथ मग मुर्गली" (सुगती) अधिक पाठ है ।

(६) मो.-सह ।

निसि अंतर करि ध्यान । मात कंगुर आराधी ॥
 सो आई न्वप सुपन । कहै सुनि बात अगाधी ॥
 'सोभति अनेक जानै न को । मो सेवा को परि लहै ।
 भावौ विगति हों प्रकृति हौं । तो प्रधान भूठह कहै ॥ छं० ॥ ११ ॥
 सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न
 का हाल सुनाना ।

चौपाई ॥ वचनन मात कहौ समझाइय । निसि पल भूमित गमत बरु आइय ॥
 भोटी न्वप कन्हा 'पै आइय । काली कन्ह कि हंकि जगाइय ॥
 छं० ॥ १२ ॥

तब कन्हा परधान बुलाइय । मात वचन कौ जुगति सुनाइय ॥
 दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय । करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
 छं० ॥ १३ ॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न
 करें मै शत्रु का मान मर्दन करुंगा ।

अरिख ॥ का चिंता सु विहानं । * कन्ह होइ जाकै परधानं ॥
 स्वामि बचन किन्नौ परमानं । लरि भंजौ दुज्जन चहुआनं ॥
 छं० ॥ १४ ॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना ।

कवित्त ॥ सो सुपनंतर राज । रैन दिठ्ठौ सु कह्यौ रचि ॥
 बर बंसी 'ससिपाल । पल्ह आयौ सु सेन सचि ॥
 लष्य एक असवार । लष्य दह पाइल भारी ॥
 अष्य सेन उष्यरें । जुगं जुग गहि उचारौ ॥
 घरि अइ अइ अप सेन मुरि । पच्छि उररि दुज्जन परिय ॥
 चढ़ि गयौ बौर परबत गुहा । सामंता कुंडल फिरिय ॥ छं० ॥ १५ ॥

(१) ए. क. को. मो भति ।

(२) ए. क. को. न्वै ।

* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम " कन्ह " था ।

(३) मो.-सिसुपाल ।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को
कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना ।

बर रघुवंस प्रधान । राज मंड्यौ विचारिय ॥
बोलि बौर हम्मीर । भेद जानै धर सारिय ॥
बाट घाट बन जूह । धरा पड्डर नद घाट ॥
अव्व जान न्विमान । कोन पड्डर 'बन बाट ॥
अगवान देहु नारेन बर । कछुक मंत जंपौ सु तुम ॥
जालंधराज जंबू धनी । स्वामि भ्रम 'मंडहित हम ॥ छं० ॥ १६ ॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को
सहज ही जीतूंगा ।

सुनि हाहुलि हम्मीर । हथ्य जोरे त्रप अगौ ॥
सकल भूमि कौ भेद । राज जानै ए भगौ ॥
अति सु विकट बन जूह । चढ़ै संग्राम न होई ॥
अश्व पाय गज पाइ । चढ़न किहि ठौर न कोई ॥
बन विकट जूह परबत गुहा । बर बेहर बंकम विषम ॥
दारुन्न भयानक अति सरल । बर प्रस्तर नहिं जल सुषम ॥
छं० ॥ १७ ॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और
उसके विकटपन का वर्णन ।

भुजंगी ॥ बन जा विषमं विषं बाज कंटं ॥ घनं व्याघ्र आघातता नह घंटं ॥
षहं जा षजूरी घनं जूथ भोरं । जिनै वास आसं लगे पंक मोरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

घनं पामरं जाति बंधै धनंकी । गिरं देखतें गति भाजै मनंकी ॥
भरै भरनि भोरं सु आघात सोरं । जितें सहया सह ता अंग मोरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

हयं तज्जि राजं चलै हथ्य डोरं । इकं इक्क पच्छै बिपं जन्न जोरं ॥
 बजै सह सह परछंद उठ्यै । सुनै कन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्यै ॥
 छं० ॥ २० ॥

इकं होइ राजं पथं सत्त रुड्यै । दियै हथ्य तारी तिनं कोन बड्यै ॥
 तवै मुक्कले राज नारेन बीरं । ननं षग मगं सधै इक्क तीरं ॥
 छं० ॥ २१ ॥

नपं काम नाहौ प्रधानं प्रवानं । दोज सेन रघुवंस अरिसेन भानं ॥
 छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां के सुपुर्द
 करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना ।

दूहा ॥ मानि मंत चहुआन कौ । मुकलि दीय दोइ बीर ॥
 ताजौ तुंग समप्पियै । षां हुसेन दिय भीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर
 चढ़ाई करना ।

कवित्त ॥ तब लगि पान सु पान । हथ्य नारेन मंडिलिय ॥
 नमि चरननि कर बाहि । रोस आरोहि अंघि विय ॥
 ताजौ तुंग सु अथ्यि । जेन रुक्के बर विय करि ॥
 नीतिराव कुठवार । संग दीनौ नरिंद बरि ॥
 बारंग बीर बज्जर बहिर । निधि निसान बज्जे सुभर ॥
 नेपुरह अप्प बरनौ बरा । जस मुकट्ट प्रथिराज बर ॥ छं० ॥ २४ ॥

कंगुर दुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन ।

बर भरियं बर अप्प । लियौ फुरमान नरिंद ॥
 लाज राज विंटयौ । जानि पारस बिच चंदं ॥
 श्रीय काज श्रीराम । सु छल इनमंतह तैसे ॥

(१) ए. कू. को.-रुड्यै ।

(२) ए. कू. को.-बड्यै ।

(३) ए. कू. को.-प्रधानं ।

(४) ए.-खान ।

स्वामि काज सामंत । बियौ धर मभभूव जैसे ॥
 जस तिलक हथ्य चहुआन कौ । दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
 रवि वार सुरंग सु सत्त में । गुन प्रमान जंबुअ पुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥
 नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही
 शुभ शकुन होना ।

पड्वरी ॥ नारेन जंबु गढ़ चढ्यौ काज । बोलहित वाम कौदहति ताज ॥
 दाहिने मग्न संमुह फुनिंद । नौरूप बोल बोलहित हृद ॥
 छं० ॥ २६ ॥

हंकरै सिंह कोदहति वाम । उत्तरै 'देवि दाहिन सु ताम ॥
 दिसि वाम कोद घू घू टहक । फुनि करै हक केकी पहक ॥
 छं० ॥ २७ ॥

उत्तरै 'दार वाराह 'सथ्य । डहकरै सांड दिसि वाम तथ्य ॥
 'बन्नर विरूर दाहिनै सह । सुनियै न कन्न नंदनी नह ॥ छं० ॥ २८ ॥
 'कुरलंत वाम सारस समूह । मुकड़ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
 कुरलेत कग चित्तहत हीन । हंसौय वाम आनंद कीन ॥ छं० ॥ २९ ॥
 हां कहत हल्ल करि गट्ट मथ्य । चहुआन पिथ्य रिभभेव तथ्य ॥
 हाहल्लराव दीनौ विरह । आनंद बज्जि नीसान नह ॥ छं० ॥ ३० ॥
 सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना ।

दूहा ॥ हां कहतें ढीलन करिय । हलकारिय अरि मथ्य ॥
 * तायें विरद हमीर को । हाहुलि राव सु कथ्य ॥ छं० ॥ ३१ ॥
 चढ़ि चले बंदन 'सुकन । भागह जे प्रथिराज ॥
 बर प्रब्रत बैदेस सधि । बीर बजौ रन बाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन ।

(१) मो.-देव ।

(२) ए. क. को.-डार ।

(३) ए. क. को.-रथ, हथ्य ।

(४) ए. क. को.-बंदर ।

(५) क.-कुरलेत ।

(६) मो.-सगुन ।

* छंद नं. ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो. प्रति में नहीं है ।

पद्मरी ॥ आएस लीन जुगिन नरेस । सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुथ्य गौ गंठि थाल । अरि अंग घतंग भै पाति 'काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंवरि विपान । अट्टार टंक घंचै कमान ॥
धज सुरंग रत्त गजराज हालि । जानं कि भमि बहलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति इत्त दहकि धर धरकि हल्लि । चतुरंग सैन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि । गढ़ मुक्कि गढ़ ओछंडि थान ॥ छं० ॥ ३५ ॥
आबाज बज्जि दस दिसा मान । भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि । रो रथ्य नारि चकि नय सु चकि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुक्कल नग नगन चट्टि । मंगलिक जानि वनौर कट्टि ॥
फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि । नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नघैति हार कहूं बाल नारि । तिन की उपम बरनी सुभार ॥
तुटंत मुत्ति पग पगन मान । नघंत तीय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाड़ चित चिचसाल । जानहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य जाइ रहै घंचि सास । मानहु कि रच्चि चिचह बिलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल बाम । अगौ सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार । उतज्यो राह रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चिचहति साल रष्यीति बाल । नह परहि बंदि ते तिहति काल ॥
दभभ्वै वाहि मदिरति रिभिभ । चल्लै न पाइ मानं उलभिभ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. क. को.-षाल ।

(२) ए. क. को.-फेटे, फेटे ।

(३) मो.-नाहि ।

देघंत सुमन गति भई पंग । रुठई काम रति कोटि रंग ॥

नठई उगति तिन देषि बाल । मानो कि रास मभभे गुपाल ॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना ।

दूहा ॥ बंस दुजन घर गाहि फिरि । तब लगि दुजति सपन्न ॥

एकलै रघुवंस ने । लै गढ़ सबर प्रपन्न ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को

गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वी-

राज के पास जाकर विजय का हाल कहना ।

कवित्त ॥ सबै स्हर सामंत । पलह बंध्यौ गढ़ लिन्नौ ॥

थप्यौ राम नरिंद । हथ्य फुरमान सु दिन्नौ ॥

तुम रहियौ इन थान । जाइ कंगुर संपत्तौ ॥

मिलौ जाइ प्रथिराज । राज सम्हौ प्रापत्तौ ॥

आनंद फते तप तुभक्त बल । धन समूह आइय सु धर ॥

सुभर सुघाइ तेरह परे । बिय दाहिम नरिंद बर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और

भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को

अपनी पुत्री व्याहना ।

सबै भूमि अरि गाहि । आन फेरौ चहुआन ॥

पथ्यौ भान रघुवंस । बीर बंचे फुरमान ॥

मालहन वास नरिंद । राज रथ्यौ तिन थान ॥

बर बंध्या अरि साहि । घून कळ्यौ परवान ॥

बर बरनि बीर प्रथिराज बर । बर रघुवंस बुलाइयौ ॥

दिन देव दसमि बर भूमि बर । तदिन सु रंगन पाइयौ ॥ छं० ॥ ४५ ॥

नियत तिथि पर व्याह होना ।

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज बर । बर सुंदरी सु लच्छ ॥
 देव व्याह दुज्जन दवन । दिन पड़रौ सु अच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
 भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन ।

कवित्त ॥ 'दच्छिन वृत्त सुनाभि । तुंग नासा गज गमनी ।
 सासनि गंध रु षंजु । कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिषत ।

बर जंघन मृदु पंथ । कुरंग लज्जे छवि हीनं ॥
 इह ओपम कविचंद । हृथ्य करतार सु कीनं ॥
 बर बरनि बीर प्रथिराज बर । घन निसान बज्जै सुवर ।
 जबूअ राव हम्मीर ने । धम्म काज दीनौ 'सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन
 और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन
 के साथ भोग विलास करना ।

बर बरनी दै हृथ्य । गुंट अण्णे जु एक सौ ॥
 चौर मृगमद मधुर । चम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
 अठ्ठ सुरंग गजराज । बाज ताजी सौ दासी ॥
 बर लच्छी चतुरंग । चंद 'पिप्पिय सोभासी ॥
 ठिल्लीव नाथ ठिल्ली दिसा । अरिन जीति बर परनि कै ॥
 संजीव काम बोलिय सु ठिंग । बर निसान बर बरनि कै ॥ छं० ॥ ४८ ॥
 दूहा ॥ आयौ न्वप ठिल्ली पुरह । बर बज्जे न्विघोस ॥
 डोला पंच नरिंद संग । मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै
 नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिप्यते ।

(छत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्पूर जाना ।

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ । सुनि अवाज सुरतान ॥

आषेटक प्रथिराज गय । षट्पूर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती

नामक एक सुंदर कन्या थी, और चँदेरी में शिशुपाल

वंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था ।

कवित्त ॥ रा जहव रिनथंभ । भान पंचाइन भारी ॥

हंसावति तिन नाम । हंसवति गत्ती सारी ॥

^१अवनि रूप सुंदरी । काम करतार सु कौनी ॥

मन मन्नवै विचार । रूप सिंगार स लीनी ।

लप्यन वतीस लेच्छी सहस । अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥

अस्तम उदै वर ^२बक्र बिच । दिषि न कहुं चक्रंत रवि ॥ छं० ॥ २ ॥

हंसावती की शोभा वर्णन ।

नाग बेनि सुनि पौन । कंति दसनह ^३सोभत सम ॥

अंघि पदम पच मनु । भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥

सिषा नाभि गज गत्ति । नाभि दछना वृत सोभै ॥

सिंघ सार कटि चारु । जंघ रंभा जुषि लोभै ॥

सुंदरी सीत सम वरि चरित । चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥

सत पच गंध मुष ससिय सम । नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

चंदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना ।

गाथा ॥ बर बंसी ^१ससिपालं । चिंतं जस संभलं बालं ॥

मन बयनं तन ^२बहुँ । रिनथंभं ^३मुक्कवै दूतं ॥ छं० ॥ ४ ॥

चंदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना ।

अरिल्ल ॥ दूत आइ बर बीर सपत्ते । जगद हथ्य दिए बर तत्ते ॥

हंसावति अप्पै बर ^४रंभं । तजौ वेग उभौ रिन थंभं ॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि
मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता ।

कवित्त ॥ रा जहव रिन भान । तमकि कर चंपि लुहट्टी ॥

बर रनथंभ उत्तरौ । बीर बस्सी ^५अहुट्टी ॥

बर कगद ^६कर फेरि । सुभि करियै बर राजन ॥

मतै बैठि कुंडली । धम्म छची जिन भाजन ॥

बुल्लइ न एन दुज्जन भिरन । तरन तार साधन मरन ॥

बर बीर जुइ चालुक्क रन । हक्कायौ दुज्जन भिरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥ रिन थंभह वर उप्परै । चढि गट्टौ करि साहि ॥

हंस मरत रा भान कौ । धसि उप्पर धर धाइ ॥

धसि उप्पर धर जाइ । सुजस जंपै सब कोई ॥

जोग मगग लभनह । षगग मगगह मत होई ॥

अलप आव संसार । सिद्ध साधकह अथंभह ॥

सब्व जोग सहकम्म । सब्व तीरथ रनथंभह ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो.-शिशुपालं ।

(२) मो.-बहुँ ।

(३) ए. क. को.-मुक्कले, मुक्कले ।

(४) ए. क. को.-उम्भं ।

(५) ए.-उहठी ।

(६) ए. क. को.-बर ।

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना ।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल । बीर पंचाइन कोष्यौ ।
 सह मह गज जेमि । तमसि धीरज सम लोष्यौ ॥
 रिनथंभह दिसि थंभ । दियौ बर बीर मिलानं ॥
 गय हय दल चतुरंग । सजे तिन बेर प्रमानं ॥
 बर बीर अग बस्सीठ चलि । राजहौ संमुह दिसा ॥
 परनाइ कुंअरि हंसावती । सु बर कोपि आयौ निसा ॥ छं० ॥ ८ ॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को
 भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास
 मदत के लिये ।

दूहा ॥ जस बेली रिनथंभ न्वप । फल पच्छै न्वप आइ ॥
 रा जहव सुरतान सौ । कहि बर जाइ सुधाइ ॥ छं० ॥ ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण
 और राज्य गया ।

कवित्त ॥ सौय रषि रावनह । लंक तोरन कुल पोयौ ॥
 कपट रषि दुरजोध । घग्ग पोहनि दल गोयौ ॥
 मंतहीन बर चंद । कियौ गुरवार सुहिस्त्रौ ॥
 क्रम्म रषि रघुराइ । अजै जान्यौ न पहिस्त्रौ ॥
 रनथंभ मंडि छंडी सरन । भिरन कहौ बर बीर सब ॥
 ससिपाल बीर बंसी बिलस । हम देखै आयौ सु अब ॥ छं० ॥ १० ॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं ।

जीवन बलह विनोद । अलह नब्बी घन मंगहि ॥
 जीवन बलह विनोद । आस आसन्न असुर गहि ॥

(१) ए.-रणी ।

(२) मो.-पोयौ ।

(३) ए. कं. कौ.-रसन ।

(४) मो.-विमल ।

जा जीवन सुंदर । सुगंध बर बंधव लोकै ॥
 जा जीवन काजें । कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
 जा जियन देव दानव मिलन । किलमन कलि आवन गवन ॥
 तिन भवन छंद छंडित गहर । तजित तुंग तन सो भवन ॥ छं० ॥ ११ ॥

भानुराय यद्धव का बसीठ की बात न मानना ।

दूहा ॥ रा जइव बर भान नैं । बहु मंग्यौ बर हट्ट ॥
 बाजी बार पयानरै । तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० ॥ १२ ॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना ।

इह सुनि बीर बसीठ उठि । भानह हल्यौ न हल्ल ॥
 तीस कोस सम्हौ मिल्यौ । बर पंचाइन ठल्ल ॥ छं० ॥ १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां
 आदि सरदारों का आना ।

कवित्त ॥ अग्निवान उजबक्क । धाड़ भाई परवानिय ॥
 ता पच्छैं साहाब । घान बंधे तुरकानिय ॥
 ता पच्छैं नूरी हुजाब । सेई संचारिय ॥
 केलीघान कुलाह । सब सेनी कुटवारिय ॥
 बानिक बीर दुल्लह सुजर । भाइ घान रन अंभ बर ॥
 ससिपाल बीर बंसी विलस । बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० ॥ १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना ।

दूहा ॥ पंचाइन बल पष्यरै । 'थह रनथंभह काज ॥
 कंक बंक बर कट्टनह । चढि चल्यौ रन राज ॥ छं० ॥ १५ ॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन ।

भुजंगी ॥ ससौपाल बंसी चढ्यौ कोपि रथ्य । मनो बंक चक्र धस्यौ आनि पथ्य ॥
 जलं जुबनं जूथ धावै दुरंगा । करै कूच उंचं उरजै तुरंगा ॥ छं० ॥ १६ ॥

कहै बत्त रत्ती मुषं रत्त आहौ । कहैं अश्व आठू रनथंभ ढाहौ ॥
ससौपाल बंसी चंदेरीय रायं । उद्यौ छत्र सीसं कबी देधि गाथं ॥
छं० ॥ १७ ॥

नगं पंति मुत्तौ सिरं हेम दंडी । ग्रहं अट्ट मानों ससौ मेच्छ मंडी ॥
फिरी पंति राई रिनथंभ घेयौ । मनो भावरी भान सुम्मेर फेयौ ॥
छं० ॥ १८ ॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना ।

दूहा ॥ घन घेयौ रिनथंभ पर । लिषि ढिल्ली परवान ॥
तब जहव रा भान ने । दिय कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना ।

कवित्त ॥ रा जहव बीराधि । बीर गुज्जह अनुसरयौ ॥
हयदल पयदल गज । अरोहि रिनथंभ यौं अरयौ ॥
धंधेरा धंधेल । चंद ससिपालह वंसिय ॥
अध लष दलहि हिलोर । जोर गरुवंतं गंसिय ॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी । घीची राव प्रसंग दुह ॥
प्रारंभ करै संभरि धनी । जौरै बंध पुमान सह ॥ छं० ॥ २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना ।

दूहा ॥ सुनि कग्गद चर चिंत कै । तिथि साते चहुआन ॥
समर सिंध रावर दिसा । गुर जन मुक्यौ कान्ह ॥ छं० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना ।

कवित्त ॥ बर पंचाइन सबर । सबर बंसी ससिपाल ॥
घेयौ तिन रनथंभ । सुबर जंघे बर काल ॥
मान बीर पुकार । धाड़ आई ढिल्लीवै ॥
अड्ड अड्ड पहु पंग । सथ्य अड्डौ बर है वै ॥

जोगिंदराव जग हृथ्य बर । महन रंभ उप्पर सबर ॥
 कालंक राइ कप्पन विरद । ^१तुम आओ रचि सेन बर ॥ छं० ॥ २२ ॥
 समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि
 हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे ।

दूहा ॥ चिचंगी चतुरंग सजि । बर रनथंभ सु काज ॥
 बर सहेट रावर समर । आवन बदि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३ ॥
 चलत कन्ह चहुआन बर । कहि चतुरंगी राज ॥
 तुम अगौ हम आइहैं । आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २४ ॥
 तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम
 से आगे जा पहुँचेंगे ।

पंच कोस बर सट्टि अग । चौतौरह रनथंभ ॥
 तुम अगौ हम आइहैं । महन रंभ आरंभ ॥ छं० ॥ २५ ॥
 कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले
 हैं और राजा भान पर बड़ी बिपत्ति है ।

कवित्त ॥ महन रंभ आरंभ । कन्ह चालत मन मंडिय ॥
 अट्ट दौह हम अग । राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥
 बर बंसी सतिपाल । गंज लगिय न्वप ^२भानं ॥
 धरति धवर ^३तह नाम । सेत मिसि देही दानं ॥
 अग्रहन ग्रहन रिनथंभ मति । इह सुमिच आयौ पढ़न ॥
 कालंक राइ कप्पन विरद । महन रंभ बढ्यौ बढन ॥ छं० ॥ २६ ॥
 समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है
 कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें ।

(१) मो.- तुम आओ सेना बरन ।

(२) ए. क. को. मान ।

(३) ए. क. को. नाह ।

सुनि कन्हा चहुआन । रीति आहुठु ग्रह कुल ॥
 सरन रषि कहुइन । मिलै जो कोटि देव बल ॥
 संग्रामं हरषै न । सुबर घची बर धायौ ॥
 रन रष्यै रजपूत । छत्र छल छांह नवायौ ॥
 द्रिग रत बल बंसै सुबर । बेद भ्रम बंध्यौ चवै ॥
 कालंक राइ कप्पन विरद । कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं॥२७॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना ।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरंग । हस्त मत्त बर तीन ॥
 मनि गन मुत्तिय माल दस । रष्ये कन्ह सु बीन ॥ छं॥ २८ ॥
 पूज कुलह चहुआन दय । वे सब मनि 'गनि साह ॥
 लच्छिय सब हथिय ग्रहन । दीना सब समाहि ॥ छं॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा ।

चले कन्ह बर संग नृप । समर सजगौ आउ ॥
 तेरसि च्यंबक बज्जिहै । धरकि बीर उमराउ ॥ छं॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन ।

कवित्त ॥ घरौ पंच बर सोम । दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
 दुष्ट दान करि मंच । सुगुर पंचमि बुध 'चारिय ॥
 अइ चार भय सूर । फेरि नव मौन न भग्ना ॥
 असुर सुगुर वक्रयौ । छंड बिय थानति अग्ना ॥
 चिचंग राइ रावर समर । महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
 दस कोस बीर मेलान दै । सुबर बीर चतुरंग 'सजि ॥छं॥३१॥

**यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी
 सेना की शोभा वर्णन ।**

पडरौ ॥ सजि चल्थौ समर रावर सु तथ्य । जानै कि सरित सागर समथ्य ॥

(१) ए. क. को.-बर साहि, बर साई ।

(२) ए. क. को.-वारिय ।

(३) ए. क. को.-राजि ।

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान । मानों समुद्र गिरि 'गजिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुभभौ न भान रज 'मभि सलीव । चक्रीय चक्रवे चलि सु कीव ॥
चतुरंग सेन चलिय सुरंग । बहु रुक्मि अंभ घन नभभ संग ॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि । जल होइ थलनि थल जलन रुभभ
उन्नयौ मेह हय गय प्रमान । मद 'चलहि गंध गज शिर समान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि । वर वरन बीच सोहत जाहि ॥
पाइन पयाल द्रगपाल हलि । चतुरंग सेन चिचंग चलि ॥
छं० ॥ ३५ ॥

घन जिम निसान बज्जे विसाल । जोगिंद मत्त जग हथ्य भाल ॥
पावस समूह रावर नरिंद । भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पपीह चीह । बोलंत सह कवि मधुर जीह ।
वरषहति दान गज 'मह मान । फरहरहि धज्ज बगपंति मान ॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सह किंगुर भँकार । सुभभहि भसह बदि अवन यार ॥
पावस समूह करि समर चलि । रिनथंभ दिसा मेलान मलि ॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहितरणथंभ गढ़ के वाएं ओर पृथ्वीराज
और दहिने ओर से समर सिंह जी का आना ।

कवित्त ॥ वाम कोद प्रथिराज । छंडि रनथंभ सँपत्तौ ॥
वर दच्छिन समरंग । बीर जोगिंद प्रपत्तौ ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि । सुकवि ओपम तिन पाई ॥

(१) ए. कृ. को.-गज्जि ।

(२) मो.-मधि ।

(३) मो.-लीह ।

(४) मो.-मत्त ।

कुंभ अंब डोलंत । हथ्य बरनै रस माई ॥

चहुआन सेन चिचंगपति । चावहिसि बर बिड्डुरिय ॥

बर ढोह छंडि चंदेर न्वप । जुग्गिनि ह्वै सम्हौ भिरिय ॥ छं० ॥३६॥

दूहा ॥ उत चंपे चहुआन ने । इत चंपे चिचंग ॥

मूंदि सास अरि सम दरौ । जनु चंघ्यौ सु म्दंग ॥ छं० ॥ ४० ॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था
और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी ।

कवित्त ॥ प्राची दिसि चहुआन । चढ्यौ पच्छिम चतुरंगी ॥

दुह्रं बीच रिनथंभ । बीच अरि फौज सु रंगी ॥

दुह्रं सेन समकंत । नग मत्ता गज अग्यौ ॥

मनु राका रवि उदै । अस्त होते रथभग्यौ ॥

ससिपाल बीर बंसी विमल । दुहुन बीच मन मेर हुअ ॥

षह मिलै षेह षगह ह्यौ । चवै चंद रवि दंद दुअ ॥ छं० ॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से

उपमा वर्णन ।

अनल पंष अंकुयौ । जुझ पंचाइन मंड्यौ ॥

इक सपंष षग वीय । पेट रनथंभ सु छंड्यौ ॥

पीठि पंड पावार । सु वर ह्वै नष पंष ॥

एक मुष्य वन बीर । धीर उभभौ विय मुष्य ॥

निम्मान बंभ बर पुंछ कवि । पुच्छ पाइ साधन समर ॥

दुह लोह कट्टि परियार तें । समर मोह भूल्यौ अमर ॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी ॥ मिले आइ धायं सु आहुट्टु राई । लगे बीर बध्यै लगे लोह धाई ॥

कढ़ी बंक अस्सी ससी बीय गत्ती । बरै ज्वाल सूरं मनो ह्वि तत्ती ॥

छं० ॥ ४३ ॥

(१) ए. कू. को.-चंपी ।

(२) ए.-चतुरंग ।

(३) ए. कू. को.-चमकंत ।

(४) ए. को.-नग, नगा ।

(५) ए. कू. को.-विसल । (६) ए. कू. को.-वाई ।

करै हक सौसं महा मार मारं । धरं कित्ति सीसं तुरं पार पारं ॥
बजै सख बीसं 'तुरित्त' बघानं । तिनं सह अगै दुरै वै निसानं ॥
छं० ॥ ४४ ॥

धकै आइ खरं बिधं कन्ह हथ्यं । थकी रंभ उतकंठ मनो पंग तथ्यं ॥
लगी धार धारं धरकै विवानं । गहै हथ्य छुटै चलै देवथानं ॥
छं० ॥ ४५ ॥

कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्यं । मनो ज्यो पुलंदी कढै कंद हथ्यं ॥
धनं धक हथ्यं रसं रंक मत्तं । मनो टंपती संजुधं की सुरत्तं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

परै ढाल ढीचाल गज ढाहि खरं । महा दिष्यै बीर रूपं करूरं ॥
कटै कंध खरं उडै छिंछ भारी । झरै फूल तथ्यं सिरं डुंड भारी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

जगी जोगिनी जुड देषै 'जरूरं' । उडै रैन रावत्त कच्छे करूरं ॥
धराधाव ओनी पलं भद जानं । गजे खर जुड दिसानं दिसानं ॥
छं० ॥ ४८ ॥

तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं । मनो विज्जमाला चमकंत चंगं ॥
धनुषं कमानं धरे मेघ मद्दं । रवै दंड दंडं नफेरी सबहं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
बहै षग बानं मनो बग पानं । रचै चित्त चहुआन घेतं किसानं ॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं । ढरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं ॥
छं० ॥ ५० ॥

'इलावार पुरं सरित्तान ओनं । तिरै रुंड सुंडं मछं जानि तीनं ॥
मुषं मेद पाटं सु घाटं पुमानं । भिरै भौर भारी सु ग्रब उमानं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

गहै नाग मुषी अरी जा उठायौ । मनो चंद संदेस पच्छै पठायौ ॥
ग्रहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं । रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं ॥ छं० ॥ ५२ ॥
पच्यौ षग पीची भरं चिचकोटं । जलं पष्य मच्छी धरं जानि लोटं ॥
तहां गत्ति मत्तं न सुषं न दुषं । थकी जंमसालं लरे खर पिष्यं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

महादेव जुद्धं दिष्टौ मेस यानं । धनी चिचकोटं ^१धसी सेन जानं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खां के बीच में रावल
समर सिंह जी का घिर जाना ।

कवित्त ॥ उत बंसी ससिपाल । इतै रुस्तम दुंद बल ॥
विचै समर रावर । नरिंद बीरन गाहरमल ॥
उतै तेग उभारि । इतै सिंगनि धरि बानं ॥
छंडि निधक अरियान । उररि पारी परि तानं ॥
रन तुंग अवर चिंते रिपुन । हवि मुष रुष मुक्क नहीँ ॥
भर सुभर दार रष्यन सु वर । समर समर उभौ पहीँ ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना ।

सम लरत्त वर समल । दिष्टि चहुआन कियौ बल ॥
बांम मुष्य अरोहि । नीर असि झल्ल मुषह भल ॥
सौ सामंत छै स्हर । सथ्य प्रथुराज सु धायौ ॥
सार कोट अरि जोट । षग षल षंभ हलायौ ॥
जै जैत देत जै करहि । देव बीर आनंद बढ्यौ ॥
तारुन तुंग तन तेज वर । असि पहार धर भर चढ्यौ ॥छं०॥५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और
पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना ।

दूहा ॥ रा जदव रिनथंभ तजि । मिलिय राव प्रति मान ॥
समरसिंह रावर सु प्रति । चरन चंपि चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का
मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ।

* दिन धवलो धवली दिसा । धवल कंध भारथ्य ॥

समरसिंघ रावर मिल्यौ । चाहुआन समरथ्य ॥ छं० ॥ ५८ ॥

मझि फौज प्रथिराज बल । रा जइव दिसि वाम ॥

समरसिंघ दडिछन दिसा । चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के
बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का
दृश्य वर्णन ।

छंद चिभंगौ ॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बौर प्रसंसी, बर बौरं ।

सेमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥

तुरसी रस मंजरि, पति समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, ऋग रारी ॥

बर टोप सु कंतिय, सूर सुभंतिय, बेहर पंतिय, जम रारी ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोरष्यन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, विरुभाई ॥

परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं, सरसाई ॥

१ वीरंग विचारै, उक्क हकारै, मंचं मारै, उभारै ।

छं० ॥ ६१ ॥

अफफार कि फारं, असि बर तारं, बंसेति मारं, सिर सूरं ॥

बर टोप समेतं, सिप्पर तेतं, असि आलेतं, हंसि हूरं ।

हारौ रउ चिन्हं, हथ्य न लिन्हं, भयउ सभन्नं, ब्रह्मचारं ॥

छं० ॥ ६२ ॥

बर दरसि कपालं, विय लिय मालं, हसि बर बालं किल कालं ।

३ नचि नारद पूरं, वजि रन तूरं, बरि बरि सूरं, धरि मालं ॥

* “मो” प्रति में छन्द १८ प्रथम और १९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिल
सनेला ठीक जँचता है ।

(१) ए.-समनेजरि ।

१ यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है ।

(२) ए. रु को.-हारी चिर चिन्ह ।

३ यह पंक्ति ए. को रु तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप
गोण मालूम होता है ।

कर व्रन्न सु तुटुं, धर धर लुटुं, ओपम घटुं, कविराजं ।

ओपम विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं ॥

छं० ॥ ६३ ॥

चष छिंछत ओनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई ।

कवि ओपम तासं, सूर विलासं, माधव मासं, फिरि आई ॥ छं० ॥ ६४ ॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना ।

कवित्त ॥ दस क्रम्मन अरि ठेल । मुरिय पंचाइन सेनं ॥

बीर छक्क उत्तरी । मुत्ति भिरि रन रत नैनं ॥

सुरस पियौ प्रथिराज । प्रगटि अंधिन जल भलकिय ॥

पौ अधरा रस पौन । प्रातसौ कौ मुष जकिय ॥

चहुआन सु बर सोरह परिग । समर सिंघ तेरह चिघट ॥

ससिपाल बीर बंसी सुबर । सहस पंच लुथ्यय सुभट ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके

आक्रमण करना ।

दूहा ॥ निग्रह नर बंछत न्वपति । अहि गवन्न सुष वान ॥

पंच अनी करि घेत चढ़ि । घेत अरक चहुआन ॥ छं० ॥ ६६ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका

परस्पर वार्तालाप ।

जिन गुन प्रगटत पिंड । सोई सिंघार सूर बल ॥

मत्त कुलस तन जान । लभभ कित्तीति सुभट कल ॥

जिहि मरन्न मन सूर । मरन जेही मन उत्तरि ॥

पंच पंच पथ गोअ । फिर न एकठे नर नर ॥

(१) ए. क. को.-निग्रह नवर ।

(३) ए. क. को.-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है । पाठ भेद कुछ भी नहीं है ।

(४) ए. क. को.-कुसल ।

घरियार रूपि सु कुठार घट । तंत मुक्कि लग्गी नदिय ॥
 सिंचीय कित्ति तर अमिय में । धुअ व्यापं लग्गंन दिय ॥ छं० ॥ ६७ ॥
 हंसावती की घरियार से और दोनों सेनाओं की छाया
 से उपमा वर्णन ।

दूहा ॥ बाल कुँअर घरियार घरि । विय तरवर 'बर छीह ॥
 जिम जिम लग्गे तिम अरिय । ढाहन ढाहै दीह ॥ छं० ॥ ६८ ॥
 सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन ।

कुंडलिया ॥ पंच चिराकन मभभ न्वप । सो सोभित जुगिंद ॥
 मुनि ग्रह सत्तह बीस 'यह । लिय पारस मंडि चंद ॥
 लिय पारस मंडि चंद । सुभित ससिपाल सु बंसिय ॥
 अण्ण सामि बर जानि । कित्ति जंपै रन धंसिय ॥
 मुनिय बेन बुल्लियै । घोरि ढंकी अरि रंचै ॥
 कपट द्रोह करि इक्क । पथ्य टारै 'पच पंचै ॥ छं० ॥ ६९ ॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को
 चक्रव्यूहाकार रचना ।

दूहा ॥ इम निसि बीर कदिय समर । काल फंद अरि कट्टि ॥
 होत प्रात चिचंग 'पहु । चकाव्यूह रचि ठट्टि ॥ छं० ॥ ७० ॥
 समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार
 और क्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर । नरिंद कुंडल अरि घेरिय ॥
 एक एक असवार । बीच बिच पाइक फेरिय ॥
 मद सरक्क 'तिन अग । बीच सिल्लार सु भीरह ॥

(१) मो.-बर वीह ।

(२) ए. क. को.-हथ ।

(३) ए. क. को.-पंच पंच ।

(४) र. क. को.-पंग ।

(५) ए.-विन ।

गोरंधार विहार । सोर छुट्टै कर तीरह ॥

रन उदै उदै वर अरुन हुअ । दुह लोह कट्टी विभर ॥

जल उकति लोह हिलोरही । कमल हंस नंचै 'सु सर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ करं लोह कट्टै, रसं रोस बट्टै । अंगं अंग गट्टै, कथं सूर कट्टै ॥
छं० ॥ ७२ ॥

असी अंच उट्टै, थटं थट्ट गट्टै । हकं सीस रट्टै, षगं सूर कट्टै ॥
छं० ॥ ७३ ॥

गिधं लोल रट्टै, द्रुनं नंच ठट्टै । युती रंभ पट्टै, अंतं तुट्ट जुट्टै ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सिरं अंग बट्टै, लोहं पच्छ कट्टै । करं किति मट्टै, वकं बीन नट्टै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

मुषं चंद पट्टै, । सिंघ सभ रंनौ, लुथिं लुथ घनौ ॥
छं० ॥ ७६ ॥

संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बंध्य जैसे ।, ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह

बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का

आक्रमण करना ।

दूहा ॥ ससरसिंघ दिष्यत सुवर । उप्पारे रन भान ॥

दइ समान दुज्जन दवन । तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना ।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चँदेरी सुभाई । षगं घोलि धाई, अरी सीस घाई ॥
छं० ॥ ७९ ॥

भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई । विरुभभाई धाड, असी बंक झाई ॥
छं० ॥ ८० ॥

कि रच्चं उड़ाई, ससी व्यंव पाई । सुतं 'राति छाई, कबी कित्ति गाई ।

छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई । चवंसट्टि ताई, ॥छं०॥८२॥

लही मुगित रासी, अबी अब्बि नासी । उपं राज जीतं, सु भारथ्य बीत

छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध
और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का
मारा जाना ।

कवित्त ॥ बर बंसी ससिपाल । समर रावर रन 'जुड़े ॥

अमर 'बंध चिचंग । बीर पंचाइन बड़े ॥

सबै सथ्य सामंत । घेत ढोछ्यौ विरुभाइय ॥

गुरिन गयौ अरि ग्रहन । लड्ड नन लुथ्यि न पाइय ॥

प्रथिराज बीर जोगिंद न्वप । दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥

बंधनह वत्त बंधन दिवन । दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना । हुसैन खां
और कन्हराय का घायल होना ।

लुट्टि लच्छि चिचंग । राज रिनथंभ 'उबारे ॥

घेत ढुंढि चहुआन । कन्ह चहुआन उपारे ॥

उमै घाड़ बर अस्तु । घाड़ आहुठु अठोभिय ॥

पंच घाड़ हुस्सेन । घान चौंडोल घालि लिय ॥

प्रथिराज बीर बीरंग बलि । निसि सपनंतर अड्ड पडि ॥

'यागति जागि देघै न्वपति । तबह कन्ह जलथान लहि ॥छं०॥८५॥

(१) ए. कृ. को.-रारि ।

(२) मो.-सडे ।

(३) ए. कृ. को.-बांधे ।

(४) मो.-उचारे ।

(५) ए. कृ. को.-मत्ति ।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ
प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना ।

हंस 'सुगति माननी । चंद जामिनि प्रति घट्टी ॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग 'हय नयन प्रगट्टी ॥
हंस कला अवतरी । कुमुद बर फुल्लि समर्थै ॥
एक चिंत सोइ बाल । मौत संकर अस रथै ॥
तेहि बाल संग में पूहुय लिय । बरन बीर संगति जुवह ॥
जाग्रत देवि बोलि न कछू । नवह देव नन मान वह ॥छं॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी
भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका
स्वरूप रंग कह डालूं ।

दूहा ॥ * सो सुपनंतर देषि वह । सो तुअ बर बर नारि ॥
बे बर गज्जि नरिंद तूं । हंसि हंसि पुच्छि कुंआरि ॥ छं॥ ८७ ॥
एन बयन रुपह रवन । इन गुन इन उनमान ॥
धीरत्तन पूजंत बर । सुनहु तौ कहूं प्रमान ॥ छं॥ ८८ ॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयःसन्धि
अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन ।

हमूफाल ॥ सुनि सुबर बरनी रूप । तिहि चढ़न बै नप भूप ॥
दिन धरत सैसव रह । बालत्त तज्जन देह ॥ छं॥ ८९ ॥
वय काम दिन पछितान । आवंन दिन सुभ जानि ॥
इन काज असुभ प्रमान । ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान ॥छं॥९०॥

(१) मो.-गति ।

(२) मो.-हय

* इस छन्द मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है ।

धन धनक वेदी काम । ^१द्विग काल गौरभ वाम ॥
 जंजीर भौंह चढ़ाइ । देषंत काम बजाइ ॥ छं० ॥ ६१ ॥
 बरछिन्न उन्नित बाल । बर काम चित चढि साल ॥
 चित हरुअ गरुअ सुहंत । गुर गरु होत पढ़ंत ॥ छं० ॥ ६२ ॥
 जिम जिम सु विघा आइ । तुछ भरत तुछ सरसाइ ॥
 मति लघू अलघु प्रमान । ^२अंब निबंद समान ॥ छं० ॥ ६३ ॥
 बर मत्त पिछली जीअ । तहां रसन ^३हीनति पीय ॥
 गति हंस चढ़त सुभाइ । सुत बंठि ^४जसु अभिसाइ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
 सैसव सु सुतन सुषाइ । जोवन रस सरसाइ ॥
 तिसहुंत गजगति जानि । ॥ छं० ॥ ६५ ॥
 जसु पन्न चित क्रम मान । जिम संधि प्रथम गियान ॥
 प्राचीय मुष रंग स्वर । प्रगथौ सु काम कर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
 बर बाल माहि सरूप । घट धरक कपट अनूप ॥
 वय बाल ^५जोवत काज । कपि कपट उत्तर लाज ॥ छं० ॥ ६७ ॥
 मधु मधुर ^६अमृत जानि । बेजियन सीषत बानि ॥
 मति मत्ति बरनी षाइ । तहां बाल बेस ^७छिकाइ ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय
 भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ।

कवित्त ॥ कहि सुपनंतर ^८उपति । सु वह ओतान बढ़ाइय ॥
 तव लागि ^९भान नरिंद । बीर दुजराज पठाइय ॥
^{१०}वर दुजराज पठाय । रतन उर कीनौ अप्पौ ॥

(१) ए. क. को.-दृग का लंगौ सुम वाम ।

(२) मो.-अंब निन्द समान ।

(३) मो.-हीनित ।

(४) मो.-अभि जनु माइ ।

(५) ए. क. को.-जोवन ।

(६) ए. क. को.-उतम ।

(७) मो.-लुकाय ।

(८) मो.-उपति ।

(९) ए. क. को.-मान ।

(१०) ए. क. को.-“ हय हथिय मनि मत्त रतन उर किन्हो रण्णी ” ।

